श्री कल्कि भजन संग्रह

प्रकाशक:

पंडित श्री मनोकांत जी तिवारी

कल्कि कीर्तन मंडल

प्रथम संस्करण १००० सन् २०१४ मूल्यः ५१ रुपये

कल्कि भगवान की भक्ति को पोषित करने वाली गुरु जी की वाणी

- गुरुजी की पुस्तकों का नित्य पाठ (भले ही पाँच पृष्ठ)।
- भगवान से शुद्ध बुद्धि,शुद्ध भक्ति माँगनी चाहिए।
- कितना ही बड़ा तेजाधारी हो बिना भजन के मर जाएगा।
- झूठा खाना और खिलाना दोनों बातें भक्ति में बाधा डालती हैं।
- मजाक में कलियुग का वास होता है।
- सहन करने से तपस्या चौगुनी हो जाती है।
- कलियुग में भगवान श्री कल्कि के स्वप्न में दर्शन का फल साक्षात दर्शनों के समान हैं।
- श्री कल्कि भगवान महाराज की पुकार,भक्ति से ही इस ब्रह्मांड के कण कण का उद्धार होगा। महासत्युग होने पर सच्चाई आदि सभी सद्गुणों को सम्मान मिलेगा, पूजा होगी। दुर्गुणों का नामो निशान मिट जाएगा।
- भगवान के आगे हाथ जोड़ कर बैठना चाहिए, गुरूजी रामकृष्ण परमहंस,पार्वती जी, लक्ष्मी जी व हनुमान जी आदि की तरह।
- जब रामचंद्र जी समुद्र लंघन के लिए पुल बनवा रहे थे तब एक गिलहरी अपनी पूँछ को भिगो कर उस पर रेत भर लेती और समुद्र में रेत बोरकर फिर में लोटती, अपनी ताकत से अधिक परिश्रम करता देख श्रीराम जी अत्यंत प्रसन्न हुए और उसके शरीर पे अपना आशीर्वादात्मक हाथ फेर दिया। कहते हैं उनकी उगुलियों के निशान गिलहरी जाति पर तभी से अंकित हो गए हैं। भगवान ने यह नहीं देखा कि समुद्र पे पुल बनाने के कार्य में कितने किलो रेत गिलहरी ने डाला, कितना कार्य संपन्न किया, कितना पुल बाँधने में सहयोग किया। वानरों जो कि बड़े बड़े पर्वत समुद्र में डाल रहे थे के अनुपात में ना के बराबर सहयोग दिया फिर भी गिलहरी आशीर्वाद अनुग्रह की पात्र बनी क्योंकि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य से अधिक निष्कपट भाव से बाँध बनाने के कार्य में लगी हुई थी। भगवान की नजर एकाएक या अचानक ही नहीं पड़ गई थी। वह कण कण व प्रत्येक आत्मा के कार्यों का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं। इसलिए प्रत्येक कल्कि भक्त को अपनी शक्ति और सामर्थ्य से अधिक इस 28 वें कलियुग को नष्ट कर 29 वें सत्युग को इस पृथ्वी पर लाने के लिए श्री कल्कि भगवान की लीला में सहयोग के लिए भगवान श्री कल्कि के चरण कमलों में निर्मल मन से हार्दिक प्रार्थना करनी चाहिए जिससे गिलहरी की भांति आशीर्वाद मिल सके।

त्रेता युग की रामायण कहलाती राम की लीला
द्वापर युग में कान्हा ने खेली माखन लीला
कलियुग में अब कल्कि जी की देखो अनुभव लीला

कौन कहता है घड़ा पाप का भरपूर नही, कल्कि जी आए है संघार के दिन दूर नहीं।
भक्त प्यारे है उन्हें, धर्म प्यारा है उन्हे भक्तों ने ही तो जमीं पे उतारा है उन्हें देख सकते
वो कभी भक्तों को मजबूर नहीं

अभी कलियुग चल रहा है जिसकी आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष है। कलि के 5090 वर्ष बीत चुके है और उसका अभी प्रथम चरण चल रहा है। कलियुग के चौथे चरण में भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होगा जो कलियुग का नाश कर सत्युग की स्थापना करेगा। नारायण जगत के पालक है, धर्म के संरक्षक है। पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करना और भक्तों की रक्षा करना उनका प्रथम दायित्व है। अवतार किसी समय सीमा में बंधा नही होता। उनके प्राकट्य के अपने माप दण्ड होते है। भगवान ने पृथ्वी माँ को वचन दिया है 'हे पृथ्वी जब जब दुष्ट असुर तुझ पर उत्पन्न होकर महापाप करेंगे, तब तब मैं अवतार धारण कर तेरा भार एक दम उतार दूँगा' शास्त्रों में कलियुग के चौथे चरण के जो लक्षण बताए गए हैं आज के दिन यदि हम चारो तरफ नजर डालें तो हम देखेंगे कि वो सब इस प्रथम चरण में ही पूरे होने के करीब आ गए हैं। हर इन्सान रोग ग्रस्त है, धन के लिये पुत्र पिता का, भाई भाई का प्राण ले रहा है, स्त्रियों में शालीनता और लज्जा का लोप होता जा रहा है।

माँ वैष्णवी भगवती एवं भगवान श्री कल्कि

नारायण का अद्भुत युगपरिवर्तक सम्बन्ध

भगवान श्री कल्कि का अवतार और भगवती वैष्णवी का चमत्कार कलियुग के दोषों के विनाश के लिए शास्त्रों में वर्णित है। समस्त पूर्व अवतारों के समय किए गये प्रण –प्रतिज्ञाओं और विभिन्न भक्तों–साधकों को दिए गये आश्वासन–वरदान सभी की सम्पूर्ण सम्पूर्ति इसी अवतार के द्वारा होनी हैं। भगवान नारायण श्री कल्कि एवं वैष्णवी भगवती के संबंध का प्रसंग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है ———

समुद्र मंथन के समय भगवती लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ है। उनसे पूर्व रत्नाकरनंदिनी प्रकट हुई। वे भगवान विष्णु के रूप – गुणों का स्मरण करती रही परन्तु इसी मध्य लक्ष्मी जी ने भगवान नारायण का वरण कर लिया। भगवान ने रत्नाकरनंदिनी के मनोभाव के अनुसार उन्हें वरदान दिया कि 'मैं यथासमय तुम्हारा वरण करूंगा। त्रेतायुग में भगवान विष्णु जब श्रीराम रूप में आए तब रत्नाकरनंदिनी को तपस्या करते देख (जो कि भगवान को पति रूप में पाना चाहती थी) उनसे भेंट हुई और कहा कि इस युग में मर्यादा पुरूषोतम राम हूँ। इस युग में भी तुमसे शादी नहीं कर सकता। रत्नाकरनंदिनी के जिद करने पर भगवान ने कहा–ठीक हैं मैं तुमसे फिर मिलूंगा यदि तुम मुझे पहचान

जाओगी तो मैं तुम्हें वरण कर लूंगा। भगवान की माया से वो पहचान नही पाई। वन से लौटने पर श्री राम को जब वैष्णवी ने भगवान राम से अपने को वंचित पाया तो वह तड़प उठी। तब श्री राम ने उन्हें मीठे शब्दों में कहा, हे वैष्णवी निराश न हो समय आने पर तुम्हारी तपस्या के बल पर (कलियुग जो इस समय अब चल रहा है) में मैं कल्कि अवतार लेकरं तुम्हें अपनी संहारिणी शक्ति के रूप में स्वीकार करूंगा। माता वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड पब्लीकेशन पेज 17 पर लिखा हैं। तब से मॉ वैष्णवी त्रिकूर्ट पर्वत पर भगवान श्री कल्कि के लिए तप कर रही है।

अब श्री कल्कि के प्रकट होने का समय निकट आ गया है हमारा आपसे अनुरोध है कि मॉ वैष्णों जिनके लिए तप कर रही हैं उनके साथ युगावतार श्री कल्कि को नमस्कार पूजा पुकार करें और कम से कम 21 बार नीचे दिए गए शीघ्र फलदाई महामन्त्र का जाप करके देखें ——

जय कल्कि जय जगत्पते। पद्मापति जय रमापते॥

भगवान के ऊपर पड़े तिनके को भी हटाने पर
भगवान इतनी सी बात का भी अहसान मानते हैं।
या दूसरे शब्दों में भगवान के वस्त्रों पर पड़ा
यदि एक तिनका भी भक्त उठा कर इसलिए अलग कर रहा हैं
कि प्रभु की शोभा मे कमी न रह जाए तो इस बात से
भगवान भक्त के अहसानमंद बन जाते हैं।

कोई पैसे के लिए पागल है, कोई यश कीर्ति के लिए पागल है, कोई कामिनी के लिए पागल है, किंतु वह प्राणी धन्य है जो भगवान के लिए पागल है।

1 सनत्कुमार
2 बाराह
3 नारद
4 नर-नारायण
5 कपिलदेव
6 दत्तात्रेय
7 यज्ञपुरुष
8 ऋषभदेव
9 राजा पृथु
10 मत्स्य
11 कूर्म
12 धन्वन्तरि

13 मोहिनी
14 नृसिंह
15 वामन
16 परशुराम
17 व्यास
18 हंस
19 श्रीराम
20 श्रीकृष्ण
21 हयग्रीव
22 हरि
23 बुद्ध
24 कल्कि

- जो भजन हम कर रहे हैं वो भजन का फल हमें पुनः भजन करने के लिए प्रेरित करता हैं। इस प्रकार भजन से हमारी आध्यात्मिक संस्कार एवं आत्मिक भाक्ति की नींव पाताल से भी नीचे तक गहरी और मजबूत बन जाती है।
- कल्कि अवतार का प्रमाण ढूँढ़ने के बजाय अगर राम कृष्ण के नाम की तरह कल्कि नाम की रट लगा दें तो शीघ्र ही शंकाएँ दूर होंगी। जीव का संदेह दूर करना तो भगवान के हाथ में हैं जिसने महाभारत के मैदान में अर्जुन का संदेह मिटाया, पर्वत की गुफा में मुचुकंद का संदेह दूर किया। भगवान कल्कि को जो जानता जाएगा वो मानता जाएगा।
- कल्कि भगवान में मन लगाए रखना। बड़े लोग कम से कम 5 माला रोज व बच्चे कम से कम तीन माला जरूर करें, ऐसा भगवान ने अनुभव में बताया है।
- यदि कल्कि भगवान अपार करुणामय न होते तो वह अनुभव दे देकर भक्ति की गंगा मृत्यु लोक में भक्तों के उद्धार के लिए न बहाते।
- भगवान श्री कल्कि का महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते। अति शीघ्र फलदायी, कष्ट निवारक व सुख संपत्ति दायक है।

महामंत्र

जय कल्कि जय जगत्पते। पद्मापति जय रमा पते।।

श्री कल्कि बीज मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं कं कल्कायै नमः सकल जन्मान्तरार्जित पापं दूरि कुरु कुरु कं आं क्ली ह्रीं ऐं ॐ

हवन महामंत्र

ॐ नमः श्री कल्कि भगवते म्लेच्छ दल हन्त्रे फट् स्वाहा

श्री

श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता 1
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो 11
श्री कल्कि नाम का प्रताप 36
श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ 49
श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो 77
श्री कल्कि नाम मन भाया हैं 89
श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन 91
श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन 100
श्री दुर्गा स्तुतिः 115
श्री कल्कि सम्भल वाले प्यारे आ 200

अ,आ,

आवेंगे सही प्रगटेंगे सही 17
अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके 31
आ गए आ गए आ गए 44
आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि 48
अब तुम से लगी है आस 56
आओ कल्कि तलवार ताने 61
आये नहीं अब तक हुए 67
असहाय हैं क्यों आज 70
अपने भक्तों से हरि आज मिले 86
आओ भक्तों महिमा गायें 88
अरे ओ मूढ़ बन्दे देख 110
आते हैं यहां और चले जाते हैं सब लोग 136
आदि में है हरि अन्त में हैं 149
आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव माधव 150
आओ पद्मापति कल्कि सब पृथ्वी 166
ओ मीत प्रभु के सुनकर जा तू टेर 176
आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे 180
आँखें हमारी आँसू बहाएं 182

उ

उठो भारत जगाया जा रहा है 76
उसकी तो जिन्दगी है किसी काम की नहीं 129
एक राम है अपना सुन्दर 103

क

कल्कि के रूप में निमग्न 13
कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है 23
कल्कि मन में जो निवास करें. 28
कलियुगिया तौक कटा करके 42
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई. 45
क्या दीन दुखी भक्तों को. 65
कल्कि स्वामी आओ 68
करो हमारा ख्याल. 69
कौन कहता है घड़ा पाप का 74
कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के 81
कलियुग में जब कि कल्कि बने 87
कल्कि कल्कि कहते जाना 97
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं 120
कल्कि हमारे सामने तुम आओगे जरूर 121
कल्कि भगवान का दर्शन उसे 138
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये 142
क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए 146
कह देना जा के बात ये. 148
कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये 153
कल्कि आ आकर मिटाओ दुःख सब 161
कल्कि प्रभु ले खड्ग वेग आओ. 164
कल्कि नाम शरण्य सुखप्रद कीर्तनीय 171
कल्कि नाम कसौटी पर जो लोग खरे उतरे 177
कर मन सुमरन साँझ सकारे 188
कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत 192

कल्कि जी जल्दी आओ दरबार तुम लगाओ 201
कल्कि जी की सेना चली. 204
कल्कि भक्तों संभल जाओ 206

ख

खड्ग मुरली बनी श्री कल्कि बने 82
खड्ग उठा कर हाथ में 85
खिला फूल उपवन में टूटा 114
खड़े दुर्दशा देखते ही रहोगे 169

ग

गुरु बालमुकुन्द गदाधारी (गुरु वन्दना) 2
गुरु गणेश गौरी गिरजापति 3
गोपाल तुम्हारी गउओं का 12
गउअन गरीबन किसानन की विपता मिटें 32
गाये जा निश दिन गुन गिरधर के 93
गोकुल की गलियों में ढूंढे 112
गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए 130
गायेजा गायेजा कल्कि नाम प्यारा 170

छ ,ज

छुपे हो कहाँ 178
जय हो भगवान कल्कि जी जय हो 4
जय हो भय के भय कल्कि 6
जय बोल रहे–जय बोल रहे 24
जनम कल्कि के हेत भयो 38
जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो 40
जब दुनिया पाप कर पृथ्वी 75
जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए 83
जो सुमरनी संभाल कर बैठे 90
जैसी करनी वैसी भरनी 94
जाग बन्दे होश में आ 109
जहाँ जहाँ गंगा बहती है 117

जिसकी जिभ्या पे नाम नहीं राम का 127
जीभ से पद्मापति का नाम लो 128
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है 143
जीवन के आधार प्रभु हमारे प्रभु हमारे 160
जो हरि सुमरन करता है 162
ज्योति जगाओ मन की टेर 165
जब किसी भी काम को घर से निकलना 194
जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान 197

ड

डोल उठी पापों से धरती 78

त

तेरा जीवन बिरथा बीत गया 102
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे 108
तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि 123
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया 125
तेरी हर घड़ी भजन के बिना बीत 140
तेरा जीवन है अनमोल मुख 151

थ

था अजामिल एक पापी 57

द

दानव दल के आसन डोले 16
देखा-देखा इस कल्कि नाम (विशेषता) 26
देखा-देखा इस कल्कि नाम 27
दो मुझे वरदान माँ 50
दुनियां से हटा ले मन अपना 104
दृष्टि के सामने है अंधेरा 118
दर्शन दो कृष्ण केशव हरि 119
दुनियां में आके आदमी शैतान 133
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल 152

दिन है दो चार भजन के 157
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों 159
दुखों भरी पुकार है 179
देखे कब होता है पूरा वादा मुरली 186
दुनियां को न दुनियां के नज़ारों को देख तू 195

ध

धर्म कलियुग में रसातल को गया 126

न

निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको 10
न ठुकराओ शरण में ही 46
नक्शा बदल देने को जमीं 80
न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो 92
निराकार ईश्वर को साकार देखा 168
नन्द जी के छैया 181
नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा 196
निष्कलंक बनि आजा प्रभु 199

प

प्रह्लाद की विपद निहारी 7
प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई 25
प्रगटो-प्रगटो प्रगटो-प्रगटो 43
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ 59
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा 60
पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी 84
प्रथम पूज्य है सुरगणों में गजानन 116
पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ 122
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की 124
पापी प्राणी मौजें मारें 134
प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के 137
पद्मापति की याद में जो रो नहीं सकता 144
प्रभु शबरी की सुध लेने अवध 147

प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी 167

फ

फिर फिर आये जनम नित पाये 99

ब,व

बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है 14
बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता 18
बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई 33
बब्रावाहन टेसू आए 37
बेसहारों के सहारे हो कहाँ 59
बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ 63
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल 113
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया 141
बिना कल्कि कल्कि कहे सुख नहीं 183
विरही कह दो चाहे आनंदी 41
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे 47
विनती सुनिए नाथ हमारी 191

भ

भयो कारागार उजागर 8
भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी 15
भई प्रकट हुए कल्कि भगवान 34
भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार 35
भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार 55
भूमि का उतारो भार नाथ 72
भगवान तुम्हारी दुनिया में 73
भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा 96
भज मन श्री कल्कि नारायण 105
भक्त की भगवान रखते लाज हैं 139
भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर 184
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा 185
भारत में श्री भगवान कल्कि आएंगे 190

भगवान कल्कि आना कब तक मैं यूँ बुलाऊँ..... 198

म

मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि नाम..... 21
म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन..... 29
मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से 30
मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई 39
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए..... 52
मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु 54
मन भजन में रहो घर या वन में रहो 101
मतवाले हरि गुन गा ले 106
मन कल्कि कल्कि गाया कर..... 107
मस्त होकर जिन्दगी भर..... 111
मानुष देह तूने पाई हरि गुन गा ले 132
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे 154
मन कल्कि कल्कि पुकारो 189
मेरी डगमग डोले नैया..... 205

य

यम नगर के पंथी कल्कि नाम बिसारें..... 19

र

राह काँटों से भरी..... 58
रहो दुनियाँ में न दुनियाँ की 135
राम दशरथ के भवन में आ गए..... 145
रे मन मेरे सांझ सवेरे क्यों न हरि गुन गाए 174

ल

लीलाधारी शक्ति निधान 9
लीला अवतार की निराली होगी..... 79
लगे रहो कल्कि के प्यारों..... 155
लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि..... 156

श

शिव दहे काम जेहि बलते 5
श्वांस में सुमरन समा गया 95
श्याम की मूर्ति सुहाए 175

स

सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा 20
सागर में नैया डग-मग डोले 51
स्वासों के संग में उठती उमंग में 62
सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले 98
संसार के बीहड मे मन भटकना 131
सर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए 172
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएं 187
सुबह का सूरज उगने वाला 202

ह

हमारे प्रभु कल्कि परम उदार 22
हमें दर्शन दिखा देना 53
हे काल रूप कल्कि प्यारे 64
हे कल्कि भगवान तुम्हें अब 66
हमें अब दुख से उबारो हरि 71
हम हारे टेर टेर काहे लगाई देर 158
हमको तो है एक आसरा करतार तुम्हारा 163
हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा 173
हे त्रेता के राम हे द्वापर के श्याम 193
हे बंसरी वाले 203

श्री कल्कि चालीसा 208
भगवान् श्री कल्कि को भोग 209
मुक्ति दायिनी आरती 210

गणपति वन्दना

शिव पार्वती सुत देवों में तुम प्रथम पूज्य गणनायक हो
वर एक रदन गजराज वदन सुख सिद्धि सदन सब लायक हो
लम्बोदर मुद मंगल स्वरूप मोदक प्रिय शुभ वर दायक हो
हे रम्ब हमें श्री कल्कि मिलें कर में कृपाण धनु सायक हो
प्रथम पूज्य है सुरगणों में गजानन
सदा ही बड़े हैं बड़ों में गजानन
लिए शौर्य उत्साह के भाव मन में
परम दक्ष हैं दुर्गुणों के दमन में
पराक्रम दिखाते रणों में गजानन
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
सरज सज्जनों में सुकोमल हृदय हैं
प्रणतपाल शरणागतों में सदय हैं
बड़े ही कड़े हैं कड़ों में गजानन
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
भुवन भोग सुख मोक्ष सम्पत्तियाँ सब
नवों निधि अचल ऋद्धियाँ सिद्धियाँ सब
रखें निज चरण रज कणों में गजानन
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
प्रणत को करें मुक्त दारुण दुखों से
भरें भव्य उत्तम अलौकिक सुखों से
करें कार्य युग के क्षणों में गजानन
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
सुयश शूद्र को वैश्य को धन दिलाते
सुदृढ़ शस्त्र प्रिय क्षत्रियों को बनाते
भरें ब्रह्मबल ब्राह्मणों में गजानन
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन

श्री कल्कि नाम की महिमा

कल्कि भगवान के नाम की महिमा वर्णनातीत व इन्द्रियातीत है। ब्रह्मसुख का भोग कराने वाली, स्वरूप का ज्ञान कराने वाली, जीवन मुक्त करने वाली, शक्ति मुक्ति महारानी के दर्शन कराने वाली जीवों को बांधने वाली माया के दर्शन कराने वाली और गौ ब्राह्मणों के बैरियों को विध्वंस करने के लिए पृथ्वी का भार उतारने के लिए अग्नि की तरह भड़कती हुई, नवीन शक्तियों को सृजन करने वाली, भगवान के चरणों में तल्लीनता व तन्मयता देने वाली, कल्कि भगवान की सत्ता से विकारमयी जीवसत्ता को दमन करने वाली भक्तों के हृदय में खम्भ में नरसिंह भगवान की तरह सत्ता स्वरूप से समा जाने वाली, ध्रुव सत्ता स्वरूप दण्डायमान हो जाने वाली, अपने में भक्तों की प्रवृति को प्रचण्ड अग्नि की तरह भड़का देने वाली, नारायण की छाती से लगा देने वाली, नारायण के चरणों में हठात् व वलात् लगा देने वाली, हमेशा से हमेशा के लिए भगवान का बना देने वाली, अगले जन्म के भगवान के सम्बन्धों को उद्दीप्त व प्रकाशमान कर देने वाली, उत्सुकता व आतुरता से भरी भगवान के सगुण रूप की विरह व्यथा को जागृत कर देने वाली, संसार की प्रत्येक वस्तु से अनुराग और प्रेम छुड़ा कर भगवान की दास्य अभिलाषा की ही अखण्ड त्योति की तरह जगाये रखने वाली, ४ लाख ३२ हजार वर्ष के कलियुग की आयु काट कर शूली का कांटा बना देने वाली, अंधेरे में उजाला, निराशा में आशा, असफलता में सफलता, जंगल में मंगल करने वाली समस्त प्रकार से समस्त क्लेशों को भस्म करने वाली, प्रचण्ड अग्नि स्वरूप, और आन्तरिक व अन्तरंग भक्तों के लिए शान्तिमयी वात्सल्यमयी, समृद्विमयी, माता की तरह भक्ति भावों और आन्तरिक सुखों को एवं ब्रह्मी स्थिति की पोषण करने वाली, धारण करा देने वाली, जाति स्मर बना देने वाली, भक्तों की जीवन यात्रा को चलाने वाली सत्संग व सत्पुरूषों में रूचि पैदा करने वाली है।

1. श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता

श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता धर्म नीति दर्शाने वाले,
बुद्धि बृहस्पति के सम जिनकी वानर कुल हर्षाने वाले।
रामचन्द्र के सखा सुहाने लंका नगरी ढाने वाले,
ब्रह्मा जी से मनवांछित भक्ति वरदान के पाने वाले।
करुणामय निष्काम प्रेम प्रभुता से भक्त बनाने वाले,
कल्कि की भक्ति वितरणकर आश की ज्योति जगाने वाले।
अधर्म से थी घृणा सदा शुभप्रद उपदेश सुनाने वाले,
मुझ जैसे विचलित प्राणी को अमर मार्ग में लाने वाले।
शान्त विभीषण सदा अभीषण शिव शंकर कहलाने वाले,
करें वन्दना सत-गुरु तुमको श्री कल्कि से मिलाने वाले।

2. गुरु वन्दना

गुरु बालमुकुन्द गदाधारी जय हो तुम्हारी जय हो।

कल्कि अवतार के प्यारे, संदेश सुनावन हारे,
मन प्राण में बसो हमारे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
कल्कि के नाम प्रचारक, सतगुरु संसार सुधारक,
तुम ब्रह्म विभव के धारक जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
जिसको यह दुनिया तरसे, बजरंगि छटा मुख बरसे,
तब कृपा बिना नहि दरसे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
गज भरसी चौड़ी छाती भुज दण्डन प्रभा लखाती,
सुर संतन के चिर साथी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
मृगराज ठवनि सुखकारी, आशा की गिरा उचारी,
हृदयान्धकार अपहारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
घट में कल्कि जी जागें, धग-धग लपटें-सी लागें,
लखि अघ अवगुणगण भागें जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

तब कंचन वरण सुहाना, जहाँ रुद्र रूप भयो भाना,
अकलंकी तेज समाना जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

आगे कल्कि की भक्ति, विच नाम की जोत लहकती,
पीछे कल्कि की शक्ति जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

लखि हाथ में गदा तुम्हारे, आशा उमंग को धारे,
सुर-नर-मुनि भए सुखारे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

मन चीती करी हमारी, कलियुग की जड़ें पंजारी,
ले कल्कि नाम अंगारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

भई प्रकट नाम की ज्वाला, नभ मण्डल डोलाहाला,
जब तुमने किया कसाला जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

जिनके घट के पट खोले, वे कल्कि की जय बोले,
फिर नहीं कहीं भी डोले जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

संशय सागर से त्राता, हे सत विश्वास के दाता,
नूतन जीवन निर्माता जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

हनुमानबली को ध्यावें, हम सब मिल शीश झुकावें,
अंगद-सी दृढ़ता पावें जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

हे सब समरथ सब लायक, हे जग दुरलभ सुखदायक,
कल्कि मंडल के नायक जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

3. गुरु गणेश गौरी गिरजापति

गुरु गणेश गौरी गिरजापति गुहः की शरण में गमन करुँ,
शरणागत वत्सल शिवशंकर शम्भु चरण में नमन करुँ।

निष्कलंक के अग्रदूत गुरु बालमुकुन्द का ध्यान धरुँ,
चरण कमल में नमो निरन्तर बारम्बार सम्मान करुँ।

श्री कल्कि महाराज की नित नूतन महान महिमा गाऊँ,
ध्यान धारणा भक्ति और अनुरक्ति विरक्ति मुक्ति पाऊँ।

नमो नमः श्री कल्कि प्रभु भू भार हरण को आए जो,
म्लेच्छ वंश विध्वंश करन को प्रलयानल प्रगटाए जो।

नित्य निरंतर श्री कल्कि के गुण ग्रामों का गान करुँ,
कलि मल हारी असुरारी को बारम्बार प्रणाम करुँ।

सुर समूह सुखकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
कल्कि कलि-कुल संहारी को बारम्बार प्रणाम करुँ।

तुम मत्स्य बने और कूर्म बने वाराह वामनाकार बने,
बलि को बंधन में बाँधन हित निज भक्ति के दातार बनें।

छोटे-छोटे से चरण दिखाकर विराट रूप बढ़ाय दियो,
उंगली पकड़ी पहुँचा पकड़ा और अपना भक्त बनाय लियो।

बलि द्वारे पर बलिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
प्रिय प्रेमी के प्रतिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

तुम कोप क्रूरता रूप धरे भृगुपति क्षत्रिय कुल दलन बनें,
लोभी नृशंस नृप दहन हेत हो चंड प्रज्जवलित ज्वलन बनें।

देहाभिमान के हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
पशुबल पर प्रबल प्रहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

तब क्रोधानल ज्वाला भड़की तब असुरन के दल थर्राए,
खंभ फटा नरसिंह प्रकट भए अट्टहास घन गहराए।

दुंदुभी नगाड़े बजन लगे देवन में आरती सजन लगी,
फन्द कटे सुर-नर-मुनि के भक्तन में नूतन लगन लगी।

नरसिंह रूप के धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दुर दानव उदर विदारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

भस्मासुर से भयभीत भये जब भाग पड़े त्रैलोक्य धनी,
भव भीम भयंकर शिव शंकर प्रलयंकर प्राण पर आन बनी।

तब नाच नचाय के मायापति ने मार्ग में वृक मार लियो,
वरदान के दाता सरल सौम्य मृत्युंजय को दुख टार दियो।

कमल नयन असुरारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दुष्ट दहन दनुजारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

जब देवन की पंगत बैठी हरि अमृत आप परोस रहे,
उन लाभ लहै हैं जीवन में जो उनके आस भरोस रहे।

मोहिनी रूप के धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दैत्य विमोहन कारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

अप्सरा प्रगट करि जंघा से और रूप की हाट लगाय दई,
कंदर्प को दर्प हरो हरि ने और गर्व की ग्रीवा झुकाय दई।

नारायण नर के सहचारी को बारम्बार प्रणाम करुँ,
बद्री विशाल बनवारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

दुरनीति धरी दुर्वासा ने हरि भक्तहि खड़े सताय रहे,
अम्बरीष को शीश झुको देखो तब हरि के नयन रिसाय गए।

प्रभू पाणि ते चक्र छुटो जब हीं दुर्वासा भगदड़ भाई है,
नहिं शरण मिली दश दिशि कितहू भक्तहि ते क्षमा मगाई है।

चक्र सुदर्शन धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
हरि भक्तन के भयहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

जब शक्ति विभीषण उर में हनी रावण ने क्रोध अपार कियो,
तब मृत्यु के मुखते आगे बढ़ रघुवंश मणि ने उबार लियो।

रण अजिर में विरद संभारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
मारीच के मृगयाकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

सरयू तट के संचारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
रघुवंशी अवध बिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

जब रास रचो वृज में हरि ने तव शिव की समाधि भंग भयी,
व्याकुलता उपजी हर हिय में देखन को मूर्ति अनंगमयी।

तब रूप त्रिया को धर धाए त्रैलोक्य विभूषण त्रिपुरारी,
गोपेश्वर नाम पुकार उठी सुर-नर-मुनि की सृष्टि सारी।

गोपेश्वर के मन हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
गिरि गोवर्धन धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

प्रिय पवन अनल सम लगन लगी हरि विरह में अधर सुखाय गए,
जिन प्रेम पियासे नयन किए और विलख विलख मुरझाय गए।

हरि सह न सके हरि रह न सके उनके सन्मुख हरि आय गए,
यही कल्कि हमारे कृष्ण बने तब प्रेम का पंथ निभाय गए।

रुक्मणी के संकट हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
राधा के प्रेम पुजारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

सांदीपन सुत सागर समाय सूनो संसार सिखाय गए,
गुरु दक्षिणा में हरि के हाथन यमराज सदन से आय गए।

साँदीपन सुत संजीवन को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
भारत भूमि के जीवन को मैं बारम्बार प्रणाम करूं।

प्राचीन वर्हि से नारद ने जब अकर्म पशुवध यज्ञ कहा,
तब यज्ञ कराने वालों को भी परम धर्म से अज्ञ कहा।

जब भोग पिपासा वश प्राणी पशुवध में एकाकार बने,
नहीं वैष्णव रहे न भक्त रहे निर्दय लालच के सार बने।

सूने सिद्धांत में उलझ गए नर गण भूमि का भार बने,
वैराग्य, दया, दर्शावन को तुम बुद्ध रूप साकार बने।

निर्वाण समाधि धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
पाखण्ड प्रमाद निवारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

जब म्लेच्छ समूह बढ़े जग में भारत भूमि पर छाय गए,
बन कल्कि नाम पावक प्रचंड संहार करन को आए गए।

युग परिवर्तनकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
निष्कलंक अवतारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

गौ ब्राह्मण हितकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
म्लेच्छ संघ संघारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

गंभीर पीर के हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
श्री कल्कि दुधारा धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

नव नियति के निर्माता को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
भारत के भाग्य विधाता को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

4. जय हो भगवान कल्कि जी

जय हो भगवान कल्कि जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ टेक।

तब नाम की अग्नि भड़की, शक्ति बिजली सम कड़की,
कलिकाय कांच सम तड़की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब कमल नयन रतनारे, मद मयन के मारन हारे,
सुषमा के अयन अनियारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

भृकुटि लखि रिपुबल टूटें, जहां काल अनल झल फूटें,
प्रलयंकर किरनें छूटें जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

मुख कोटि भानु छवि सोहे, जहाँ काल चक्र गति मोहे,
माया विनीत रूख जो है जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सिर मुकुट झमाका खावे, मणिमय प्रकाश बरसावे,
मन लगन की लौ भड़कावे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

कुडंल किरीट की शोभा, लखि रवि शशि आनन क्षोभा,
शंकर मन मानस लोभा जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सुंदर विशाल है छाती, गज मस्त चाल मदमाती,
केहरि सम कटि बल खाती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

मोतिन की झालर झमकें, जहाँ जड़े जवाहर चमकें,
शोभा दामिनि सम दमकें, जय हो तुम्हारी जय हो॥

केसरिया जामा साजे, गल फूलन गजरा छाजे,
शोभा श्रृंगार विराजे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सर्वांगे महकत चंदन, अंग अंग सुनहरे मण्डन,
दुख द्वन्द फंद के खंडन जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

भुज दंडन की छवि न्यारी, गरदन नाहर अनुहारी,
माथे पे तिलक द्युतिकारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

कर कमल वरद असिधारी, है शंख सुभग रव भारी,
युग के परिवर्तनकारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥

है आदि पुरुष तब प्यारी, चंचल घोड़े की सवारी,

जिसने है मोहनी डारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब चरण कमल नख ज्योति, जो हृदय पटल मल धोती,
जहाँ दिव्य दृष्टि है होती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

गुरु बालमुकुन्द ने जानी, कलियुग की नास निशानी,
तब लीला नई सुहानी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

5. शिव दहे काम जेहि बलते

शिव दहे काम जेहि बलते, बल नाम के बड़े प्रबल ते,
कलि कटेहु हार छल बलते जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

लज्जित ठाड़े मन मारे, कंदर्प कुसुम सर डारे,
लखि आयत नयन तुम्हारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

कानन में दमकत कुंडल जगमग जगमग मुख मंडल,
विभवे कोटिन आखंडल जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब प्रखर किरन प्रतपंति, तपि असुर संघ विलयन्ती,
धग धग धग लपट ज्वलन्ती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

अरि संघ दहन भुज ज्वाला, शिर शोभित ज्वाला माला,
दश दिशि में होत उजाला जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब खर असि दमक-दमक रही, चंचल चपला-सी चमक रही,
कालानल मनहु दहक रही जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

हृदयेश्वर हृदय बिहारी, हृदयांधकार अपहारी,
तुम ब्रह्म संपदा कारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

काटनहारी रौरव की, रक्षक भारत गौरव की,
तब चरण कमल सौरभ की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

गुरु बालमुकुन्द पायक की, कल्कि मंडल नायक की,
जग दुर्लभ सुखदायक की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

6. जय हो भय के भय कल्कि

जय हो भय के भय कल्कि, जय असुरन के क्षय कल्कि
सुर संत अभय जय कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

जय त्रिभुवन शासक कल्कि, जय कलि कुल नाशक कल्कि,
निज रूप प्रकाशक कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

जब रूप की चमकी ज्वाला, घट भीतर हुआ उजाला
सूझा सब काम सुखाला जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

सतगुरु की महिमा दरसी, जब कृपा की वर्षा बरसी,
सूखी आशा भई सरसी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

जय हो पितु माता कल्कि, सुख के निर्माता कल्कि,
निर्बल के त्राता कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

जय हो धन प्राण कल्कि, संतन के त्राण कल्कि,
जन के निर्वाण कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

जय पतित उधारन कल्कि, जय कष्ट निवारन कल्कि,
शरणागत तारन कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

जय असुर निकंदन कल्कि, जय हो जग वंदन कल्कि,
भक्तन उर चंदन कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

तुम धर्म के हो रखवारे, सतमारग के उजियारे,
पद्मा पति प्राणाधारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

दुष्टन के काल कल्कि, संतन प्रतिपाल कल्कि,
प्रगटो गोपाल कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

परताप प्रचंड तुम्हारा, दुख द्वन्द निवारण हारा,
जिसने यह हिंद उबारा जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

मुख कमल खिले हैं सबके, हैं पाप कटे जब तब के,
ली शरण आपकी जब के जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

कल्कि मंडल के प्यारे, हे स्वामी सखा सहारे,
तुम ही सौभाग्य हमारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

7. प्रह्लाद की विपद निहारी

(नरसिंह स्त्री श्री कल्कि भगवान की स्तुति)

प्रह्लाद की विपद निहारी, तुम से नहीं गही सहारी,
प्रगटे निज विरद संभारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

तब कड़क दिगंत गुँजावे, झट खंभ मध्य फट जावे,
ब्रह्माण्ड धड़ाका खावे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

श्री हरि कोपे जिन जानी, सब ने अपने मन मानी,
निज धाम की प्रलय निशानी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

तुम युद्ध असुर संग कीना, कियो उदर फाड़ तन हीना,
निज नाम सुयश रख लीना जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

तब विकट नयन नख दंता, नर हरि स्वरूप भगवंता,
जय हो हिरनाकुश हंता जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

ग्रीवा पे सटा फहरावें मुख क्रोधवंत जमुहावें,
असि सम जिभ्या लहरावें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

गर्जन गर्भांभक काढ़ें दिग गगन में कटी कराड़े,
असुरन हृदि पड़ी दराड़ें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

ब्रह्मादिक सुर यश गावें, शंकर से खड़े मनावें,
कमला समीप नहिं जावें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

नरसिंह तेजोमय झूमें, प्रह्लाद का मुखड़ा चूमें।
दश दिशि में मच गई धूमें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

सुर संत अभय कर डारे, युग-युग में कष्ट निवारे,
हम भी हैं नाथ तुम्हारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

गुरु बालमुकुन्द लखाए, अब हरि कल्कि बन पाए,
शरणागत जन यश गाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

8. भयो कारागार उजागर

भयो कारागार उजागर, जब वासुदेव नटनागर,
प्रगटे करुणा के सागर जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

तुम अघा बकासुर मारे, पूतना प्राण संहारे,
केशि यम घाट उतारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

बरसत जल अगम खपाए, गरजत घन गहन हटाए,
तुम इंद्र घमंड घटाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

हे गिरि गोवर्धन धारी, हे कालिय मर्दन कारी,
हे यमुना तट संचारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

दृढ़ बंध तोड़ दिए सारे, सब कंस सुभट हिय हारे,
जब सभा में आप पधारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

विदुषन विराटमय चीना, मल्लन ने मल्य प्रवीना,
सब नगर भयो लवलीना जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

चाणूर से धरणी धंसाये, मुष्टिक यम फँद फँसाये,
शल तोशल मार गिराए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

लखि कंस के काल विराजे गह-गहे बाजने बाजे,
जय कृष्ण चंद्र सब गाजे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

हर्षित नर नारी कीने, जब केश हाथ गहि लीने,
हनि कंस पटक महि दीने जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

यदुवंश की विपदा टारी, ब्रज मंडल कियो सुखारी,
मुरलीधर रास बिहारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

अक्रूर को दरश दिखाए, अर्जुन रथवान कहाए,
तुम साग विदुर घर खाये जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

गुरु पत्नी शोक नशाए, जग बिछड़े पुत्र मिलाए,
जो यम घर से लौटाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

सब असुर चमू मथ डारी, सागर जिमि मगर मुरारी,
जब रुक्मणी रथ बैठारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

हे कमल नयन असुरारी, भारत अति भयो दुखारी,

अब सुध लो नाथ हमारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
गुरु बालमुकुंद घट खोला, दे कल्कि नाम अनमोला,
कल्कि मंडल ने बोला जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

9. लीलाधारी शक्ति निधान

लीलाधारी शक्ति निधान, अवतारों में कल्कि महान।
खर खड़्ग धार दमकित दिगंत, कंदर्प कोटि सम द्युति अनंत।
अति ललित तिलक, दग दगित भाल, अरविंद नयन उर भुज विशाल।
झम झमित वस्त्र चमकितास्त्र, मणि-रत्न भास, भूषण प्रकाश।
अश्वाधिरूढ़ हर भूमि भार, चितवन उदार गल सुमन हार।
सुर-वृन्द-नमित, पद-कंज द्वन्द, दर्शन से कट रहे यम के फँद।
है कोटि-जन्म, अघ-राशि नाश, कर रहे अघ्रि हृदि तिमिर ह्रास।
हे म्लेच्छ-वंश तापन प्रचंड, मध्याह्न काल रवि सम उद्यन्त।
झल झलित दिव्य ज्योति विभांत, हो रही धरातल समाक्रांत।
दुर्गुण दुष्चरित्र के शमित्र, कल्कि मण्डल के परम मित्र।
हे कारुणीक! कल्कि कृपाल, प्रगटो—प्रगटो दुष्टों के काल।
तब चरण शरण ही हैं आधार, कर रहे आपकी ही पुकार।
हम नाम आपका रहे टेर, आवो-आवो! मत करो देर।
जो नमन करें प्रत्येक याम, यश कीर्ति बढ़ें हों पूर्ण काम।

10. निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको

निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको, कलु काल के अवतारी।
दलन करो दुष्टों के दल का, धूम तुम्हारी है भारी।
कमल नयन सरकार सम्भली, छत्तर मुकुट सिर खड़्ग धरे।
युग-युग में अवतार धार कर, भक्तजनों के कष्ट हरे।
क्षीर सिंधु के वासी जागो, हुई सृष्टि गौ हत्यारी।
असुर संहारन संत उबारन, दुखों भरी परजा सारी।
योग यज्ञ मख दान तपो व्रत, जप भक्ति और ज्ञान नहीं।
रामायण के पाठ भागवत, गीता और पुराण नहीं।
वेद विप्र अरु देव धर्म, गउवें साधु विष्णु पूजन।

बंद हुए, सत्कर्म, स्थापना, करो शीघ्र भू-भार-हरण।
अटल छत्र दरबार, अश्व, असवार, विकट तेजो धारी।
प्रलय काल की अग्नि-ज्वाल, बन रही नाम की अगियारी।
तड़िताँश तड़क भूषण की भड़क, कुण्डल की दमक माथे पे तिलक।
झाँकी की झलक शस्त्रों की चमक, मुख-बिम्ब-मयंक मनोहारी।
है कंठ-माल-उर, भुज-विशाल, करवाल जिन्हों की काल अनी।
चमक उठा भारत का भाल, जब कल्कि की तलवार तनी।
उठो-उठो महाकाल बनो, विकराल दण्ड को धारो अब।
सम्वर्त काल के मेघजाल की, गरज की गूँज गुँजा दो अब।
होए कलियुगी त्रसित, भक्त, उल्लसित, खचित मूरति प्यारी।
समय और इतिहास चित्रपट, घट में दीखो असुरारी।
सम्भार विरद बाना धारो, बन जाओ स्वामी काल वरण।
आ जाओ भगवान पने पे, हो जाए दुष्टों का निधन।
आखेट की भांति विदार धरो, हरि रेद-रेद कर मार धरो।
धर्म द्रोहकारी व प्रजा पीड़को, का प्रभु संहार करो।
चढ़ो बजा कर शंख होए, विध्वंस मचे हा-हा कारी।
घटा निराश की हटें दुष्ट, सब कटें मिटें अत्याचारी।
बजे विजय के बम्ब गड़ें ध्वज, खम्ब होए मंगलाचारी।
गायें आपके नाम गुणों के, ग्राम सभी मिल नर नारी।
सात द्वीप नव खण्ड में दमकें, कल्कि नाम की उजियारी।
अखण्ड भू मंडल के राजा, निष्कलंक संकट हारी।
हम आए आपकी शरण पकड़ लिये चरण, चित्त में वास करो।
भक्त वास शरणागत वत्सल, अभय दान का हाथ धरो।
ये कल्कि मंडल शरणागत,खड़े आपके दरबारी।
टेर सुनो महाराज भुवन, सिरताज लाज के रखवारी।

11. श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो

श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ टेक॥
अपने मन विचार कर देखो, तुम बिन कौन हमारो।
आशा दई बाँह गहि लीनी प्रेम श्रोत संचारो।

सब कुछ दियो स्वरूप लखायो अब कहाँ खड़े निहारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो ॥ 1 ॥
सरसिज लोचन सखा सनातन, सुंदर सुयश तुम्हारो।
सत्यनाम गोपाल करो प्रभु, गौवन को रखवारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सभारो ॥ 2 ॥
संतन पे संकट छायो है, कलि रूपी अँधियारो।
हे कल्कि! कलि-कुल संहारी, वेग ही कष्ट निवारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो ॥ 3 ॥
बाना विरद निहार के अपनो, भूमि भार उतारो।
राज सिंहासन होय तुम्हारो लोकन को उजियारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो ॥ 4 ॥
कलियुग के बंदी घर टूटें, होन लगे निस्तारो।
कल्कि नाम सिर सुरन चढ़ायो, फँद छुड़ावन हारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो ॥ 5 ॥
सहज स्नेह कियो सतगुरु ने, डूबत दियो सहारो।
जड़ विद्या की गहन धार से कर दीनो छुटकारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो ॥ 6 ॥

12. गोपाल तुम्हारी गउओं का

गोपाल तुम्हारी गउओं का, अब बैरी बना है कण कण,
कब छोड़ोगे असुरों पे, प्रभु जी अपना चक्र सुदर्शन।
जो वचन दिया है गीता में तुमने आने का भगवन,
कल्कि के रूप में खड़ग लिए पूरा कर दो अपना प्रण।
भारत भी म्लेच्छ स्वरूप बना, संसार तो था ही द्रोही,
ये धर्म रसातल चला कि जिसका तुम बिन नहीं है कोई।
दुष्टों में दावानल बन भड़को, दहन हेत दानव वन,
और काल रूप धर गर्ज उठो हरि प्रलय काल के घन बन।
असुरों में धू धमार हो हाहाकार मचे और क्रंदन,
गो विप्र भक्त मन नंदन नंदक, खड़ग का हो अभिनंदन

हो पांचजन्य घनघोर दिवसप्रक, शब्द गर्जना गुंजन,
जिस शब्द के आश्वासन से होवें, भक्तों का भय भंजन।
एक आश निराशा में तुम्हीं, जो विनती सुनो हमारी,
प्राणों में प्राण हमारे आवें, महिमा बढ़े तुम्हारी।
अघहारी अभयदान दर्शन दो, नाच उठे जन जन मन,
घर-घर में मंगलाचार ध्वनि हो, घट-घट में तव पूजन।
विश्वास बढ़ावन हार विश्व के, वन्द्य आपके हनुमन,
गुरु बालमुकुन्द के चरणों में हो तन मन धन ये अर्पण॥

13. कल्कि के रूप में निमग्न

कल्कि के रूप में निमग्न निशि-वासर रहत
कलियुग की जड़ पे कुठाराघातकारी हैं
कल्के: संसप्तक सहकार्य सव्य बांह सतगुरु
बालमुकुन्द गदाधारी सदाचारी हैं
सीधे और सरल संत असुरन पे कोपवंत
धर्म के कवच कल्कि नाम के पुजारी हैं
अनुभव विज्ञान क्षीर सागर समान जिनका
सुरन की समाज में शिव सम सन्मान जिनका
तेजवंत समरप्रिय संत हितकारी हैं
रुद्र अवतार सतमारग के त्राता भए
भविता प्रमाथी भय के प्रथम बाँधकारी हैं
पृथ्वी धर्म विप्रन के अभयदान दाता आप
आश नई देकर सुरन के त्रास हारी हैं
जमघट निशाचरों की घोर घटा से घिरे
ध्वांत नभ मंडल में प्रखर तर तमारी हैं
असुरन के काटन को भय की भयावनी में
पाँव जिन सब से प्रथम धरो अगारी है
धर्म के बैरियन के वन भस्म करन हेत
हाथ में धरे कल्कि नाम की अंगारी है

कल्कि के नाम के अंगार से लगाई आग
लहकी नभ गई जड़ें कलियुग की पंजारी है
जय हो हनुमान शिवरूप सुर त्राणकारी
भीषण भयानक कठिन करनी तुम्हारी है
कल्कि दई आस से निराश में जमाए पग
वैष्णव विरोधी जग में गाढ़े अकलंक ध्वज
आसुरी जग को भयानक महामारी है
दूत बन आए नई लीला का संदेश लाए
नए राज्य शासन अटल छत्र के दरबारी हैं
क्या ही ये सुंदर संदेश सुखकारी हैं
भक्तन के मन में मानो नई जान डारी है
निष्कलंक बनकर कलंक का करेंगे नाश
थे कभी कृष्ण जो अब कल्कि खड़गधारी हैं
अपनो स्वरूप दर्शाय कर कृतारथ कियो
चरणन में झुकी नाथ गरदन हमारी है
करें नमस्कार बारंबार प्रभू आपको हम
आपका स्वरूप हृदय ध्वांतापहारी है
कल्कि के तन स्वरूप कल्कि के मन स्वरूप
कल्कि की दृढ़ता मानो प्रगट देह धारी हैं
सत्य, विश्वास और आस की तव प्रतिमा ने
माया की काँटी मन की काटी हमारी है
कल्कि के रूप का निवास तुमने हमें किया
श्रृंगाल से सिंह का लिबास तुमने हमें दिया
निहाल किया अब तक कृपा का स्रोत जारी है
करी थी कृपा तुलसी दास पर कृपालु कभी
अबकी बार बाँह तुमने पकड़ी हमारी है
बाँह के गहे की लाज रखियो भक्तन सरताज
शरण आपकी के बिना ख्वारी ही ख्वारी है
रामकृष्ण नामधारी जीव को जगाया तुमने
भटकत भए को धुर मुकाम से लगाया तुमने
दृष्टि से सुधा की रूह अमर कर डारी है

14. बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार

बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
अपनी ओर निहार कल्कि पार लगा देना

साधु-संत के तुम रखवारे असुरन के वन काटनहारे
कर में तीक्ष्ण खड़ग संवारे कल्कि पद्मानाथ मुरारे
अपने जनन की बिगड़ी दीनानाथ बना लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

अपनन ने अपनाई छोड़ी भक्तन में प्रीति भई थोड़ी
सत संगत से पीठ है मोड़ी माया ने श्रद्धा है तोड़ी
इस माया को शीघ्र काट कर हमें बचा लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

असुरन की माया फैली है, सब के पीछे भूल लगी है
पग-पग पे बाधा ठाड़ी है, पाँव धरन को जगह नहीं है
सोये पड़े भक्तन को अपने आप जगा लेना
बेड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

टूटे हाल हैं भक्त तुम्हारे असुरन की आफत के मारे
घोर विपत में पड़े बिचारे तुम बिन उनको कौन उबारे
हे संभल सरकार, विपत्त के भार हटा देना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

दुर्बल के तुम परम सहारे भक्तन के दुख काटन हारे
मात-पिता गुरु सखा हमारे संतन के मन के उजियारे
भक्तन को अपने मिलने की राह बता देना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

भूमि भार उतारन हारे युगन-युगन तुम पतित उबारे
रूप अनेकन तुमने धारे कमलनयन चंद्रानन प्यारे
अवगुण किए बिसार स्वामी हृदय लगा लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

15. भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी

भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी कल्कि भगवान
भजन करे से श्री कल्कि का जीते जी मिले पद निर्वान
सत्य सनातन धर्म के स्वामी सत्य श्री कल्कि भगवान
करम वचन मन को सुलझाकर कल्कि में ले आ ईमान
कल्कि नाम में मन को रमा ले पावेगा आनंद महान
भूमि भार उतारेंगे हरि चहुँ दिशि मचे घोर घमसान
करनी के फल पाकर पापी हो जावेंगे लोप समान
दिगंत व्यापी धुआँ धार में नहिं सूझेगा अपन विरान
कल्कि नाम की ज्वालाओं ने घेरा होगा सब चौगान
म्लेच्छ वंश विध्वंसक कल्कि काढ़ेंगे कलियुग के प्राण
ध्यान धरेंगे जो चरणों का उनका होवेगा कल्याण
धर्म की धाक जमे धरती पर रहेंगे भक्त-भक्ति-भगवान
ब्रह्म रूप सृष्टि होवेगी कल्कि नाम में ब्रह्म का भान
जगमग-जगमग विश्व करेगा, ऐसी है कल्कि की शान
आँखों में दिल में बैठा लें ये होंगे मन के अरमान
फंद कटेंगे पुण्य भूमि के होगा भारत का उत्थान
नतमस्तक बद्धांजलि होंगे ऋषि, मुनि और संत सुजान
देव, यक्ष, गंधर्व, अप्सरा सब मिलकर तोड़ेंगे तान
दशों-दिशाओं में गूँजेगा श्री कल्कि के यश का गान
घुड़सवार कल्कि तरवरिया को मानेगा सकल जहान
लोकपाल दश झुक-झुक करके करेंगे आदर और सम्मान
ऋद्धि-सिद्धियाँ नृत्य करेंगी कल्कि में होकर मस्तान
देववधू सुर से गावेंगी जय-जय सुर संतन के त्राण
गंगा-यमुना सारे तीरथ चार वेद दश अष्ट पुराण
मूक खड़े मन में खोजेंगे जिनकी महिमा की उपमान
जय-जय कारों की त्रिभुवन में घोर सुनाई पड़ेगी कान
सत्य श्री कल्कि नारायण का घट-घट में होगा स्थान
धर्म ध्वजा आकाश चढ़ेगी पाप का होगा नहीं निशान
कल्कि नाम का बजेगा धौसा कल्कि के ज़मीन-आसमान

16. दानव दल के आसन डोले

दानव दल के आसन डोले, पड़े जो प्रबल प्रहार
कल्कि रूप धरें असुरारी, हो घोड़े सवार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
आयत लोकातीत विलोचन, विकसित कमलाकार
उर भुज दंड विशाल मनोहर सुषमा के आगार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
शीश मुकुट मस्तक पर चंदन गल मुक्ता मणि हार
कानन कुंडल कटि कंधोनी परि कर कसे कटार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
यमुना भंवर गंभीर नाभि पर सुर नर मुनि बलिहार
ज्योर्तिमय जगमग मुख मंडल चंद्र वरण सुकुमार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
कर कराल करवाल विराजत अद्भुत जाकी मार
दहक उठी दश दिशा दहनहित दुष्टन को संसार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
सहस्त्र श्रवण दे ध्यान शेष शाई ने सुनी गुहार
वाहन भूषण शक्ति शस्त्र सज्जित ऐश्वर्याधार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
अश्व सहस्त्र सजे स्यंदन में सादी असंख्य सवार
सहस्त्र खंब में रत्न जड़ित रथ पर जिनका संचार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
शक्र कोटि शत सरिस समुन्नत विलसत विभव विहार
सुर संभ्रांत भए सुमनन की करन लगे आसार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
हुआ सनातन महाविष्णु का दृढ़ संकल्प पसार
हनुमान ने सुनी नभगिरा बज्र ध्वजा लई धार
.....हरि जब आए हरण भू-भार
स्वप्न बँटे संदेश बँटे और अनुभव बँटे अपार
भक्त भूमि भूसुर सुरभि सुर संतन के सुखसार

.....हरि जब आए हरण भू-भार
बालमुकुन्द गुरु गदा उठाए कहत प्रचार प्रचार
क्षीर समुद्र निवासी कल्कि ने लीन्हा अवतार
.....हरि जी आए हरण भू-भार
सावधान हो धर्म-कर्म पे अपनी करो संभार
अंचल गहे रहो कल्कि का, अब होगा संहार
.....हरि जी आए हरण भू-भार

17. आवेंगे सही प्रगटेंगे सही

आवेंगे सही प्रगटेंगे सही, कल्कि भगवान खड़गधारी
शोभा से जगमग जग होगा है जिनकी तड़क-भड़क भारी
हैं दुष्ट दहनकारी कल्कि सुरभि सुर संतन सुखकारी
वो धर्म-वर्म हैं रमापति, हैं घोड़ा जिनकी असवारी
अनुभव में खड़ग सँभाला है उस तेज की प्रगटी ज्वाला है
जो शिव मन बसने वाला है जिसकी लीला है नई न्यारी
होती है सफल जहाँ शुद्ध मति जिससे मिल बनती सुरति सती
भक्ति होती नित्या प्रकृति मुक्ति जिसपर है बलिहारी
कल्कि की शक्ति अजय बड़ी जयमाल लिए है विजय खड़ी
यह गूँज रही आनंद घड़ी जय-जय सुर संत अभयकारी
भूमि का भार हटेगा अब असुरों का जाल कटेगा अब
आशा से जिनकी उमंग रही आनंद भरी पृथ्वी प्यारी
कल्कि के अनुभव आय रहे भक्ति की ज्योति जगाय रहे
भक्तन मन हो भरपाय रहे प्रगटेंगे शीघ्र कृपा कारी
गुरु बालमुकुन्द चढ़ें मन पे नहीं रहा नेह तन पे धन पे
कल्कि ने करी कृपा जिन पे दरशाई रूप की उजियारी

18. बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता

बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता,
बोलो जय-जय-जय कल्कि माता
कल्कि-कल्कि तुम कहा करो, कल्कि के भजन में रहा करो
तुम्हें जीवन मुक्त बनावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

श्री कल्कि ने अवतार लिया, दे अनुभव हमें उबार लिया
वह घोड़े चढ़कर आवेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

दुष्टों को मार खपावेंगे, अधर्म की खोज मिटावेंगे
चौगिरदा खड़ग बजावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

वह भक्तों को अपनावेंगे, वह ब्रह्म विभव बरसावेंगे
भारत का मान बढ़ावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

जो ध्याय रहे सो पाय रहे, मन का संदेह मिटाय रहे
सतयुग से जगत सजावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

गुरु बालमुकुन्द ने दया करी, कल्कि मंडल की नींव धरी
कह दिया क्लेश नशावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय.....

19. यम नगर के पंथी कल्कि नाम बिसारें

यम नगर के पंथी कल्कि नाम बिसारें
पन्ने उलट-उलट देखें, हरि महिमा नहीं विचारें
कल्कि नाम गहैं नहीं मन में, कागज़ में सिर मारें
पलड़ा डूब रहा अधर्म में तिसको नहीं निहारें
आँख मूँद बैठे गौवध से समय पे तन मन वारें

कल्कि से नहीं नेह लगावें, नहिं आशा को बाँधें
कलियुग की इस खड़ी भीत को कहो वह कैसे फाँदें
तरह-तरह के करें बहाने मौन ध्यान व्रत धारें
श्री कल्कि की ओर बढ़न को मन अपना नहिं मारें
गुरु बने कोई बरज रहे हैं, कोई चेला बन अटकें
कल्कि नाम से कलियुगियन के प्राण पखेरू सटकें
श्री कल्कि से अलग थलग रहि आन तान से मटकें
कल्कि नाम की ध्वनि सुनें, तब भौं चढ़ाय के हटकें
'राम कृष्ण' ऐसे मन पापी राम कृष्ण मन खटकें
'राम कृष्ण' की आड़ बाँध के कल्कि नाम से भड़कें
हरि की माया बड़ी प्रबल युग काट-छाँट कर डारें
बालमुकुन्द लखाये जिमि नर हरि खम्बा को फारें

20. सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा

सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा
कलियुग तम जग से कढ़न लगा
हरि नाम का रंग जब चढ़न लगा
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम कहो कल्कि नाम सुनो
कल्कि नाम पढ़ो कल्कि नाम गुनो
कल्कि नाम के मोती मन से चुनो
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम के सम नहीं कोई सगा
कल्कि नाम से बेड़ा किनारे लगा
कल्कि नाम से दुष्टों का काल जगा
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम ने कलियुग ह्रास किया
कल्कि नाम ने युग बल ग्रास किया

कल्कि नाम ने दुष्टों को त्रास दिया
कल्कि नाम जपो कल्कि नाम जपो
कल्कि नाम की ध्वनियाँ गरज रहीं
कुकरम से बचो तुम्हें बरज रहीं
अधरम की दीवारें लरज रहीं
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम स्वयं हरि विग्रह है
कलियुग का कर रहा निग्रह है
असुरन को महामारी ग्रह है
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम अनुभव का द्वारा है
भूमि भार उतारन हारा है
जिन्ने काल रूप अब धारा है
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि के द्वार पुकार करो
पद वंदन बारंबार करो
सब तन-मन-धन बलिहार करो
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
गुरु बालमुकुन्द जगाय रहे
उठो श्री कल्कि अब आय रहे
शरणागत दर्शन पाय रहे
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो

4 Oct 2020

21. मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि

मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि नाम से
वे बातें सूझेंगी तुझे जो नहीं सुझाई देती हैं
जिनके सूझे बिन दुनिया सब लूट कमाई लेती है
अंधे कहलाते जिसके बिन, ध्यान लगा उस काम से
.....मना तेरी बन जावेगी...
जिसको जाने बिन यहाँ से कंगाल बने सब जाते हैं

कुकर्म करके इस दुनिया में यम के डंडे खाते हैं
यह सब कष्ट मिटेंगे प्यारे कल्कि की पहचान से
.....मना तेरी बन जावेगी‥
जिसको देखे बिन सब जग दिवाना-सा बन जाता है
चलता है उस मारग पर जिसको जोई भा जाता है
होश बने रहते हैं कायम श्री कल्कि के ध्यान से
.....मना तेरी बन जावेगी‥
रटना से कल्कि की सही सालम बुद्धि कहलाती है
आतम मन और करम वचन सबकी शुद्धि हो जाती है
कपट कुटिलता छोड़ के नाता जोड़ ले मन विश्राम से
.....मना तेरी बन जावेगी‥
कल्कि-कल्कि-कल्कि बस एक सार सुझाई देता है
माया की एवज घट को ईश्वर ही अपना लेता है
जीव ब्रह्म सम होता है, नहिं रहे अलग निर्वाण से
.....मना तेरी बन जावेगी‥
कल्कि नाम की महिमा से यह दुनिया नई बन जाएगी
तू पलटा खावेगा और यह दुनिया पलटा खाएगी
राम-कृष्ण नाता जोड़े रहियो कल्कि भगवान से
.....मना तेरी बन जावेगी‥

22. हमारे प्रभु कल्कि परम उदार

हमारे प्रभु कल्कि परम उदार
रूप के सागर सब गुण आगर करुणा के पारावार
प्रेम के ग्राहक प्रेम शिरोमणि प्रेम के परखनहार
.....हमारे प्रभू...
मृतक जिआवन, बिछड़े मिलावन अमिय पियावनहार
सब समरथ संपन्न अधिश्वर मन की जाननहार
.....हमारे प्रभू...
भव भय भंजन, जन-मन रंजन, नाशन म्लेच्छ अपार
अजर अमर अविनाशी सखा, संबंध निभावन हार
.....हमारे प्रभू...

अंचल से पीतांबर बाँधो, पहुँचा पकड़न हार
धड़क रही दिन-रैन धुकधुकी, तुम बिन प्राणाधार
.....हमारे प्रभू...
बड़ी बीत रही बेर बिहारी, बेड़ा करो अब पार
आओ वेग कमल दल लोचन ले कर में तलवार
.....हमारे प्रभू...
बालमुकुन्द जी के शरणागत की साख जमावन हार
मन में बसी माधुरी मूरति अगुण सगुण साकार
.....हमारे प्रभू...

23. कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है

कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
क्षीर सागर निवासी महाराज का
उसने देखा है जलवा तखत ताज का
जिसने मन से किया उनका सम्मान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
दिल खुशी से सरो चश्म जो झुक गया
उसके पापों का पर्दा तुरत फुक गया
उसके घट में प्रगट कल्कि भगवान हैं
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
कल्कि संहार मूरत महा काल हैं
दुष्ट दल के दहन कारी विकराल हैं
उनके चरणों में जिसका बसा प्राण है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
नाम कल्कि है मन की कसौटी बना
नाम कल्कि का सुनकर जो मन में तना
बस समझ लो वह कोरा है नादान है
कल्कि मंडल के मन का तो उजियाला है
काले मन वालों का करता मुँह काला है
दंडधारी व दुर्जय प्रभावान है

पीत पट पहन तलवार कटि में कसे
कल्कि मंडल के मन में हैं कल्कि बसे
अब तो उनका हुक्म दीनो ईमान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है

24. जय बोल रहे-जय बोल रहे

जय बोल रहे-जय बोल रहे, सब कल्कि की जय बोल रहे
दुखियारे आफत के मारे सब सुर-नर-मुनि जय बोल रहे

हैं धर्म कसौटी काँटे में, होंगे इन्साफ सपाटे में
गाफिल मत रहना घाटे में, कल्कि जी कर में तोल रहे
जय बोल रहे-जय बोल रहे

भूकंप-सा जग में छाया है, कल्कि की फैली माया है
अब समय सत्य का आया है, असुरन के आसन डोल रहे
जय बोल रहे-जय बोल रहे

कल्कि के झंडे फहर रहे, संतन मन मानस लहर रहे
हत भागे हठ में ठहर रहे, जो घट में नहीं टटोल रहे
मन की आँखें नहीं खोल रहे, जय बोल रहे-जय बोल रहे

दुनिया वहशत की मारी है, ईश्वर से विमुख गँवारी है
करनी की शीश सवारी है, जिनके मन रेता रोल रहे
जय बोल रहे-जय बोल रहे

यह काल चक्र की घानी है, चहुँ ओरी मौत निशानी है
कल्कि के चरण लासानी है, जो अमर द्वारे खोल रहे
जय बोल रहे-जय बोल रहे

कल्कि में जो मन सानेंगे, कल्कि की महिमा जानेंगे
गुरु बालमुकुन्द की मानेंगे, जो अमृतरस को घोल रहे
जय बोल रहे-जय बोल रहे

कल्कि मंडल ने ठानी है, कल्कि की महिमा गानी है
नहीं चलनी अब मनमानी है, श्री कल्कि के बज ढोल रहे।
जय बोल रहे-जय बोल रहे

25. प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई

प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई
असुरन की माया से जब सब सृष्टि भई बौराई
लहर झकोला विष के व्यापे पार न एक बसाई
.....चेतो रे
बालमुकुन्द गुरु सुरत सँभारी कल्कि शरण अपनाई
भार उतारन कल्कि आए सुर पुर बजत बधाई
.....चेतो रे
घबराए शरणागत जन को धीरज दियो बँधाई
फाटक खोल दिए अनुभव के संशय दिये मिटाई
.....चेतो रे
कल्कि नाम में संभल नगरी याही में क्षीर समंदर
अरणि काष्ठ सम रगड़ से कल्कि प्रगटे बाहर अंदर
.....चेतो रे
कल्कि रटे भाषत कल्कि की महिमा बड़ी सुहाई
पाप नसत हैं कोटि जनम के कलियुगी कटत कसाई
.....चेतो रे
कपट कुटिलता छोड़ के सीधे संत बनो सुखदाई
शासन विकट कठिन कल्कि को पड़ी है बड़ी कठिनाई
.....चेतो रे
सत्य नम्रता गहे सरल बन नाम जपो मेरे भाई
परदा काट के कल्कि प्रगटें बुद्धि मिटे हरजाई
.....चेतो रे
'राम कृष्ण' पे दया करी श्री सत गुरु भये सहाई
भटकत देख अधम मारग में कर गहि लियो बचाई
.....चेतो रे

26. देखा-देखा इस कल्कि नाम (विशेषता)

देखा-देखा इस कल्कि नाम का नया निराला ढंग
कल्कि नाम रस जो कोई पीवे हो जावे बजरंग

कल्कि नाम है कलियुगियन के गल फाँसी का फंद
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....
सुर संतन को धीर बँधावें दैवी शक्ति आय
असुरन का संगठन तोड़ के करे रंग में भंग
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....
श्री कल्कि महाराज की महिमा मन में गई समाय
रूप छटा जब नाम से प्रगटी माया भई बदरंग
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....
मन आसन कल्कि का बनाया बरबस दिया झुकाय
कल्कि नाम कृपाकारी ने भूना कलि भुजंग
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....
कल्कि नाम से बालमुकुन्द लिए कल्कि ने अपनाय
कल्कि के अवतार को सुनकर रह गई दुनिया दंग
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....
असुर संहारन हारे कल्कि का पाकर आदेश
कल्कि मंडल में कल्कि का बाजन लगा मृदंग
देखा-देखा इस कल्कि नाम का....

27. देखा-देखा इस कल्कि नाम

देखा-देखा इस कल्कि नाम का अद्‌भुत रूप अखंड
जिसकी अग्नि की लौ लपकी लोकन में गई छाय
जिसकी शक्ति से यह सारा दहल उठा ब्रह्माण्ड
देखा-देखा इस कल्कि नाम का.....
'राम कृष्ण' की कीरत नए सिरे से गई हरियाय
धर्म उधारन कल्कि का जब प्रगटा तेज प्रचण्ड
सुर-नर-मुनि सब माथा टेकें आस रहे हर्षाए
मन में जो घबराए रहे थे असुरन देख उदण्ड
देखा-देखा इस कल्कि नाम का.....
काल वरण कल्कि की नंगी चमक रही तलवार

मौत के मुँह में दुनिया बैठी तजे नहीं पाखण्ड
देखा-देखा इस कल्कि नाम का.....
कल्कि ने अवतार लिया भज लो कल्कि मन लाय
बालमुकुन्द संदेशा लाए उभरा भारत खण्ड
देखा-देखा इस कल्कि नाम का.....

28. कल्कि मन में जो निवास करें

कल्कि मन में जो निवास करें,
तब होय बसंत दिगंतन में
कलि काट के कल्कि जो प्रकटें,
आनन्द मनें सुर संतन में
दिग भा भासित हो हरि रंग में,
भक्तन मन होऐं उमंगन में
कल्कि आवन की आस पड़ी,
संजीवन सम मृत जीवन में

29. म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन

म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन
वक्ष भुज विशाल कर खड़ग सवारें हैं
कुंडल क्रीट मुकट मुक्तन गल माल डारे
दमक ने मयन मयंक मान मारे हैं
धारे अपार तेज दहन हेत दुष्टन वन
पृथ्वी के प्राणी सब 'हा हा' पुकारे हैं
घोड़ा पे सवार हो दे रहे करारी मार
उनपे जिन धरम के आसन बिगारे हैं
भक्तन भय शमन विषाद के दमन नाथ
कल्कि कराल कोप कलि कुल संहारे हैं
चरण सरोज की शरण विमुख भटक रहे
वे ही नर हाय विश्व शांति उचारे हैं

लेन को बदला गोपाल भैया गैया के
सृष्टि पे आज तीक्ष्ण दृष्टि से निहारे हैं
फेंटा कसि कमर भार भंजन भू खड़े भए
भक्त भू भुवनन के भनत जयकारे हैं

30. मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से

मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से
मुकुट की बहार से, जग जगमग-जगमग करत है
हीरन की किरन मुकुट भीतर से झलक रही
तेग की चमक मानो बिजली-सी चमक रही
क्रीट की छटा चंद्र चाँदनी-सी छटक रही
मुख को प्रकाश कोटि भानु अनुहरत है
चंदन विशाल माथे, मुख है कमाल भरो
रूप को जादू पाप भक्तन को हरत है
चौड़ी-सी छाती विशाल भुज दंड जिनके
कमल नयन प्याला से मुख पे झल झलत हैं
पतली-सी कमर कामदेव की छवि मात करत
मुरका खाय जात जब झूम के चलत हैं
घोड़ा पे सवार तरवार पैनी हाथ धरे
कोप गंभीर भरे ओठ फरफरत हैं
कौन हैं ये काल कलि काल के कराल कल्कि
माया से आज जिनकी विश्व डग मगत है
कलियुग के मोहरा घबराय थर-थर काँप रहे
बचिबे की राह नहीं सूझत है झाँक रहे
मौत दीख रही पाँव आगू नहीं धरत है
ऊपर चढ़ेन को नीचे गिराय रहे
नीचे पड़ेन को ऊपर चढ़ाय रहे
बंदी में पड़े निज जनन को छुड़ाय रहे
कब्ज़ा जमाय रहे अपनी दखल करत हैं
बैरी प्रचण्ड बल-छल करत नाहि लजत

अपनी-सी कर हार झक मार दाँत किर्रत हैं
दुनिया या लीला को अचरज निहार रही
पार नहीं पावत है मन-ही-मन हार रही
कह रही माया ये ईश्वर की फिरत है
खलन को संगठन लातन से चूर कियो
मान धूर-धूर कियो साख वा की कीच माटी नज़र परत है
एक-से-एक को शंका समाय रही
करनी ही उनकी मानो उन ही को खाय रही
काल की आग मानो चहुँ दिश में बरत है
कल्कि के तेज ने सब देश दिशा घेर लिये
दुष्टन के असुरन के धुर्रा बखेर दिए
नाम से जिनके कलि कटक खर भरत हैं
भक्तन की टेर सुन जागे कल्कि भगवान
काल रूप धार आज विश्व में बिहरत हैं
नाम कल्कि की आग लपट में लपेटन
भार भू समेटन कष्ट गौअन के मेटन को असुरन में बरत है
भाग गौ विप्रन के प्राण भारतवर्ष के
भक्तन रखवार कर बूडे भए उभरत हैं
नाम कल्कि की कान दशों लोकपाल करत
या ही के सहारे नींव आगे को धरत हैं
'राम कृष्ण' नाम पे निसार रहियो कल्कि के
नाम कल्कि से प्राण असुरन के कढ़त हैं

31. अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके

अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके
जिन्होंने खाए केवल किताबों में धक्के हैं
कल्कि जिन सार कियो माद्दियत पे मारी लात
कल्कि ने देकर प्रकाश किए पक्के हैं
पक्के प्रह्लाद भए प्रबल प्रकाश पाय
भीतर से भए निहाल जब छक्के हैं

हरि को आधार धार हरि की लीला निहार
देकर गए आदर्श बड़े पक्के हैं
भयो अचँभा बीच खम्बा से प्रगट भए
नरहरि स्वरूप ये ही कल्कि कड़क्के हैं
अँधा धुँध धाँधली निहार कलियुगियन की
अबकी आय फेर कल्कि रूप धर धमक्के हैं
अपने जनन को निज रूप दर्शाय रहे
अनुभव दिखाय लय कर रहे लपक्के हैं
कल्कि के नाम की शरण है जिसने गही
रोम-रोम खिलो चाल चलत झमक्के हैं
पक्के प्रह्लाद किए अगले जमाने में
अब भी शरणागत अनेकों किए पक्के हैं
आगम की वार्ता से मुदिता है संतों में
सुन-सुन घबराय रहे कलियुगी उचक्के हैं
नही गुँजाइश मन में अनुभव आधार नही
चाहत जो करन अपने मन को सुधार नही
वे ही सुन कल्कि नाम उठत तमक्के हैं
शरणागत बनके जिन हरि में लगायो ध्यान
अंदरहू बाहरहू भानु सम चमक्के हैं
आँख मूँद बैठे तो सविता को दोष नही
पक्के पथ जग को लखाय रहे पक्के हैं

32. गउअन गरीबन किसानन की विपता

गउअन गरीबन किसानन की विपता मिटें
पिट कर मक्कारी शकलें बदल जाए भोली में
भोली-भाली जनता या हिंद की मनावै फाग
बदलो जमाना दीखै आँख की मिचौली में
दृष्टि हो मेहर की कल्कि भगवान की
उतर जाय भार उनकी ठठ्ठा ठठोली में
गऊअन के बैरियन के वन के वन भस्म होय

मचै धुधमारी आनंद मनें होली में
होवै स्वतंत्र यदि भारत तो रंग बँधैं
सबके दही मिश्री व मक्खन हो झोली में
ऊँचे आदर्श और प्रेम में उभरत फिरैं
नर और नारी रंगें केशर व रोली में
एक मन एक प्राण एक सुर एक तान
लय हों अनंत रूप सागर झकोली में
कल्कि भगवंत के दिगंत व्यापी यश गाय
मन को रमावैं कल्कि नाम अनमोली में
प्रेम महकार से मुखड़ा खिले जात होंय
हित के हेत सदा हृदय कमल हो फुटौबली में
पर पीड़ा करन हारी वासना अमीरी की
परदा कर बैठ जाय मुख छिपाय डोली में
कल्कि को रूप समझ एक से एक मिलैं
कपट कौटिल्य न लखाय पड़े टोली में
भारत भगवान में भगवान होंय भारत में
भासैं सब मस्त कल्कि नाम प्रेम होली में

33 .बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई

बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई
निर्गुण ब्रह्म कहावे जो सो कल्कि की परछाई
कल्कि चरन से अलग हटावैं सोई है माया भाई
पोथी तेरी बैरन बन गई गुरु बन गए कसाई
कल्कि नाम से विमुख करत मे, जिन्हे दया नहीं आई
कल्कि नाम कलियुग का घाती भक्तों का चिर साथी
श्री कल्कि से मिलन करावैं माया काट प्रमाथी
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह बैरी बन मनहि भ्रमावैं
तैसई कल्कि नाम से श्रद्धा कलियुगी गुरु हटावैं
कोई कहे हम कर्ता-धर्ता हम सतगुरु भगवाना
हिरण्याकुश की तरह खड़े हैं काम फकत बहकाना

भक्ति को निष्फल बतलावे अपनी महिमा गावैं
डाँट-डाँटकर धौंस जमावे और औसान डिगावैं
गुरु गिरी की चाह नचावै हरि से विमुख बनाए
बन बैठे भगवान बीच में अपना ठाठ रचाए
साँपन जिमि कुंडल को बाँधे निज बच्चन को खावे
कल्कि नाम गहि या कुंडल से कढ़े सो दर्शन पावें
शुक्राचार्य गुरु बलि के वामनहि देखि कुढ़ियाने
बलि ने सुनी न एकौ उनकी हरि ने कर दिए काने
कल्कि नाम द्रोही गुरु पंडित द्रोही कलियुगी संता
खुली बगावत लख धरती पर आए हैं भगवंता
कल्कि-कल्कि-कल्कि जपना कल्कि-कल्कि रटना
धोखा मत खइयो मेरे प्यारे कल्कि विमुख नहीं अपना
कल्कि प्रेम मैं बाधक के सिर लात धरो मेरे भाई
युगांतकारी कल्कि की भक्ति ही है चतुराई
कल्कि जी कलि कुल वन हंता त्राता हैं त्रिभुवन के
भुवनेश्वर प्राणेश दुरित हर्ता अपने भक्तन के
ब्रह्मादिक सुर शीश नवावै हनुमत शंकर ध्यावै
नारदादि सनकादिक निश दिन लोकपाल यश गावैं
विष्णु द्रोहकारी पथ जितने सब कलियुग संग जैहै
भक्तवास प्रभु निष्कलंक और धर्म सनातन रहिहै
कल्कि मंडल बहुत दिनों से तुम्हें रहा चेताई
जिनके हो सोइ आय रहे हैं जागो मेरे भाई

34. भई प्रकट हुए कल्कि भगवान

भई प्रकट हुए कल्कि भगवान
बालमुकुन्द जी को दिया था ज्ञान

भई सपने में आकर दर्शन दिया, अपने आने का वायदा किया
भई बालमुकुन्द जी ने पकड़ी गदा, कल्कि अवतार की लगाई सदा
भई कल्कि के हेत तपस्या करी, कल्कि मंडल की नींव धरी

भई कल्कि का झंडा दिया था गाड़, पापों की बस्ती होगी उजाड़
भई गली-गली में किया ऐलान, आवेंगे कल्कि भगवान
भई कल्कि नाम का यश फैलाया, नसीब वालों के मन को भाया
भई रटा जिन्होंने कल्कि नाम, मिल गया उनको सुंदर श्याम
भई कल्कि नाम ने आँखें खोलीं, घटों में प्रभू की प्रतिमा बोली
जो मनों की घुंडी खोलते गए, वह कल्कि की जय बोलते गए
भई हुए प्रफुल्लित और निहाल, जब दिक्खे दुष्टों के काल
भई धन्य है कूचा पाती राम, जहाँ पे उपजा कल्कि नाम

35. भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार

भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार, हाथ में जिनके है तलवार
भई जिनका जिस्म जगमगा रहा, उसने लखा जो लगा रहा
मुख पे करोड़ों हैं बलिहार, चंदा सूरज की चमकार
भई खड़ग की आभा दमक रही, मानो बिजली चमक रही
मुख मंडल की ऐसी आब, मानो छूट रही महताब
कंठ में जिनके झूलें हार, कमर में जिनके फेट कटार
पीले दुपट्टे ने भरी उड़ान, चाल में घोड़ा है तूफ़ान
कानों में कुंडल दे रहे बहार, मस्तक मलयागिरि महकार
सब अंगों में है सुनहरा साज, धरा है सिर पर जड़ाऊ ताज
वस्त्रों में हो रहा काम खरा, अंग-अंग में तेज भरा
जवाहारात कर रहे प्रकाश, सब भक्तों की पूजी आश
संतों तुम कर लो सम्मान, झुकेगा एक दिन सभी जहान
कल्कि नाम ने किया सवेरा, दूर किया कलियुग का अँधेरा
कल्याणकारी कल्कि का ध्यान, जीते जी दे पद निर्वाण

36. श्री कल्कि नाम का प्रताप

रट लो भाइयो कल्कि नाम, इससे बनेंगे बिगड़े काम
भई रटा गया जब कल्कि नाम, बिगड़े बनने लग गए काम
चढ़ी मुसीबत भाग उठी, हिंद की किस्मत जाग उठी
गिरा सितारा चढ़ने लगा, दिन दूना बल बढ़ने लगा
असुरों पर ऐसी मार पड़ी, मुल्कों में हाहाकार पड़ी
जल्लाद बगलें झाँकने लगे, उलटी भीख-सी माँगने लगे
ये देखो कल्कि के खेल, असुर आग में दिए धकेल
फँदे हिंद के टूटने लगे, दुष्टों के सिर फूटने लगे
घातक मन मन ऐंठ रहे, जबरान बताशे से बैठ रहे
कल्कि नाम से माया फिरी, असुरों की सारी शक्ति घिरी
कल्कि नाम का प्रबल प्रताप, हमें संभाल रहे हरि आप

37. बब्रावाहन टेसू आए

बब्रावाहन टेसू आए, कृष्णचंद्र के मन भाए
महाभारत के बीच मैदान, करतब की दिखलाई शान
देखे जब टेसू बलवान, बोले मुख से श्री भगवान
शीश दान हमको दे दीजे, क्षत्री धर्म का यश रख लीजे
केशव जी का रखा मान, शीश काटकर कर दिया दान
कृष्णचंद्र का वचन निभाया, विराट रूप का दर्शन पाया
माया के परदे चाक किए, कृष्ण-ही-कृष्ण सुझाई दिए
टेसू को मिल गई ज्ञान की आँख, जगत में उनकी जम गई साख

38. जनम कल्कि के हेत भयो

जनम कल्कि के हेत भयो
अंधकार में लख प्रकाश को जीवन भयो नयो।

कलि की माया काँपी वाको सटको कटक अपार।
कल्कि नाम ने दहन कर दई लंका-सी दई जार।
कटक माया को कटत गयो॥ जनम···
अंधकार के बादल फाटे आशा ने गहयो हाथ।
दुनिया वाले अलग हट गए अपनन ने दियो साथ।
नाम कल्कि को खड़ग गहयो॥ जनम···
निष्कलंक की माया ने सब माया कीनी ग्रास।
फँद कटे कड़ियाँ-सी चटकी दुष्टन को भई त्रास।
तेज अकलंकी प्रकट भयो॥ जनम···
थाना पद्मापति ने कीनों अंतष्करण हमार।
वा थाना में बैठे प्रभु ने दे दीने दीदार।
समंदर दया को उमड़ गयो॥ जनम···
भूमि भार उतारन के हित उद्यत हैं करतार।
खबरें उनकी प्यारी-प्यारी आई बेशुमार।
नाम ने प्रेम उजाल दियो॥ जनम···
नाम सुमर के नाता जोड़ो होय शक्ति संचार।
अब भारत के फँद कटेंगे होगा बेड़ा पार।
नाम कल्कि है जाग गयो॥ जनम···
पराधीनता मिटै हिंद की भक्ति के परताप।
दीनानाथ पियारे कल्कि हमें सँभारे आप।
जिनन को है परताप बड़ो॥ जनम···
नाम की महिमा प्रगटी मन से संशय दूर भयो।
रोम-रोम में अब तो प्यारो कल्कि छाय रहयो॥ जनम···

कल्कि नाम अमोघ हो रहा जिन ढूँढ़ा उन जाना।
प्रगट करें मिल-जुल कल्कि को अब ये ही प्रण ठाना।
प्रेम ने बाना बदल दियो॥ जनम

39. मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई

मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई,
म्लेच्छ वंश ध्वंश हेत अवतरो है जोई।
प्राणाधार प्राणपाल अनुभव दे माला माल,
कर दीनो अति निहाल ऐसो को सगोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
भक्ति बेल हरी करी प्रीति की रीति भरी,
हिय की सब पीर हरी हाथ को गहोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
चंद्र सम मुखारविंद चलत मत्त जिमि गयंद,
आदि पुरुष श्री गोविंद माया पति सोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
घुड़सवार खड़गधारि कमल नयन कृपाकारि,
पद्मापति श्री मुरारि धरा पंक धोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
कंठ झूलें फूल हार मोतियन मुकुट शृंगार,
चंदन द्युति चंद्रसार येही मन हरन हार।
ये ही है करणधार पार करे गोई॥
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
असुरन को कालरूप सुषमा सागर अनूप,
भारत भवि तव्य भूप (भू मंडल भुवन भूप) निरखि सुगति होई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
कल्कि नाम तेजो राशि घट में कीनो प्रकाश,
शीघ्र दई कुमति नाश गुहा में बसोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....
ठाढ़ो अहसान मंद कल्कि मंडल स्वछंद,
काटे हैं द्वन्द फंद शंका सब खोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल.....

40. जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो

जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो, उस भूमि को लाख प्रणाम।

वह संभल वह क्षीर समंदर, करें उजाला बाहर अंदर
करदे घट को कल्कि मंदर, उस भूमि को लाख प्रणाम।
जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो.....

उदयाचल पहाड़ सम जो है, सतयुग भवन पाड़ सम जो है।
दुष्टन दहन भाड़ सम जो है, उस भूमि को लाख प्रणाम॥
जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो

संत सरोज खिलावन हारी, दंभी दिल दहलावन हारी।
श्री कल्कि से मिलावन हारी, उस भूमि को लाख प्रणाम।
जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो.....

इसकी धूरि हम सिर पर धारें, अपने मन का मैल उतारें।
कल्कि नाम रट संशय टारें, उस भूमि को लाख प्रणाम॥
जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो.....

दश दिश ब्रह्म विभव बरसावें, कल्कि की लीला दरसावैं।
जो ध्यावै सो निश्चय पावैं उस भूमि को लाख प्रणाम॥

41. विरही कह दो चाहे आनंदी

विरही कह दो चाहे आनंदी दोनों ही अर्थ लग जाते हैं।
आनंद विरह का संगम है, जब घट में आप समाते हैं,

अब क्यों हमको तरसाते हैं, क्यों नहीं सामने आते हैं।
यह बीत रहे सूने बसंत, यह जी में जलन लगाते हैं।

हम आँखें फाड़ निहार रहे, नहीं चैन कहीं भी पाते हैं।
हम ही एक खाली बैठे हैं, सब जने बसंत मनाते हैं।

प्यारे कल्कि तुम बिन बसंत, यह हमको नहीं सुहाते हैं।
दुनिया दिखाव के यह उत्सव, कब तलक मनाए जाते हैं।

प्यारे कल्कि-प्यारे कल्कि, तुम बिन हम अधिक लजाते हैं।
मनता है तभी बसंत प्रभो, जब आप सामने आते हैं।

आओ, बसंत स्वागत कर दें, कल्कि के संग कब आओगे।
हम दुखिया दर्द लिए बैठे, कह दो कल्कि जी आते हैं।

42 .कलियुगिया तौक कटा करके

कलियुगिया तौक कटा करके, छल फंद को मन से मिटा करके।
दुख द्वन्द का परदा हटा करके,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
श्री राम ही कल्कि कहावेंगे, कल्कि नाम में कृष्ण समावेंगे।
कल्कि नाम से कल्कि जी आवेंगे,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
ऊँची धर्म ध्वजा फहरावेंगें, भक्ति का मान बढ़ावेंगे।
वह खलन की खाल कढ़ावेंगे।
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
कलियुग की छाया ढलक गई, कल्कि की माया झलक गई,
अमृत भरी काया छलक गई,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
गुरु बालमुकुन्द दहाड़े हैं, कल्कि के झंडे गाड़े हैं।
सुर पुर में बाजे नगाड़े हैं,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।

43 .प्रगटो-प्रगटो, प्रगटो-प्रगटो

प्रगटो-प्रगटो, प्रगटो-प्रगटो,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।
अधरम का अँधेरा दूर करो, सतयुग जग में भर पूर करो।
प्रकटो तब धीर बँधे मन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।
सुख सागर अब बँध तोड़ धरो, दुख द्वन्द का कंठ मरोड़ धरो।
आनंद को भर दो भक्तन में,

कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।
जो प्रकाश करो प्रभु जी अपना, कलियुग की माया हो सपना।
हम मस्त बनें कल्कि नाम धन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।
कहीं कृष्ण बने कहीं राम बने, अबके कल्कि सुखधाम बने।
ध्वनि गूँज रही है लोकन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।
गुरु बालमुकुन्द के कानन में, तुम गूँज रहे हो प्राणन में।
तन में मन के बसे प्रांगन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

44. आ गए आ गए आ गए 29 Nov

आ गए आ गए आ गए आ गए,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
कलियुग का कलेजा फटन लगा, घनघोर अँधेरा हटन लगा।
सूझन लगे साफ़ सफ़ा मन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
रसना जब कल्कि रटन लगी, शंका काई सी छटन लगी।
बस बसन लगे मन में तन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
अनुभव से मिला उजाला है, वह समय अब आने वाला है।
जब आग लगावेंगे दुष्टन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
लीला पर लीला होवेगी, इस जग के मल को धोवेगी।
हैं टिके हुए अपने प्रण में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
गुरु बालमुकुन्द का दिल भर गए, माया के मान तभी मर गए।
आवन का वायदा जब कर गए,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
भक्ति वर्षा बन हरि आए, संतन मन सागर भरि आए।

मौजे बन अंदर लहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
आनंद समुद्र हिलौरेंगे, अमृत के रस में बोरेंगे।
कर नज़र से अपनी मेहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
आशा ज्योति बन आई है, सतगुरु ने स्वयं जगाई है।
जिन घट के भीतर ठहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

45. कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई

कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई,
उर अंतर जब कल्कि नाम की
प्रज्वलित ज्योति भई॥
कमल नयन कलि कुल हंता की, सूझी झलक नई॥
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥१॥

शत्रु समूह संहारन स्वामी, मूरति तब छवि मई।
अधम उधारन नहीं सूझत कोई, संगी साथी सही।
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥२॥

धर्म धाम या भरत खंड के, अधिपति जग विजयी।
शरणागत वत्सल प्रभु तुम बिन, सूनी लगत मही।
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥३॥

वज्र प्रहार नाम कल्कि ते, कलि की अवधि दही।
सुर मुनि संत समुझि मुस्काने, माया विगत भई।
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥४॥

विकट विशाल अश्व आरोही के, खड़ग की दमक छई।
फट गए घन निराश के कारे, (बादल फटे निराश के कारे)।
(विदरे घन निराश के कारे,) जय-जयकार भई।
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥५॥

महिमंडल भुजदंड तिहारे की, महिमा मुदित मई ॥
भक्त भूमि भूसुर सुरभिन में, आशा उदित भई ॥
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥ ६ ॥

बालमुकुन्द गुरु आश लगाई। आशिष सहर्ष दई।
करत करत तव चरण वंदना, बिगड़ी बनत गई।
कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई ॥ ७ ॥

जो भजन हम कर रहे हैं उस भजन का फल हमें
पुनः भजन करने के लिए प्रेरित करता हैं।
इस प्रकार भजन से हमारे आध्यात्मिक संस्कार एवं
आत्मिक शक्ति की नीवं पाताल से भी नीचे तक
गहरी और मजबूत बन जाती हैं।

46. न ठुकराओ शरण में ही

न ठुकराओ शरण में ही हमें हे नाथ रहने दो
हमारे शीश पर अपनी कृपा का हाथ रहने दो
भजन का तार ना टूटे तुम्हारा द्वार ना छूटेसदा सम्बन्ध
नयनों का छवि के साथ रहने दो॥
सुबह या शाम दुख सुख में तुम्हारा नाम हो मुख में
निरन्तर नित्य चरनों में झुका यह माथ रहने दो॥
रहे मन में सदा बांकी तुम्हारे रूप की झांकी
जुड़ी दिन रैन कानों से गुणों की गाथ रहने दो॥

47. वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे

वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे
है कौन जो कि तुम बिन इस भार को उतारे
तुम चर-अचर जगत के करतार हो कहाते
जब-जब अधर्म बढ़ता अवतार लेके आते
इस बार कल्कि बन के क्यूँ ना असुर संहारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे॥ 1॥
है पाप छल कपट का छाया यहाँ अन्धेरा
भगवान कब करोगे तुम सत्य का सवेरा
हम आस ले के आये दरबार में तुम्हारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे॥ 2॥

48. आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि

आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि
अश्व चढ़े खड्ग ले विशाल कल्कि, महाकाल कल्कि
धर्म को विश्व ठुकरा रहा है, पाप बढ़ता चला जा रहा है
तुम होकर समर्थ, देखते हो अनर्थ,
कहो बनते नहीं क्यूं कराल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि॥ १॥

शस्त्रों में समाओ समय के बरसो मेघ बनके प्रलय के
करो रण में प्रवेश, धरो वर वीर वेष
क्रोध कम्पित अधर नयन ज्वाल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि॥२॥

रक्त से जब धरा लिप्त होगी महा काली तभी तृप्त होगी
भार होगा न शेष, मोद भर के महेश
पुनः पहनेंगे नर मुण्ड माल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि॥३॥

49. श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ

श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ कल्कि रूप में
बल दाऊ जी के भैया आ जाओ कल्कि रूप में

नैन बड़े बेचैन रहें दिन रैन दरश के प्यासे
नीरस जीवन तुम बिन भगवन ऊबा मन दुनिया से
दुख हर लो और सुख बरसाओ कल्कि रूप में॥ 1॥

अश्व सवारी खड्ग हाथ गुरु बालमुकुन्द जी संग में
कुंडल क्रीट दमकते जग मग, आभूषण अंग-अंग में
सज के संत सुजन मन हर्षाओ कल्कि रूप में॥ 2॥

50. दो मुझे वरदान माँ

कल्कि प्रिय पद्मा रमा दो मुझे वरदान माँ
जागते सोते कहूँ कल्कि भगवते नमः

तुम त्रिदेवो के स्वामी अन्तर्यामी की हो शक्ति,
कामना है यह मेरी तुम से पाऊँ निर्मल भक्ति,
भाव मय होके कहूँ कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा..... ॥ 1॥

विप्र पद पूजा सेवा सत्कर्मो से मुख ना मोड़ूं
कभी कर्त्तव्य विमुख होके अपना धर्म ना छोड़ूं

ध्यान मय होके कहूं कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा.............. ॥ 2 ॥

51. सागर में नैया डग-मग डोले

सागर में नैया डग-मग डोले
पड़ के भंवर बीच खाए झकोले
मँझधार में कोई चारा नहीं है
आँखों के आगे किनारा नहीं है
ऐसे में जीवन सहारा टटोले
सागर में नैया डग-मग डोले ॥ 1 ॥
हे कृष्ण केशव कन्हैया कहाँ हो
मेरी नैया के खिवैया कहाँ हो
बोलूँ न मैं आत्मा मेरी बोले
सागर में नैया डग-मग डोले ॥ 2 ॥

52. मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए

मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए
मुझे भक्ति भाव में छोड़ दो
मेरी आस मेरी लगन के संग
श्री कल्कि नाम को जोड़ दो
रहे मेरी आँखों में रूप वह
जिसे शिव समाधि में धारते
पड़े मेरे कानों में हरि कथा
जिसे व्यास आदि उचारते
रटे मेरी रसना तुम्हें सदा
मेरे मन को विषयों से मोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए ॥ 1 ॥
मेरे रोम-रोम में तुम रमो

तो यह देह मेरी पुनीत हो
मेरे स्वामी मात-पिता हो तुम
तुम्हीं बन्धु हो मेरे मीत हो
मेरे तुम से नाते बने रहें
चाहे नाते दुनियाँ से तोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए ॥ 2 ॥

53. हमें दर्शन दिखा देना

हमें दर्शन दिखा देना हमें अपना बना लेना
हमारे देश को भगवन तबाही से बचा लेना
कहा था आपने गर जो पड़े दुख तो बुला लेना
चले आओ दुखी दिल चाहते हैं आसरा लेना
हमें दर्शन दिखा देना''' ॥ 1 ॥
तुम्हारी ओर आँखें हैं न हम से मुँह छिपा लेना
हमें अपना समझ कर नाथ सीने से लगा लेना
हमें दर्शन दिखा देना हमें''' ॥ 2 ॥

54. मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु

मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु सुख और सहारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी दर्श दो हे कल्कि प्यारे
निराशा में बनो आशा, अंधेरे में उजाले
बनो उन निर्बलों के बल जो कहलाएँ तुम्हारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी, दर्श दो हे कल्कि प्यारे ॥1 ॥
विनीतों की व्यथा में तुम अनेकों बार आए
रमापति आज भी आकर करो ये बेड़ा किनारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी, दर्श दो हे कल्कि प्यारे ॥ 2 ॥

55. भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार

भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार भार हरते
दानव दुष्टों का करके संहार भार हरते
राघव राम बन आए, माधव कृष्ण कहलाए
महिमा वेद भी गाए, तुम्हारा पार ना पाए
तुम हो जग के करतार भार हरते
भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार‥॥ 1॥
अपने दीन भक्तों से अब क्यूं दूर हो भगवान
जो हैं रात दिन करते तुम्हारे नाम का सुमरन
जिन की सुन कर पुकार भार हरते
भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार ॥ 2 ॥

56. अब तुम से लगी है आस

अब तुम से लगी है आस
करो प्रभु नाश दुष्ट दल सारा
हम को है गर्व तुम्हारा
जो शरण तुम्हारी आते हैं
वह अमिट सदा सुख पाते हैं
मिल जाता है सब कष्टों से छुटकारा
हमको है गर्व तुम्हारा ॥ 1॥
भरमार यहाँ पापों की है
और बुरी दशा गौओं की है
क्यूँ ना हे स्वामी तुमने इन्हें निहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 2॥
चुप क्यूँ हो खड्ग उठाओ ना
वह अपने वचन निभाओ ना
जिन शब्दों का अर्जुन ने लिया सहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 3॥
आँखों में ऐसे छाए हो
और मन को ऐसे भाए हो

जैसे चकोर को चाँद लगे है प्यारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 4॥

57. था अजामिल एक पापी

था अजामिल एक पापी जिस पे तुमने की दया
नाम नारायण लिया था पार बेड़ा हो गया
नाथ हम भी आज आए हैं तुम्हारे द्वार पर
दीन हैं दुख दूर कर दो दास अपना जान कर
भक्ति से भरपूर भगवन दो हमें जीवन नया

58. राह काँटों से भरी

राह काँटों से भरी, सामने आओ हरी, मैंने भी विनती करी
तुम दयालु हो बड़े पाँव पत्थर पर पड़े
नारि गौतम की तरी मैंने भी विनती करी
भक्त ने तुम को रटा जोर से खम्बा फटा
तुम बने नरकेसरी मैंने भी विनती करी
मान भिलनी को दिया की जटायु की क्रिया
ऋषियों की विपदा हरी मैंने भी विनती करी

59. बेसहारों के सहारे हो कहाँ

बे-सहारों के सहारे हो कहाँ
कल्कि भगवान हमारे हो कहाँ
नैया मझधार में है डोल रही
गहरे सागर के किनारे हो कहाँ.....कल्कि भगवान"॥ 1॥
चले आओ ना प्रभु देर करो
कोई लाचार पुकारे हो कहाँ.....कल्कि भगवान"॥ 2॥
यह तुम्हें ढूँढ रही हैं आँखें

बोलो हे नन्द दुलारे हो कहाँ.....कल्कि भगवान"॥ 3॥
देखलो आके दुखी मन की दशा
सोई किस्मत के सितारे हो कहाँ.....कल्कि भगवान"॥ 4॥

59 (क).पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ

पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
बह चला बेड़ा विपद की बाढ़ में
शोक सागर के किनारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे..... ॥ १ ॥
बे सहारों को सहारा चाहिए
बे सहारों के सहारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
हम तुम्हारे है दुखी है दीन है
दीन दुखियों को बिसारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे..... ॥ २ ॥
नैन है बेचैन दर्शन के लिए
सामने आओ हमारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
चाकरी की कामना मन में लिए
हम खड़े दर पर तुम्हारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे..... ॥ ३ ॥

60. प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा

प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा
विरोधी विश्व पर छाना पड़ेगा
अधर्मी आततई बढ़ गए हैं

उन्हें यमलोक पहुँचाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा..... ॥ १ ॥
जो तुमने देर आने में लगाई
हमें निरुपाय हो जाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगों..... ॥ २ ॥
उठा लो हाथ में अब उस खड्ग को
जिसे दुष्टों से टकराना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगों..... ॥ ३ ॥
तुम्हारा देश यह दुख पा रहा है
यहाँ सुख चैन बरसाना पड़ेगा
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा..... ॥ ४ ॥

61. आओ कल्कि तलवार ताने

आओ कल्कि तलवार ताने
गौवों भक्तों की सुध पाने
धर्म वह तुम को था जो प्यारा
ना जाने किस और सिधारा
शास्त्र की आज्ञा कोई न माने
आओ कल्कि..... ॥ 1 ॥
जी बैठा जाता है तुम बिन
ऐसे आए हैं अब दुर्दिन
बाढ़ लगी है खेत को खाने
आओ कल्कि..... ॥ 2 ॥
चमके जैसे सूर्य गगन में
चमको वैसे अब तुम रण में
आपके बल को दुनिया जाने
पाप के फल को दुनिया जाने
आओ कल्कि..... ॥ 3 ॥

62. स्वासों के संग में उठती उमंग में

स्वासों के संग में उठती उमंग में
छाओ समाओ मुरार हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार

बाँके बिहारी मैं झाँकी तुम्हारी, निहारूँ हृदय में उतार
बन के पुजारी मैं सेवा में सारी, दूँ जीवन की घड़ियाँ गुजार
तोड़ो न आशा के तार, हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार ॥1 ॥

सिर पे मुकुट लम्बी अलकों की लट, वैजयन्ती गले में हो माल
माथे तिलक मोहनी हो झलक, मद भरे नैन धीमी हो चाल
पलकों में छलका हो प्यार, हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार ॥2 ॥

63. बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ

बिगड़े हुए जिस के हों दोनों जहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
जिसका है ठिकाना यहाँ न वहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
भगवान भटकते राही को
अपने चरनों में जगह दे दो
है कहीं न कोई जिसका मकां
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों... ॥ १ ॥
तुम सारे जग के दाता हो
मैं भिखारी बन के आया हूँ
झोली रही खाली जिसकी यहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों... ॥ २ ॥

64. हे काल रूप कल्कि प्यारे

हे काल रूप कल्कि प्यारे हाथ में दुधारा धारे
पाप का विनाश कीजिये समय आ गया

प्रतिपल हो रही धर्म की हानि, अधम करें मनमानी
ऋषि मुनि योगी ज्ञानी साधु तपस्वी दानी
रह गये बन के कहानी
सत्य का प्रकाश कीजिये समय आ गया ॥ १ ॥

आए हैं तुम्हारे द्वारे विपदा के मारे हुए
कहाँ हो बताओ स्वामी हमको बिसारे हुए
सब विधि हारे हुए और बेसहारे हुए
हे नाथ हम तो तुम्हारे हुए
हमें ना निराश कीजिये समय आ गया ॥ २ ॥

65. क्या दीन दुखी भक्तों को

क्या दीन दुखी भक्तों को
मोहन भूल गये।
टेरा ध्रुव ने और मीरा ने
आए कष्ट मिटाने।
हमरी बारी को तुम प्रभुजी
जी क्यों लगे चुराने ॥ १ ॥
मन में आशा नयन हैं प्यासे
देखें मूर्ति सुहानी।
कल्कि मंडल कहें प्रभु सुन लो
हो रही धर्म की हानि ॥ २ ॥

66. हे कल्कि भगवान तुम्हें अब

हे कल्कि भगवान तुम्हें अब
भारत में आ जाना चाहिए
केवल हिन्दू धर्म छोड़कर
सबका ढोंग मिटाना चाहिए
हुआ पृथ्वी तल पर अन्याय
करोड़ों काटी गई हैं गाय
राजा बन गए चोर लुटेरे
सूली उन्हें चढ़ाना चाहिए
शासन स्वयं करो पृथ्वी तल
को फिर स्वर्ग बनाना चाहिए।
हे कल्कि भगवान..... ॥ १ ॥
जहाँ से जग लेता था ज्ञान
हो रहा उसका ही अपमान
भारत माता को बन्धन से
स्वामी मुक्त कराना चाहिए
पतित हुई हिन्दू जाति को
वैभव पर पहुँचाना चाहिए
हे कल्कि भगवान..... ॥ २ ॥
मची है कैसी आपा धापी
करें मनमानी निश्चर पापी
दानवता का दलन करो प्रभु
अब तो खड़ग चलाना चाहिए
अर्बी तुर्की यवन म्लेच्छ का
धड़ से शीश उड़ाना चाहिए
हे कल्कि भगवान..... ॥ ३ ॥
धरणी पर राज्य अखंड बनाओ
सत युग का दरबार लगाओ
राजसूय यज्ञों की रचना कर
सम्राट कहाना चाहिए
सारे जग में सत्य सनातन धर्म

का ध्वज लहराना चाहिए
हे कल्कि भगवान..... ॥ ४॥
कृपा कल्कि मंडल पर करो
कष्ट अपने भक्तों के हरो
पाञ्चजन्य का तुमुल घोष कर
अब घोड़ा दौड़ाना चाहिए
दलित दीन दुखिया भक्तों को
आकर हृदय लगाना चाहिए
हे कल्कि भगवान..... ॥ ५॥

67. आये नहीं अब तक हुए

आये नहीं अब तक हुए वायदे सभी झूठे
तुम हमसे रमा नाथ हो किस बात पे रूठे

नरसी का भरा भात मगर बात न टाली
साँवलिया बने सेठ कलम तुमने सँभाली
लिख डाले थे परवाने लगाये थे अँगूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥ 1॥

भिलनी ने भरे टोकरे बेरों के जो खोले
भैया का समझ भाव प्रभु प्रेम से बोले
झूठे नहीं यह बेर हैं अनमोल अनूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥ 2॥

सुग्रीव विभीषण को दिए राज तुम्हीं ने
लाचार की रखी सदा ही लाज तुम्हीं ने
आशाओं के तरु सूख के रह जाए न ठूंठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥ 3॥

68. कल्कि स्वामी आओ

कल्कि स्वामी आओ
तुम्हारे वियोग में हम दुख पाए
इसका करो विचार,
मूर्ति तुम्हारी लगती प्यारी,
जो है बसी निगाहों में
अब तो प्रभु प्रकट हो जाओ,
यह ही पुकार आहों में
खड्ग लिये कर में चढ़ घोड़े,
ना रहो हमसे मुख मोड़े
धर्म की डोर सँभालो आकर,
तुम स्वयं इस बार,
कल्कि स्वामी आओ..... ॥ 1 ॥
दूर हो तुम जितने सन्मुख से,
उतने ही हम दूर हैं सुख से
देखे हम दरबार तुम्हारा,
जिसके लिए मन विकल हमारा
कल्कि मंडल चिंतक के चित
बसे तुम्हीं साकार,
कल्कि स्वामी आओ..... ॥ 2 ॥

69. करो हमारा ख्याल कल्कि जी

कल्कि जी करो हमारा ख्याल
आओ प्रभु इस भव सागर से, लो तुम हमें निकाल
इस सागर की लहर-लहर में, आये बहुत उछाल
डोले नैया नहीं खिवैया, बहुत हुए बेहाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल..... ॥ 1 ॥

किसको सुनायें अपना दुख हम, जीना है जंजाल
तुम बिन प्रभु गुजरता जाता, एक पल बन कर साल

खड्ग लिए घोड़े चढ़ जाओ, खुद ही करो सँभाल
दुख मिटाओ अपने भक्तों के, नजर महर की डाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल..... ॥ 2 ॥

70. असहाय हैं क्यों आज

असहाय हैं क्यूँ आज ये गोपाल की गाए
कोई तो इसे निर्दयी हाथों से छुड़ाए

जो जीवों को वैतरणी के उस पार उतारे
अपने ही लिये ढूँढ़ रही है वह सहारे
दुखिया पे दया आज किसी को भी न आए
कोई तो इसे..... ॥ 1 ॥
यह कैसा समय आया है कैसी घड़ी आई
प्रभु आपके प्यारों ने मुसीबत बड़ी पाई
कलि काल ने कैसे यह कठिन दिन हैं दिखाये
कोई तो इसे..... ॥ 2 ॥
भगवान बड़े आप दयालु हो कहाते
यह बात अगर सच है तो फिर क्यूँ नहीं आते
हम राह में कब से हैं खड़े नैन बिछाये
कोई तो इसे..... ॥ 3 ॥
हे कल्कि रमा नाथ हे पद्मा जी के प्यारे
उतरेगा नहीं भार बिना आये तुम्हारे
आ जाइये घोड़े पे चढ़े खड्ग उठाये
कोई तो इसे..... ॥ 4 ॥

71. हमें अब दुख से उबारो हरि

हमें अब दुख से उबारो हरि
नटवर नागरिया गिरधर सांवरिया
घोड़े चढ़के खड्ग उठाके
कल्कि पद्मा नाथ कहा के आओ दर्शन दो नूतन जीवन दो

सुनके वाणी विनय से भरी, हमें अब दुख से... ॥ 1 ॥
फैली जग में आसुरी माया जीवों ने जप-तप बिसराया
तामस सृष्टि है वायस दृष्टि है
आने में क्यूँ देरी करी, हमें अब दुख से... ॥ 2 ॥

72. भूमि का उतारो भार नाथ

भूमि का उतारो भार नाथ पृथ्वी का उतारो भार
सुर नर मुनि प्राणाधार नाथ भूमि का उतारो भार
हे कृष्ण प्रभु मन हरण श्याम, दशरथ नन्दन अवतार राम
कल्कि स्वरूप को नित प्रणाम,
करते हैं बारम्बार.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 1 ॥

कर खड्ग अश्व पर हो सवार, सुन्दर स्वरूप कल्कि मुरार
तुम किया हृदय में चमत्कार, मन फूल रहा कर दरश तुम्हारे
अंग-अंग का श्रृंगार.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 2 ॥

तुम कष्ट निवारण हारे हो, तुम गौ विप्रन के प्यारे हो
तुम ही आधार हमारे हो, जगमगा रहा तुमरे प्रताप से
यह सारा संसार.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 3 ॥

जब-जब भक्तों ने टेर करी, आये समीप नहीं देरी करी
दुष्टों को मार कर ढेरी करी, गौ भक्तों का दुख हरा रहे
फिर निष्कलंक अवतार.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 4 ॥

हे दीनबन्धु निज जन जीवन अब करो सफल ले अपनी शरण
तुम से ही हमारी लगे लगन करो ऐसी कृपा हे प्रभु हम सब
देखें कल्कि दरबार,.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 5 ॥

कल्कि मंडल ने किया जाप, गुरु बाल मुकुन्द जी का है प्रताप
होकर के निडर यह दिया छाप आए कल्कि चरनन चिंतक बन
करलो जय जय कार.....नाथ भूमि का उतारो भार ॥ 6 ॥

73. भगवान तुम्हारी दुनिया में

भगवान तुम्हारी दुनिया में दुखिया का सहारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका निस्तारा कोई नहीं

तुम सब की सुनने वाले हो मेरी भी सुनो तो मैं जानूँ
कुछ तुम भी मुझ को पहचानो कुछ मैं भी तुमको पहचानूँ
पतवार बिना मझधार में इस किश्ती का किनारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका‥ ॥ 1 ॥

औरों की तरह अपने दर से तुम भी न मुझे लौटा देना
मैं आस लगा कर आया हूँ मुझे अपने दिल में जगह देना
इस अंधेरे में मेरी किस्मत का रोशन है सितारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका‥ ॥ 2 ॥

74. कौन कहता है घड़ा पाप का

कौन कहता है घड़ा पाप का भरपूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं
बड़े खूंखार है वह लिये तलवार हैं वह
महा भारत के लिए खड़े तैयार हैं वह
सच पूछो तो अमन उनको है मंजूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार..... ॥ 1 ॥

भक्त प्यारे हैं उन्हें धर्म प्यारा है उन्हें
भक्तों ने ही तो जमीं पे उतारा है उन्हें
देख सकते वो कभी भक्तों को मजबूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार..... ॥ 2 ॥

गाय के खून से जो बैठे हैं हाथ रंगे
तेग की नोंक पे वे एक दिन होंगे टंगे
बक्शना दुष्टों को दरबार का दस्तूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार..... ॥ 3 ॥

75. जब दुनिया पाप कर पृथ्वी

जब दुनिया पाप कर पृथ्वी पर भार बन गई।
संहार हित सुरशक्ति भी साकार बन गई॥
तब राम को ऋषियों ने पुकारा था बार-बार
जब पाप की बस्ती समन्दर पार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी···..... ॥ 1॥

संसार में भगवान की भक्ति ही सार है
यह भूल कर सारी जनता मक्कार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी····· ॥ 2॥

श्री कृष्ण कल्कि बन कर हुए घोड़े पर सवार
जो हाथ में थी बाँसुरी तलवार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी····· ॥ 3॥

संदेश कल्कि जी का लाए बालमुकुन्द जी
वह वाणी कल्कि मंडल का आधार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी····· ॥ 4॥

76. उठो भारत जगाया जा रहा है

उठो भारत जगाया जा रहा है
समा सत्युग का आया जा रहा है
न कहना फिर हमें मालूम नहीं था
इसी से अब बताया जा रहा है
समा सत्युग का आया····· ॥ 1॥
हुए जो पाप धरती पे करोड़ों
हिसाब उनका चुकाया जा रहा है
समा सत्युग का आया···..... ॥ 2॥
मचा घमसान कैसा है जहाँ में
कोई करता सफाया आ रहा है
समा सत्युग का आया····· ॥ 3॥

चढ़े हैं अश्व पर भगवान कल्कि
खड्ग का रौब छाया जा रहा है
समा सत्युग का आया``.......... ॥ 4 ॥

77. श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो

श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो
भीषण संहार का सितारा देखो
कितना कराल है कितना विशाल है
मुख महा काल ने पसारा देखो
मानों उठी दावानल ज्वाला
या है कोई सूर्य ही निराला
पुञ्ज प्रकाश का चिह्न विनाश का
शेष जी ने क्रोध से फुंकारा देखो
श्री कल्कि भगवान का`````````` ॥ 1 ॥

वज्र देवराज इन्द्र का है
यह त्रिशूल भाल चन्द्र का है
यम का यह दण्ड है प्रलयाग्नि खण्ड है
फूंकने को दानवी दल सारा देखो
श्री कल्कि भगवान का````````` ॥ 2 ॥

78. डोल उठी पापों से धरती

डोल उठी पापों से धरती ऐसा भार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ
गिरधारी की गौवों का वैरी संसार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ
वर्णाश्रम मिट गए रहे ना शुभ आचार-विचार
सत्य सरलता पर छाया छल-कपट भरा व्यवहार

पर पीड़क बन कर मानव को हर्ष अपार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि``॥ 1॥
किधर गया वह भाव भजन में अब अनुराग नहीं
यज्ञ हवन हरि कथा कीर्तन जप तप त्याग नहीं
तामस सृष्टि हुई कलियुग का जब विस्तार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि``॥ 2॥

79. लीला अवतार की निराली होगी

लीला अवतार की निराली होगी।
धरती यह पापियों से खाली होगी॥
सिंह सवार महा काली होगी
खून की प्यासी खप्पर वाली होगी
शिवजी की सेना मतवाली होगी
आँखों में आग जैसी लाली होगी
शक्ति निधान ने कल्कि भगवान ने
कर में तलवार जब संभाली होगी
लीला अवतार की························॥ 1॥
सत्य धर्म की हरियाली होगी
गौओं भक्तों की रखवाली होगी
धर्म के राज में मानव समाज में
चारों तरफ खुशहाली होगी
लीला अवतार की························॥ 2॥

80. नक्शा बदल देने को जमीं

नक्शा बदल देने को जमीं आसमान का
अब आया जा रहा है मालिक जहान का
खांडा पकड़ कर हाथ में घोड़े पर है सवार
कोई नहीं है जिनके बराबर की शान का

अब आया जा रहा है····.... ॥ 1 ॥
दुनियाँ की बादशाहतें मिट्टी में मिला कर
सिक्का जमाएगा वह भक्ति और ज्ञान का
अब आया जा रहा है····..... ॥ 2 ॥
पाला जिन्होंने जिस्म को गौओं के खून से
किस्सा मिटा देगा उनके नामो निशान का
अब आया जा रहा है······· ॥ 3 ॥

81 . कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के

कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के चल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥
जिस दम रमापति की आँखों में बल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥
नीचे उतर के सूरज लाखों गुना तपेगा।
और चाँद की नजर से शोले निकल पड़ेंगे॥
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 1 ॥
खूंखार होके काली खप्पर भरेगी अपना
खन्दक में मौत की जब दुष्टों के दल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 2 ॥
एक रूप की झलक पर एक तेग की चमक पर
है फर्क भक्त पापी दोनों फिसल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 3 ॥
वायदा किया उन्होंने गीता बता रही है
आऊँगा भक्त मेरे जब-जब निबल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 4 ॥
कल्कि जी आएंगे ही कुछ इसमें शक नहीं है
चलने को संग उनके शिव भी मचल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 5 ॥
गौओं के बैरियों पर जब बिजलियाँ गिरेंगी
सब देवता खुशी में भर कर उछल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··········· ॥ 6 ॥

बरबादियों में उनका होगा न बाल बाँका
भगवान की शरण में जो आज कल पड़ेंगे

82. खड्ग मुरली बनी श्री कल्कि बने

22 NOV

खड्ग मुरली बनी कल्कि बने बृजराज हैं आज
पाप से काँपती धरती की बने लाज हैं आज
अलकें घुंघराली घनी काली कमल सी आँखें
चित चुराती सी ये चितवन ये सरल सी आँखें
चढ़ के घोड़े पे समर में चले सरताज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि..... ॥ 1 ॥
चांद सा मुखड़ा मनोहर पीत पट की शोभा
और माथे पे तिलक सिर पे मुकुट की शोभा
सभी श्रृंगार के अंग-अंग में सजे साज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि..... ॥ 2 ॥

83. जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए

जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
मृत लोक में आए रुक न सके
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
सत्संग से और शुभ कर्मों से
पहुँचे थे ऊँचे लोकों में
जब भोगों से पुण्य समाप्त हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से..... ॥ 1 ॥
अब मिलता नहीं मिल जाए तो भी
सत्संग करना मुश्किल है
साधु जन पापों से पिछड़ गए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से..... ॥ 2 ॥

जब पाप से धर्म दबा देखा
तो कल्कि खड्ग लिए आए
सर दुष्टों के धड़ से अलग किये
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से…..... ॥ 3 ॥
भक्तों ने सुना आए कल्कि
सुनते ही दरश को दौड़ चले
चरनों की रज पाने के लिए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से…… ॥ 4 ॥

84. पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी

पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी पहुँची वैकुण्ठ धाम
श्रीनारायण की शरण में मिला उसे विश्राम

मुरझाया था उस का मुखड़ा, चैन बिना चित उखड़ा-उखड़ा
काया दुर्बल दीन दशा थी, किसे सुनाती अपना दुखड़ा
उसका तो आधार बना था संकट में हरि नाम
पाप के ताप से…… ॥ 1 ॥

संग में थे सुर नर मुनि ज्ञानी, प्रभु ने सब की सुनी कहानी
करुणानिधि की करुणा उमड़ी, भर आया आँखों में पानी
बोले मैं संहार करूँगा, हरूँगा भार तमाम
पाप के ताप से…… ॥ 2 ॥

लक्ष्मी पति ने प्रण निभाया, जो कहा वह कर दिखलाया
निज इच्छा से कल्कि बन कर, महाभारत का साज सजाया
दहल उठे दानव दल सन्मुख, जब देखा संग्राम
पाप के ताप से…… ॥ 3 ॥

देख के कल्कि जी की झांकी, सुन्दर चेहरा चितवन बांकी
मन ही मन सब सन्त सराहें, खोज करें कवि जन उपमा की
चिट्टे घोड़े पर चढ़े हरि, खड्ग हाथ में थाम
पाप के ताप से…..... ॥ 4 ॥

85. खड्ग उठा कर हाथ में

खड्ग उठाकर हाथ में जब नाथ आएंगे
गौ हिंसकों के खून की नदियाँ बहाएंगे
अवतारों में महान ये कल्कि अवतार हैं
घोड़े सवार भार भूमि का हटाएंगे

86. अपने भक्तों से हरि आज मिले

अपने भक्तों से हरि आज मिले आए के
कल्कि कहाए के खड्ग उठाए के

जब देवों ने देखा जग में कलियुग का विस्तार है
धर्म कर्म सब बन्द हुए और पापों की भरमार है
भोगों में रत भजन भाव से विमुख हुआ संसार है
लाखों गौएं कटतीं अबलाओं पर अत्याचार है
देवलोक को तजकर सारे तब ब्रह्मा के धाम सिधारे
विधि से सकल कही विपद सुनाए के
अपने भक्तों से हरि..... ॥ 1 ॥

बोले ब्रह्मा इन्द्रादिक से तब सब का उद्धार हो
जब धरती पर श्री गोलोक निवासी का अवतार हो
उनके द्वारा खल म्लेच्छों का सामूहिक संहार हो
यह सब तब हो जब जाकर श्रीहरि के द्वार पुकार हो
विधि सम्मति सबके मन भाई धरती गौ रूप धर धाई
टेर जो लगाई क्षीर सागर में जाय के
अपने भक्तों से हरि..... ॥ 2 ॥

श्री पति ने शोकाकुल सन्मुख देखा देव समाज को
बोले रक्खूँगा गौ ब्राह्मण सुर सन्तों की लाज को
कल्कि बन कर स्वयं संभालूँगा धरती के राज को
दुनिया भर के असुरों पर गेरूँगा गहरी गाज को
तुम सब जन्मों जग में जाकर कुछ दिन काटो कष्ट उठाकर
मम गुन गाओं कल्कि मंडल बनाय के
अपने भक्तों से हरि..... ॥ 3 ॥

भारत की इस पुण्य भूमि में देवों का आगमन हुआ
कल्कि नाम के उच्चारण से असुर दलों का दमन हुआ
देश हुआ स्वाधीन दीनता मिटी यहाँ जब भजन हुआ
क्षीण हुई कलियुग की आयु सत्य शक्ति का सृजन हुआ
बालमुकुन्द गुरु देव हमारे पवन पुत्र श्रीहरि के प्यारे
सुजन उभारे कल्कि नाम धुन गाय के अपने भक्तों से हरि आज मिलने आए

87. कलियुग में जब कि कल्कि बने

कलियुग में जब कि कल्कि बने कृष्ण मुरारी
तो बाँसुरी भी बन गई तलवार दुधारी
पोरी वह हरे बांस की हर दिल की दुलारी
तलवार ना बनती तो कहाँ जाती बेचारी

सोचा कहीं सरकार का संग छूट ना जाये
नाता जनम-जनम का कहीं टूट ना जाये
बैरी वियोग आके मुझे लूट ना जाये
मालिक मेरा नसीब कही फूट ना जाए
कहने लगी भगवान से दासी हूँ तुम्हारी
मुझको भी संग ले चलो कल्कि कृपाकारी
कलियुग में जबकि..... ॥ 1 ॥
हरदम रहूँगी मैं तुम्हारे दहने हाथ में
तर जाऊँगी कर जाऊँगी कुछ काम साथ में
इतना ही चाहती हूँ तुम से प्राणनाथ मैं
जिंदा रहूँगी किस तरह होकर अनाथ मैं
तुमसे न बिछड़ जाऊँ है चिंता मुझे भारी
मेरी भी लाज रख लो आज बांके बिहारी
कलियुग में जबकि..... ॥ 2 ॥
काटूँगी जालिमों के जिस्म तीर की तरह
बढ़ जाऊँगी मैं द्रोपदी के चीर की तरह
विक्रम दिखाऊँगी मैं महावीर की तरह
खूनी नदी बहाऊँगी मैं नीर की तरह

तुम ठाठ से करना, प्रभु घोड़े की सवारी
और देखते रहना मेरी जादूगरी सारी
कलियुग में जबकि..... ॥ 3 ॥
गौओं के बैरियों के लिए गाज बनूँगी
खूंखार परिन्दे हैं वे मैं बाज बनूँगी
संसार में हिन्दू धर्म की लाज बनूँगी
जो कुछ कहोगे नाथ वही आज बनूँगी
जब तुम बनोगे काल महाकाल खरारी
छा जाऊँगी दुनिया पे मैं बन के महामारी
कलियुग में जबकि..... ॥ 4 ॥
चारों तरफ गजब का घमासान मचेगा
सुमरन करेगा बस वही इन्सान बचेगा
दुनियाँ को नहीं पाप का सामान पचेगा
श्मशान भी भगवान आलीशान रचेगा
कलियुग खतम होने को है सतयुग की तैयारी
पत्थर के हरुफों में लिख लो बात हमारी
कलियुग में जबकि..... ॥ 5 ॥

88. आओ भक्तों महिमा गायें

आओ भक्तों महिमा गायें श्री कल्कि भगवान की
जिनके यश का वर्णन करती वाणी वेद पुराण की
वे अविनाशी सब घट वासी सृष्टि के आधार हैं
गौ ब्राह्मण सुर सन्तों के हित हो जाते साकार हैं
मर्यादा की रक्षा करते हरते भूमि भार हैं
निज इच्छा निर्मित तनुधारी माया गुण गो पार हैं
कोई वस्तु नहीं जगत में है उनके उपमान की
जिनके यश का वर्णन..... ॥ 1 ॥
ब्रह्मा जिनसे प्रेरित हो सृष्टि की रचना करते हैं
विष्णु पोषक बन कर जग जीवन को सुख से भरते हैं
शंकर बन विकराल काल के द्वारा सब कुछ हरते हैं

जिनके भय से शेष नाग धरती को सिर पर धरते हैं
उन्हीं प्रभु ने सूर्य चंद्र को उज्ज्वल ज्योति प्रदान की
जिनके यश का वर्णन..... ॥ 2 ॥
देखो है अस्तित्व उन्हीं का त्रिगुण मयी इस माया में
जल थल में विस्तृत नभ में जड़ चेतन जीव निकाया में
चौदह भुवन त्रिलोक सर्वदा रहते जिनकी छाया में
प्राण पुरुष हैं वही एक इस पंच तत्व की काया में
वही प्रलय का खेल वही लीला रचते निर्माण की
जिनके यश का वर्णन..... ॥ 3 ॥
तन मन धन से कर्म वचन से जो जन उनके दास हैं
उनमें उनकी सत्ता में रखते श्रद्धा विश्वास हैं
सुख में शील न खोते, होते दुख में नहीं उदास हैं
ऐसे सन्तों की सुधि लेने आए रमा निवास हैं
जय बोलो उन युग परिवर्तनकारी कृपानिधान की
जिनके यश का वर्णन..... ॥ 4 ॥

89. श्री कल्कि नाम मन भाया है

श्री कल्कि नाम मन भाया है
इस नाम में ऐसी शक्ति है जिसके हृदय में भक्ति है
दुनिया से करके पार उसे देकर अपना आधार उसे
वैकुण्ठ धाम पहुँचाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 1 ॥
अब भी है जन्म लिया जग में हरि बने सहायक पग-पग में
भूमि का भार हटाने को दुष्टों की खोज मिटाने को
निज कर में खड्ग उठाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 2 ॥
भक्तों के हैं भोले स्वरूप दुष्टों के है वे काल रूप
दुखियों के दुख हरने वाल मेरी नाव पार करने वाले
सोते से हमें जगाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 3 ॥

अब देर नहीं है आने में कल्कि के प्रगट हो जाने में
कल्कि मण्डल यश गाते हैं चरनों में शीश नवाते हैं
गुरु बालमुकुन्द बतलाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 4॥

90 .जो सुमरनी संभाल कर बैठे

जो सुमरनी संभाल कर बैठे दया उन पर दयाल कर बैठे

वो जो कहने लगे कल्कि-कल्कि, कट गई जड़ कपट और छल की
आत्मा को निहाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 1॥
जोड़ा नाता जिन्होंने भजन से कल्कि स्वामी के चरनों में मन से
मोह माया निकाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 2॥
उन्हें अनुभव में हमने देखा, मिटी मस्तक से दुर्भाग्य रेखा
अपना वैभव विशाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 3॥
तरे प्रहलाद ध्रुव बचपन में, जब श्रद्धा से मन के भवन में
दीया भक्ति का बाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 4॥

91 . श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन

श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन पर विराजे
सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे

नई उमंग से राग रंग में सबने मन रंग डाले
मची धूम त्रिभुवन में प्रगटे कल्कि संभल वाले
उदय हुआ सत्युग का आई पुण्य कर्म की बेला
चले नारि नर हरि दर्शन को पल में जुड़ गया मेला
आये उत्सव में ले लेकर भेटें राजे महाराजे

सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे॥ 1॥

शिव शंकर का डमरू बाजे नारद जी की वीणा
गणपत जी खरताल बजायें ढोल इंद्र ने छीना
बजे पखावज झाँझ घूंघरू ताली कल्कि नाम की
ऊँचे स्वर से सबने बोली आरती सुख धाम की
बजरंगबली ने करी गर्जना भक्तों के भय भागे
सब देवों के समाज ने बजाये मिल कर बाजे॥ 2॥

92. न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो

न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन को छोड़ो
बिताओ समय उनकी आराधना में
जिन्हें भक्त पाते हैं शुभ भावना में
बसाओ सदा उनको निज कामना में
न पूजा को छोड़ो न साधन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन··· ॥1॥
न भोगों से आत्मा को तृप्ति मिलेगी
तपस्या करोगे तो शक्ति मिलेगी
परम दिव्य शक्ति से भक्ति मिलेगी
न माला को छोड़ो न आसन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन··· ॥2॥

93. गाये जा निश दिन गुन गिरधर के

गाये जा निश दिन गुन गिरधर के
नटवर नागर श्याम सुन्दर के
वृन्दावन की रज मन भाई
जोगन बन गई मीराबाई

प्रीतम मिल गये प्रेम नगर के
गाये जा निश दिन गुन गिरधर के˙ ॥ 1 ॥
जिसके मन में भक्ति जागी
उसने जग की तृष्णा त्यागी
कुन्दन बन गये भाव निखर के
गाये जा निशदिन गुन गिरधर के˙˙ ॥ 2 ॥

94. जैसी करनी वैसी भरनी

जैसी करनी वैसी भरनी जो बोया सो पाना है
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है

इसी नियम से बँधा हुआ है देखो यह सारा संसार
यहाँ किसी की जीत न समझो और न किसी की समझो हार
जीता यम के द्वार गया हारे का हरि ठिकाना है
जैसी करनी वैसी भरनी˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙ ॥ 1 ॥
दुख सुख बनकर जनम-जनम के करम सामने आते हैं
धूप छाँव की तरह हमारे जीवन में छा जाते हैं
स्वयं हमें अपने कर्मों से अपना भाग्य बनाना है
जैसी करनी वैसी भरनी˙˙............. ॥ 2 ॥
यहाँ गुमान न करना धरती धाम रतन धन जीवन का
काया राख बनेगी यह धन काम करेगा ईंधन का
जो कुछ देख रहे हैं हम सब में परिवर्तन आना है
जैसी करनी वैसी भरनी˙˙............. ॥ 3 ॥
जग में कुछ करने से पहले भले बुरे का करो विचार
उसको ही अपनाओ जिसको अन्तःकरण करे स्वीकार
सन्तों के संग रहो जिन्होंने परम तत्व पहचाना है
जैसी करनी वैसी भरनी˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙˙ ॥ 4 ॥

95. श्वांस में सुमरन समा गया

श्वांस में सुमरन समा गया
जब नाम हरि का जपा गया
सब ऋषि मुनि और योगी जन
हरि नाम की धुन में हुए मगन
जब मन का अन्धेरा मिटता चला
साक्षात् हुए प्रभु के दर्शन
सुख उपजा दुख चला गया
जब नाम हरि का जपा गया

96. भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा

भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा
कल्कि का प्रिय दर्शन पायेगा
कल्कि तेरी विपत हरेंगे
डोलती नैया पार करेंगे
सुमरन में मन को लगा
भक्ति को ज्योति जगा‥॥ 1॥
कल्कि से तेरे पिछले नाते
आज भला क्यूं याद न आते
जाग जरा नींद भगा
भक्ति की ज्योति जगा‥॥ 2॥

97. कल्कि कल्कि कहते जाना

कल्कि कल्कि कहते जाना
चित्त उनके चरनों में लगाना
कल्कि कहोगे सुख से रहोगे
भजन बिना मन दुख ही सहोगे
नाम रतन धन खूब कमाना

दोनों लोक बनाना,
कल्कि कल्कि कहते जाना ··· ॥ 1 ॥
नवयुग के अवतार हैं कल्कि
आये हरने भार हैं कल्कि
दानवी जग होगा वीराना
तुम उनके मन भाना,
कल्कि कल्कि कहते जाना ··· ॥ 2 ॥

कल्कि जी कराल कलि काल में कृपाण धार
कोप कर काटेंगे करोड़ों ही कमीनों को
पल में सपाट कर देंगे सब हाट बाट
पाटेंगे जमीन में पुराने पाप पीनों को
दौलत के दीमकों को दम में दबाकर धर्म
दासन की आस कर देंगे दान दीनों को
इसीलिए मन से मनाओ निष्कलंक प्रभु
गाओ गुण ग्राम तो गवाओं ताप तीनों को

98. सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले

सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले
परमात्मा को पाले जीवन सफल बना ले
वे हैं अनादि ईश्वर उनका सदा भजन कर
विश्वास रख उन्हीं पर दिन रैन नित निरंतर
चरनों में चित्त लगाकर अब तो उन्हें रिझालें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल ··· ॥ 1 ॥
सत्संग साधना से सुख के सुमन खिलेंगे
भक्ति उपासना से राधा-कृष्ण मिलेंगे
श्री कल्कि नाम गाकर अब तो उन्हें बुला लें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल ··· ॥ 2 ॥

99. फिर फिर आये जनम नित पाये

फिर फिर आये जनम नित पाये तृष्णा तुझे नचाये जग में

कट न सके संसार के बन्धन
मोह माया मद मार के बन्धन
अब भी यतन कर भक्ति भजन कर
तोड़ दे तू अहंकार के बन्धन
बिन हरि गाये विपत नहीं जाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में··· ॥ 1 ॥

बालकपन खेलों में खोता
यौवन भोगों में लय होता
जब आती है वृद्धावस्था
मृत्यु का दर्शन कर रोता
पाप कमाये धर्म नहीं भाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में··· ॥ 2 ॥

100. श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन

श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन
काम कर लो भलाई के बुराई तजो रे मन
यह दुनियां ख्वाब है मालिक का खेल है
पल भर की मौज है पल भर का मेल है
हरी भरी सदा यहाँ धरम की बेल है
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे..... ॥ 1 ॥
पापों की राह में न जाना भूल के
मतवाले न बनो माया की धूल के
क्या लोगे मौत के झूले में झूल के
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे····· ॥ 2 ॥

101. मन भजन में रहो घर या वन में रहो

मन भजन में रहो घर या वन में रहो
मिली रसना कल्कि नाम गाने को है
सब रहेगा यहीं अपना कुछ भी नहीं
नाम ही अन्त में काम आने को है

नाम पावन भी है मन भावन भी है
तप्त जीवन में सुख रूप सावन भी है
नाम का जाप कर पाप कट जाएंगे
क्रूर कलियुग के पांसे पलट जाएंगे
विश्व करतार कल्कि कहाने को हैं
मन भजन में रहो...................................... ॥ 1 ॥

साँवरे से लगन जो लगाने लगे
यूं कहो भाग्य अपने जगाने लगे
बिन भजन मन की कलियाँ खिलेंगी नहीं
कृष्ण की कुँज गलियाँ मिलेंगी नहीं
आज कल में समय बीत जाने को है
मन भजन में रहो...................................... ॥ 2 ॥

102. तेरा जीवन बिरथा बीत गया

तेरा जीवन बिरथा बीत गया
संसार में सार बिसार दिया
शुभ कर्मों के विपरीत गया

माया ने मूरख तुझे छला
तू जग से खाली हाथ चला
पुण्यों की पूंजी खत्म हुई
है पाप जुए में जीत गया
तेरा जीवन बिरथा................. ॥1 ॥

जो प्यार प्रभु से कर लेता
तो वह दुख तेरे हर लेता

अब दु:ख का अवसर आने पर
सुख का सुन्दर संगीत गया
तेरा जीवन बिरथा..... ॥ 2 ॥

103 . एक राम है अपना सुन्दर श्याम है

एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना
एक राम है अपना श्याम है अपना हार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नहीं
श्री राम का होके कोई रहा.....
है तेरा कृष्ण कन्हैया तू छोड़ दे उस पे नैया
ना बेड़ा डूब सकेगा जब होगा राम खेवैया
कर प्यार उसी से और किसी से प्यार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नहीं
एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना
घट में उसको बैठा ले और जो चाहे सो पा ले
वो दाता जग निर्माता मुख से उसके गुण गाले
आधार वो सबका उसका कोई आधार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नहीं
एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना

104 . दुनियां से हटा ले मन अपना

दुनियां से हटा ले मन अपना
दुनियां से हटा ले मन अपना, मत देख उधर को फिर-फिर कर
मुश्किल अपनी आसान बना, भगवान के चरणों में गिर कर
दुनियां से हटा ले मन अपना .....
वह चींटी की भी आहट को, सुनते हैं तेरी भी सुन लेंगे
बन दीन पुजारी ठाकुर का और अपने मन को मंदिर कर
दुनियां से हटा ले मन अपना .....

तेरी करनी ही तेरे सुख, दुःख का कारण बन जाती है
न सुख में फूला-फूला फिर जी छोड़ न दुःख से तू घिर कर
दुनियां से हटा ले मन अपना ....

105. भज मन श्री कल्कि नारायण

भज मन श्री कल्कि नारायण।
बिखरेगी यह काया एक दिन पंछी उड़ जाएगा।
बेबस होकर मौत का कोड़ा जिस दम तू खाएगा॥
उस मौके पर कोई तेरे काम नहीं आएगा।
भज मन श्री कल्कि नारायण ॥ 1॥

टूटेगी जब श्वाँस सुमरनी करनी दोहराएगा।
कह न सकेगा कुछ आँखों में आँसू भर लाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण ॥ 2॥

क्या संग लाया था जब आया क्या संग ले जाएगा।
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण ॥ 3॥

लिखने वाला तो लिख देगा जो तू लिखवाएगा।
जैसी तेरी करनी होगी वैसा फल पाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण ॥ 4॥

106. मतवाले हरि गुन गा ल`

मतवाले हरि गुन गा ले जब टूटे श्वाँस सितार रे
तेरे काम न आए यह दुनियाँ

क्या संग लाया था जब आया क्या संग ले जाएगा
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा
तेरे घर वाले बाहर वाले सब सुख में साझीदार
तेरे काम न आए यह दुनियाँ``......... ॥ 1॥

जग में शुभ कर्मो की खेती कर, परलोक बनाना
जीवन का उद्देश्य नहीं है, खाना पीना मौज उड़ाना
तेरे घर वाले, बाहर वाले सब मतलब का संसार
तेरे काम न आए यह दुनियाँ..... ॥ 2 ॥

107. मन कल्कि कल्कि गाया कर

मन कल्कि कल्कि गाया कर।
श्री कल्कि ही अब आएँगे
जो दु:खों के बादल छाए हैं।
दिन अन्तिम उनके आए हैं॥
दु:ख जाएंगे सुख आएंगे।
तुझे नाथ स्वयं अपनाएंगे।
मन कल्कि कल्कि गाया कर॥
जो पापी पाप बढ़ाएंगे।
वह निश्चय काटे जाएंगे॥
पृथ्वी का भार हटाने को।
श्री कल्कि खड्ग चलाएंगे॥
मन कल्कि कल्कि गाया कर।

108. तुम कल्कि कल्कि बोलो रे 18 Oct

तुम कल्कि कल्कि बोलो रे
क्यों पड़े नींद में सोते क्यों समय अकारथ खोते
अब कल्कि नाम संग हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो.....
पापों की गहरी खाई क्या देती नहीं दिखाई
अब मन की आँखें खोलो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो.....
यह जीवन है दो दिन का कुछ पता नहीं इस तन का

अपने पापों को धो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो .....
मन कहे उसे मत मानो कल्कि सुमरन की ठानों
दर्शन के चिन्तक हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो .....

109. जाग बन्दे होश में आ

जाग बन्दे होश में आ और प्रभु से प्यार कर।
आएगा दिन मौत ले जाएगी तुझको मार कर॥
साथ ना ले जा सकेगा इस जहाँ की दौलतें
पड़ के लालच में न अपनी जिंदगी को ख्वार कर
जाग बन्दे..... ॥ 1॥
यह जनम तुझको मिला है नेक कामों के लिए
छोड़ मत ईमान अपना हसरतों से हार कर
जाग बन्दे..... ॥ 2॥
अपने मालिक की नजर में गिर न जाए तू कहीं
उसको खुश करने की कोशिश से न तू इंकार कर
जाग बन्दे..... ॥ 3॥

110. अरे ओ मूढ़ बन्दे देख

अरे ओ मूढ़ बन्दे देख दुनिया जाने वाली है
इकट्ठे पाप करके इसने एक गठरी बना ली है
यही वह चलता पानी है यही वह बहती धारा है
जो अपने साथ में सबको बहा ले जाने वाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे..... ॥ 1॥
निकल इस जग के फंदे से लगन रख कल्कि प्यारे से
जिन्होंने जालिमों के फूंकने को आग बाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे..... ॥ 2॥
कभी था वह धनुष कर में कभी थी बांसुरी मुख पे

उन्होंने म्यान से तलवार हाथों में उठा ली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे···..... ॥ 3 ॥
रटा था नाम कल्कि का गुरुवर बालमुकुन्दजी ने
जिन्होंने कल्कि मंडल देहली की नींव डाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे···..... ॥ 4 ॥

111 . मस्त होकर जिन्दगी भर

मस्त होकर जिन्दगी भर नाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का
मौत के डर से अगर तू चाहता है छूटना
तो अमर कर देने वाला जाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥1 ॥
बात दुनियाँ की न सुन ना देख दुनियाँ की तरफ
तू उम्मीदों से भरा पैगाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥ 2 ॥
पा लिया प्रहलाद ने जिस को भजन के जोर से
जो ध्रुव को था मिला वह धाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥ 3 ॥

112. गोकुल की गलियों में ढूंढे

गोकुल की गलियों में ढूंढे राधा को साँवरिया।
राधे राधे मीठी धुन में बोले री बांसुरिया॥
मुख सुन्दर कजरारे नैना घूंघर वाले बाल हैं
मोर मुकुट है सिर पर संग में गौऐं गोपी ग्वाल हैं
गल मूंगे की माला कंधे काली है कामरिया
गोकुल की गलियों में····· ॥ 1 ॥
मधुवन की कुञ्जों में उलझी बांकी चितवन श्याम की
मनमोहन की दासी बन गई हर ग्वालन बिन दाम की
सब मिल घेरे छलिया को ज्यों चन्दा को बदरिया
गोकुल की गलियों में····· ॥ 2 ॥

त्रिभुवन की आँखों का तारा रंग बरसाए रास का
बृज की रज में सागर उमड़ा आनन्द और उल्लास का
मन की लहरों में लहराए जीवन की चुनरिया
गोकुल की गलियों में..... ॥ 3 ॥
ब्रह्मादिक सुर सारे खो गए नट-नागर के खेल में
नारदजी भी रूप बदल कर मिल गए सब के मेल में
बन गए भोले शंकर भी बरसाने की गूजरिया
गोकुल की गलियों में..... ॥ 4 ॥
एक अनोखा जादू देखा मुरली के संगीत में
जड़ चेतन सब तन्मय हो गए नन्द नन्दन की प्रीत में
सुर बालाओं ने सिर धर ली गोरस की गागरिया
गोकुल की गलियों में..... ॥ 5 ॥
जो तुम पाना चाहो जग में दर्शन सुन्दर श्याम का
तो कलियुग में कर लो मन से सुमरन कल्कि नाम का
भक्तों की भवसागर से तर जाएगी नावरिया
गोकुल की गलियों में..... ॥ 6 ॥

113. बढ़ता चल जीवन में प्रति पल

बढ़ता चल जीवन में प्रति पल गन्तव्यस्थल दूर नही
आगे एक अवधि आने पर समय रहेगा क्रूर नहीं
दुख में साहस हीन हुआ तो लक्ष्य न अपना पाएगा
पूर्व पुण्य मय संचित निधि से वंचित ही रह जाएगा
कुटिल भाग्य से हंसकर कह दे धैर्यवान को घूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल... ॥ 1 ॥
कुसुम कली कांटों में खिलती नित नूतन अनुराग लिये
चन्दन शीतल सुरभित रहता है संग विषधर नाग लिये
दुख में जो घबराया कायर कहलाया वह शूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल... ॥ 2 ॥

114. खिला फूल उपवन में टूटा

खिला फूल उपवन में टूटा एक पवन के झोंके से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से

बिखर गए सब पंख रहा ना रूप रंग और आकर्षण
आया कुछ दिन ठहर न पाया लाया क्षण भंगुर जीवन
किसने किया प्रहार न जाने कोमल तन पर धोखे से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से
खिला फूल उपवन में टूटा..... ॥ 1 ॥

जिसको कल आँखों ने देखा उसका आज निशान नहीं
फिर भी अपने और पराए की होती पहचान नहीं
इस जग में कोई बिरला ही लाभ उठाए मौके से
खिला फूल उपवन में टूटा..... ॥ 2 ॥

115. श्री दुर्गा स्तुतिः

जय गणपति गुरु देव शिवाशिव शेष शारदा
माँ दुर्गे हम करते तुम्हें प्रणाम सर्वदा
रौद्र रूप दृग अरुण विशेष क्रोध के कारण
भक्त त्राण हित अस्त्र शस्त्र करती हो धारण

अखिल भुवन में है भर रहा प्रकाश तुम्हारा
रहे भगवती मम उर मध्य निवास तुम्हारा
तुम होकर अवतरित किया करती हो क्रीड़ा
भू-भूसुर-सुर सन्तों की हरती हो पीड़ा

निशि दिन जो जन तुमको भजे अनन्य भाव से
छूटे सद्य त्रिताप पाप के दुष्प्रभाव से
भक्ति मुक्ति देती है आराधना तुम्हारी
पूर्ण करो अविलम्ब देवि कामना हमारी

भक्त वत्सला भव्या भव मोचनी भवानी
गुण गाते गन्धर्व सर्व सुर नर मुनि ज्ञानी
होकर श्रद्धा युक्त शरण में जो आता है

वह सुर दुर्लभ नित्य परम पद को पाता है
करे तुम्हारा यजन जीव जो तन मन धन से
उन्हें मुक्त करती हो माया के बन्धन से
नाश करो माँ मेरे अज्ञानांधकार का
हो निर्मल मन रहे न उर अंकुर विकार का
प्राप्त किया तुम से अखण्ड साम्राज्य सुरथ ने
किसे न किया कृतार्थ भक्ति के पावन पथ ने
जब समाधि ने देवी तुम्हारा ध्यान किया था
तुमने उसको सबसे उत्तम ज्ञान दिया था
दो वरदान मुझे मैं होकर युक्त धर्म से
बनूँ कल्कि कमलेश भक्त मन वचन कर्म से
अपने जन को दिव्य शक्ति सम्पन्न करो माँ
परम शान्ति सुख देकर चित्त प्रसन्न करो माँ
सात्विक बुद्धि प्रदान करो कलि कलुष हटाओ
मम रसना से पल पल कल्कि नाम रटाओ
व्यापक है तब तेज भूमि पाताल व्योम में
जड़ चेतन सम्पूर्ण सृष्टि के रोम रोम में
प्रिय है तुमको वेद धर्म मर्यादा पालन
मर्यादा से होता लोकों का संचालन
वसुधा पर जब दैत्य दुष्ट दल बढ़ जाते हैं
बल वैभव के उच्च शिखर पर चढ़ जाते हैं
वे मदान्ध हो करते जब उपहास तुम्हारा
अखिल विश्व तब बन जाता है ग्रास तुम्हारा
होती हो तुम तृप्त रक्त असुरों का पीकर
गेंद समान गिराती हो नर मुण्ड मही पर
असुर शवों से जब यह पृथ्वी पट जाती है
तभी पाप की गहन कालिमा हट जाती ह
चलती है जब क्रूर कठिन करवाल तुम्हारी
सौम्य मूर्ति बन जाती है विकराल तुम्हारी
अट्टहास कर माँ जिस बार गरजती हो तुम
युद्ध भूमि में क्रुद्ध सिंह पर सजती हो तुम
जब कि भार से शेष शक्ति घटने लगती है

जलनिधि जाते खौल धरा फटने लगती है
होती क्षितिज में लीन गगनचुम्बी चट्टाने
सकल सृष्टि को लगते ज्वालामुखी जलाने
महा मेघ सम्वर्त काल के दृश्य दिखाते
सप्त सिन्धु मर्याद हीन होकर लहराते
अति विक्षुब्ध प्रकृति के ध्वंसमयी तांडव से
भर जाती सम्पूर्ण दिशाएँ भीषण रव से
मार्तण्ड जब हो प्रचण्ड तपने लगते हैं
त्राहि त्राहि कर जीव तुम्हें जपने लगते हैं
देती हो तब आर्त प्राणियों को निज आश्रय
करती हो खल म्लेच्छ यवन दल बौद्धों का क्षय

116. प्रथम पूज्य है सुरगणों में गजानन 8 NOV

प्रथम पूज्य है सुरगणों में गजानन,
सदा ही बड़े हैं बड़ों में गजानन
लिए शौर्य उत्साह के भाव मन में,
परम दक्ष हैं दुर्गुणों के दमन में
पराक्रम दिखाते रणों में गजानन ,
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
सरज सज्जनों में सुकोमल हृदय हैं,
प्रणतपाल शरणागतों में सदय हैं
बड़े ही कड़े हैं कड़ों में गजानन,
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
भुवन भोग सुख मोक्ष सम्पत्तियाँ सब,
नवों निधि अचल ऋद्धियाँ सिद्धियाँ सब
रखें निज चरण रज कणों में गजानन,
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
प्रणत को करें मुक्त दारुण दुखों से,
भरें भव्य उत्तम अलौकिक सुखों से
करें कार्य युग के क्षणों में गजानन,

प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन
सुयश शूद्र को वैश्य को धन दिलाते,
सुदृढ़ शस्त्र प्रिय क्षत्रियों को बनाते
भरें ब्रह्मबल ब्राह्मणों में गजानन,
प्रथम पूज्य हैं सुर गणों में गजानन

117.जहाँ जहाँ गंगा बहती है, गंगा महिमा

जहाँ जहाँ गंगा बहती है गंगा बहती है
धरती पर वहाँ-वहाँ मुक्ति के संग भक्ति रहती है
जहाँ-जहाँ गंगा बहती.....
राजा भगीरथ ने जिसके लिए तप किया
भागीरथी, वो कहाई यहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती..... ॥ 1 ॥
है जन्म जिसका अजन्मा के नख से हुआ
ऐसी कहीं, और सरिता कहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती..... ॥ 2 ॥
जो स्नान जलपान दर्शन करे वो तरे
गायें सभी, वेद महिमा महां
जहाँ-जहाँ गंगा बहती..... ॥ 3 ॥

118 . दृष्टि के सामने है अंधेरा

दृष्टि के सामने है अंधेरा,
मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा
है घिरा मोह घन तम घनेरा,
मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा.....
मैं भ्रमित हूँ अविद्या निशा में,
ले चलो तुम मुझे उस दिशा में
हो जहां मोह मद का न डेरा

मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा.....

भक्ति मणि दिव्य वैदूर्य हो तुम,
ज्ञान के श्रेष्ठतम सूर्य हो तुम
तुम जहां हो वही है सवेरा

मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा.....

शम्भू ब्रह्मादि के साध्य हो तुम,
इष्ट हो और आराध्य हो तुम
आर्त होकर तुम्हें आज टेरा

मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा.....

कर्ण पीयें सुधा जो कथा की ,
तो कटें जड़ विषय विष व्यथा की
हर्ष का हो हृदय में बसेरा

मार्गदर्शन करो कल्कि मेरा.....

119 . दर्शन दो कृष्ण केशव हरि

दर्शन दो कृष्ण केशव हरि, नटवर नागरिया गिरधर सांवरिया
दर्शन दो कृष्ण केशव हरि,
सुत यशुमति के वसु वसुधा के, सुषमा सागर सार सुधा के,
पीत पट तन सोहे चितवन मन मोहे, अधरों पे हो मुरली धरी।
दर्शन दो कृष्ण केशव हरि
ब्रज के बसिया रंल रंबीले, रसमय रसिया रंग रंगीले
अलकें घुंघराली पलकें मतवाली, अखियाँ प्यारी बड़ी मधुभरी॥
दर्शन दो कृष्ण केशव हरि

120 . कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण

कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
साधु सत्पुरुषों को सेवा से रिझाने वाले
शबरी सी दीनता मीरा सी लगन पाते हैं

कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
लोक परलोक के धन से भी जो बढ़कर धन है
प्रभु प्रेमी वो कल्कि नाम का धन पाते हैं
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
सच्चे विश्वास का जीवन में सहारा लेकर
चलते हैं जो वो ही कल्कि के चरण पाते हैं
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
भाग्यशाली उन्हें समझो जो निकल कर घर से
कथा सुनने तुम्हें करने को नमन आते हैं
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
भक्त डरते नहीं कितना भी डराए कोई
सामने मौत भी आ जाए तो तन जाते हैं
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं
भक्ति के रंग में मन रंग के प्रभु के प्यारे
पूजा के वास्ते श्रद्धा के सुमन लाते हैं
कल्कि भगवान तुम्हारी जो शरण आते हैं
उनके सब काम सुबह शाम में बन जाते हैं

121 . कल्कि हमारे सामने तुम आओगे जरूर

कल्कि हमारे सामने तुम आओगे जरूर
लेकिन अभी कुछ दिन हमें तड़पाओगे जरूर

तुमको मिलेगा क्या हमें तड़पा के रुलाके
आंखों को इन्तजार के झूले में झुलाके
सूरत सलोनी साँवली दिखलाओगे जरूर
लेकिन अभी कुछ दिन हमें तड़पाओगे जरूर

छलिया कहो कब तक हमें छिप छिप के छलोगे
टेढ़े हो टेढ़ी चाल नन्द लाल चलोगे
टेढ़ी डगर पे हमको भी दौड़ाओगे जरूर
लेकिन अभी कुछ दिन हमें तड़पाओगे जरूर
तकदीर ने शायद हमें जी भर के कोसा है
फिर भी हमें उम्मीद है तुम पर भरोसा है
आखिर किसी दिन तो हमें अपनाओगे जरूर
लेकिन अभी कुछ दिन हमें तड़पाओगे जरूर
जिसको पकड़ते हो उसे तुम छोड़ते नहीं
नाता किसी से जोड़ के तुम तोड़ते नहीं
कुछ तो हमारे भी कभी कहलाओगे जरूर
लेकिन अभी कुछ दिन हमें तड़पाओगे जरूर

29 NOV

122. पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ

पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ
अंधेरे में भटकती जिन्दगी की राह बन जाओ

बड़ी भारी मुसीबत की बलाओं से घिरा हूँ मैं
दुखों की खाइयों गहराइयों में जा गिरा हूँ मैं
तुम्हीं इन खाइयों गहराइयों की थाह बन जाओ
पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ.....

जहाँ का प्यार देखा मार भी देखी जमाने की
रही बाकी न दिल में चाह अब कुछ और पाने की
तुम्हीं बस एक पद्मानाथ मेरी चाह बन जाओ
पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ....

मुझे भगवन बलाओ से बचा लोगे वचन दे दो
ध्रुव प्रह्लाद तुलसी सूर मीरा सी लगन दे दो
मुझे नरसिहं बना दो आप सांवल शाह बन जाओ
पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ.....

भजन से जुड़ गई वो जिंदगी ही खूबसूरत है
तुम्हें पाने रिझाने के लिये जिसकी जरूरत है
तुम्हीं वो टीस तड़पन दर्द आंसू आह बन जाओ
पद्मानाथ मेरी नाव के मल्लाह बन जाओ.....

123 . तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान

तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि
मैं चरण हाथों से कैसे भला पकड़ूंगा बतलादो
मैं अल्पज्ञ तुम सर्वज्ञ मैं हूँ जीव तुम ईश्वर
मैं बल हीन तुम हो सर्व शक्तिमान सर्वेश्वर
मैं हूँ बद्ध तुम हो मुक्त मायाधीश नटनागर
तुम अगर चाहो तो मेरा समय सत्संग में लगवा दो
तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि.....

न जब तक हो नयन मन में मनोहर मूर्ति माधव की
भंवर में डालने वाली मिटे कैसे व्यथा भव की
असीमित को न सकती बांध सीमित शक्ति मानव की
तुम अगर चाहो तो सम्भव असम्भव को कर दिखलाओ
तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि.....

मुझे चित चोर अपनी ओर चाहो खींच सकते हो
कृपा जल से त्रषित जीवन विटप को सींच सकते हो
विरद को छोड़ क्या मुख मोड़ आँखे मींच सकते हो
अगर तुम चाहो तो पल में समस्याएं सब सुलझा दो
तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि.....

मुझे विश्वास है मेरी विनय स्वीकार कर लोगे
मेरे श्रेय साधन का स्वयं विस्तार कर लोगे
मिटाकर म्लेच्छ माया को विपद के भार हर लोगे
अगर तुम चाहो तो सुख की चरम सीमा पर पहुँचा दो
तुम मेरे ध्यान में आते नहीं भगवान कल्कि.....

124 . पुकारे नहीं सुन रहे गाय की

पुकारे नहीं सुन रहे गाय की, तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया
तुम्हीं से पली लाडली का यहाँ, तुम्हारे बिना हाल क्या हो गया

हुई आज असहाय घर-घर जिसे, मिला मान सन्मान मां की तरह
अधम आततायी उसी गाय की, लगे खींचने खाल क्या हो गया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

न थी कल्पना राम के देश में, मचेंगी अनाचार की आंधिया
प्रजातंत्र की आड़ में न्याय का, कलंकित हुआ भाल क्या हो गया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

विदेशी हटे दास उनके डटे, उसी को सभी मान बैठे स्वराज
किया क्या नरक से निकाला बड़े नरक में दिया डाल क्या होया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

यहां अब न माखन यहाँ अब न घी, यहाँ अब न नदियाँ बहे दूध की
न नौ लाख गौवें यहाँ नन्द की, न बृज के यहाँ ग्वाल क्या होया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

कदम्ब तरु लताए सघन कुंज वन, मधुर बांसुरी की न स्वर लहरिया
न सरसिज न सर श्याम सुंदर न तुम, विरह की मची ज्वाल क्या हो गया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

तुम्हें या स्वयं को कुटिल भाग्य को, समय को कि युग को किसे दोष दें
सरल साधु समुदाय के रक्त से, धरा क्यूँ हुई लाल क्या हो गया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

समुन्दर न खौले न धरती फटी, दिशाएं न दहकी न दानव फुंके
गिराई न आकाश ने बिजलियां, बने तुम न विकराल क्या होया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

न तलवार थामी न घोड़े चढ़े, बड़ी देर की क्यूँ न कल्कि बने
उठो हे महाकाल संहार की, घड़ी क्यों रहे टाल क्या हो गया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

बजी क्यूँ न घनघोर रण भेरियां, घिरी क्यूँ न अब तक घटा युद्ध की

फटा क्यूँ न परदा प्रबल पाप का, कटा क्यूँ न कलिकाल क्या होया
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया.....

125 . तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया

तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है तुम्हारी गाय
तुम्हीं को अपनी करुण कहानी सुना रही है तुम्हारी गाय

वो गाय तुमने जिसे चराया चरा के गोपाल नाम पाया
क्यूँ आज असहाय हो के आँसू बहा रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है तुम्हारी गाय.....

कहाँ वो मुरली की मीठी तानें कहाँ वो बृजवन सघन सुहाने
गए जमाने की याद तुम को दिला रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है तुम्हारी गाय.....

उठालो अब हाथ में दुधारा दिखा दो वो कल्कि रूप प्यारा
तुम्हारे दर्शन की आस तुम से लगा रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है तुम्हारी गाय.....

126 . धर्म कलियुग में रसातल को गया

22 Nov

धर्म कलियुग में रसातल को गया आज घर-घर में पाप पलते हैं
छद्म बाने में कालनेमि असुर पृथ्वी के प्राणियों को छलते हैं
धूर्त जन ईश्वर स्वयं बन के पृथ्वी के प्राणियों को छलते हैं

अब कहीं ज्ञान और ध्यान नहीं शुक सरीखे विचारवान नहीं
देखने में महान जो लगते, आचरण के अधम निकलते हैं
धर्म कलियुग में रसातल को गया आज घर-घर में पाप पलते हैं

विप्रजन वेद पाठ छोड़ चुके, क्षत्रिय शस्त्रों से नेह तोड़ चुके
वैश्यों में अब उदारता न रही, सेवा पथ पर न शूद्र चलते हैं
धर्म कलियुग में रसातल को गया आज घर-घर में पाप पलते हैं

माया कुछ इस प्रकार व्याप्त हुई, सिद्धि और साधना समाप्त हुई

वासनाओं की आग में तन मन, अब शलभ के समान जलते हैं
धर्म कलियुग में रसातल को गया आज घर-घर में पाप पलते हैं

127 . जिसकी जिभ्या पे नाम नहीं राम का

जिसकी जिभ्या पे नाम नहीं राम का
आदमी वो भला है किस काम का
मीत उसको बनाना न भूल के
बीज बोए है जिसने बबूल के
जो लगा न सका वृक्ष आम का
आदमी वो भला है किस काम का

दिन दुनियां की खटपट में कट गया
रैन आई तो बिस्तर से सट गया
जिसे होश है सुबह का न शाम का
आदमी वो भला है किस काम का

जो खुद गर्ज़ है मक्कार है
बड़ा चालाक है होशियार है
घोड़े की तरह बेलगाम का
आदमी वो भला है किस काम का

बात जिसको सुहाए न ज्ञान की
भक्ति करता नहीं भगवान की
पुतला है जो हाड़ मांस चाम का
आदमी वो भला है किस काम का

128 . जीभ से पद्मापति का नाम लो

जीभ से पद्मापति का नाम लो, दूसरा कोई न इससे काम लो
बोल ये कड़वे अगर बोले कभी, और अमृत में जहर घोले कभी
तो इसे हिलने न दो तुम थाम लो
जीभ से पद्मापति का नाम लो
ये अगर माँगे मिठाई दो इसे, मालपुआ रसमलाई दो इसे

माल के लेकिन खरे तुम दाम लो
जीभ से पद्मापति का नाम लो
राम का सुमरन किया प्रह्लाद ने, प्रेम का अमृत पिया प्रह्लाद ने
प्रेम का प्रह्लाद जैसा ज़ाम लो
जीभ से पद्मापति का नाम लो
डोर जीवन की भजन से जोड़ के, श्री हरि की ओर मन को मोड़के
जो लिया ध्रुव ने वही तुम धाम लो
जीभ से पद्मापति का नाम लो

129 . उसकी तो जिन्दगी है किसी काम

उसकी तो जिन्दगी है किसी काम की नहीं
जिस आदमी के दिल में लगन राम की नहीं
वो ढो रहा है जिस्म को एक ढोर की तरह
दुनिया में जी रहा है वो एक चोर की तरह
फिरता है बाहरी वो सजावट लिए हुए
करता है मीठी बातें बनावट लिए हुए
पानी का बुलबुला है वो पुतला है खाक़ का
हिस्सा है वो जहां में अजल की खुराक का
उसको खबर गुनाहों के अंजाम की नहीं
जिस आदमी के दिल में लगन राम की नहीं
उसकी तो जिन्दगी है किसी काम की नहीं
जिसको फ़कत है अपने उजालों से वास्ता
अपने ही खेल अपने ही ख़यालो से वास्ता
मंजिल से सरोकार नहीं राह से नहीं
साहिल से भी मतलब नहीं मल्लाह से नहीं
ख्वाबों की जो हवाओं में भरता उड़ान है
जुगनू की तरह सबको दिखाता वो शान है
खुशबू मिली खुशियों के उसे ज़ाम की नहीं
जिस आदमी के दिल में लगन राम की नहीं
उसकी तो जिन्दगी है किसी काम की नहीं

दुनिया में अब कहीं भी सच्चाई रही नहीं
लोगों के अब दिलों में सफाई रही नहीं
सब को ही अपने अपने सुखों की तलाश है
अपनी ही भूख है यहाँ अपनी ही प्यास है
आपस का प्यार बह गया नफरत की बाढ़ में
कीड़ा लगा हुआ है शराफत की दाढ़ में
परवाह उसको मौत के पैगाम की नहीं
जिस आदमी के दिल में लगन राम की नहीं
उसकी तो जिन्दगी है किसी काम की नहीं

13 Dec

130 . गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ

गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए
सब पाप हरे ताप हरे शाप मिटाए
गणिका ने कहाँ कौन सा शुभ काम किया था
तोते को पढ़ाते हुए हरि नाम लिया था
तन त्याग के दोनों ही परमधाम सिधाए
गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए
उलटा था रटा नाम कटे जाल कपट के
और पाप भी सब धुल गए पट खुल गए घट के
वो व्याध से ऋषि बन गए वाल्मीकि कहाए
गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए
यमदूतों ने बाँधा था अजामिल को पकड़ के
वो बोल उठा नारायण कष्ट में पड़ के
हरिदूत स्वयम् उसको बचाने चले आए
गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए
गजराज ने बृजराज को घबरा के पुकारा
प्रभु दौड़े गरुड़ छोड़ के और ग्राह को मारा
संसार में हारे को हरिनाम जिताए
गाया हुआ हरि नाम कभी व्यर्थ न जाए

131 . संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़

संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे
सपनों की शिलाओं पर सिर पटकना छोड़ दे
करता उपद्रव रात-दिन तू हर घड़ी हर पल
घर में कभी टिकता नहीं तू है बड़ा चंचल
मर्कट की तरह नाचना मटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
परलोक और लोक दोनों को बिगाड़ के
अपने बसे बसाए भवन को उजाड़ के
नभ में त्रिशंकु की तरह लटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
ऊँचे बहुत ही ऊँचे हैं आशाओं के शिखर
शिखरों के ये पत्थर किसी दिन जाएंगे बिखर
इन पत्थरों के पास तू फटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
फूले फलेगी चार दिन जीवन की वाटिका
ये काल की क्रीड़ा स्थली है तू जहां टिका
तू काल की सीमाओं में अटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
कब तक दबा रहेगा तू पापों के भार से
किस लिए उदासीन है अपने उद्धार से
यमराज की आँखों में तू खटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
तृप्ति के लिए ज्ञान सुधा पान किया कर
भक्ति का दिव्य मोदक मिष्ठान लिया कर
विषयों के हलाहल को तू गटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....
नर को गिराती नर्क में है भोग वासना
तू प्रेम से पद्मापति की कर उपासना
अग्नि में ईंधन की तरह चटकना छोड़ दे
संसार के बीहड़ में मन भटकना छोड़ दे.....

Harian last Bhjn 29 Nov

132 . मानुष देह तूने पाई हरि गुन गा ले

मानुष देह तूने पाई हरि गुन गा ले
ओ मूरख क्यों अमृत को छोड़ जहर के पीये प्याले
हरि गुन गा ले हरि गुन गा ले
कल्कि कमल नयन से लगाले तू लगन मन बाँवरे
ले ले उनकी शरण वो हैं तारन तरण श्याम साँवरे
दे के निज नयनों का नीर मीत तू उनको बनाले
ओ मूरख क्यों अमृत को छोड़.....

133 . दुनियां में आके आदमी शैतान

दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया
पूजा प्रभु की छोड़ी खुद भगवान बन गया
पद्मापति ने भेजा था भजन के वास्ते
तिकड़म यहां ये करने लगा धन के वास्ते
लालच में पड़ के बौना बेईमान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....
पहले भी नरकों में गिराया जा चुका है ये
अपने किये पापों की सजा पा चुका है ये
मालिक की मेहरबानी से इंसान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....
किसने दिखाए है हमें दुनियां के नजारे
धरती बनाई है बनाए चांद सितारे
किसके इशारे पे ये आसमान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....
बढ़ते चले जाना यहां नीची नज़र किये
मिट्टी में मिल गए जिन्हों ने ऊँचे सर किये
सारा जहां उनके लिए शमशान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....
जिसने खुशी से दे दिया पद्मापति को दिल
घर से चला तो रास्ते में मिल गई मंजिल

हर काम उसके वास्ते आसान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....
किसको मिली राहत यहां किसको मिला आराम
जिसकी की जुबां पे आ गया पद्मापति का नाम
जो जानकर सब कुछ यहां अन्जान बन गया
दुनियां में आके आदमी शैतान बन गया.....

134 . पापी प्राणी मौजें मारें

पापी प्राणी मौजें मारें साधुजन दु:ख पाते
दीनानाथ दया कब होगी, पद्मानाथ दया कब होगी
फैली है प्रबल माया असुरों ने बल पाया
कर रहे अत्याचार
कल्कि कहाओ स्वामी चढ़ घोड़े आओ स्वामी
हाथ में ले तलवार
पापी प्राणी मौजें मारें साधुजन दु:ख पाते
दीनानाथ दया कब होगी, पद्मानाथ दया कब होगी

135 . रहो दुनियाँ में न दुनियाँ की

रहो दुनियाँ में न दुनियाँ की कभी चाह करो
मन बिगड़ जाए ना इस बात की परवाह करो
सीधे-सीधे चलो बढ़ते रहो मंजिल की तरफ
अपने बेड़े को बढ़ाते रहो साहिल की तरफ
खुद न भटको यहाँ औरों को न गुमराह करो
मन बिगड़ जाए ना इस बात की परवाह करो.....

लोभ पंछी है तुम इस पंछी के सब पर काटो
कभी धनवानों की चौखट के न चक्कर काटो
चापलूसी न करो और न वाह वाह करो
मन बिगड़ जाए ना इस बात की परवाह करो.....

ताकत के ज़ोर पे अपनी ही चलाने वालों
अपने सुख के लिए, औरों को सताने वालों
उजले दामन को गुनाहों से न तुम स्याह करो
मन बिगड़ जाए ना इस बात की परवाह करो.....

ज़िन्दगी धोखा है ये मौत से घिर जाएगी
आंधी के झोंके से दीवार सी गिर जाएगी
मौत के खतरे से खुद को ज़रा आगाह करो
मन बिगड़ जाए ना इस बात की परवाह करो.....

136. आते हैं यहां और चले जाते हैं सब लोग

आते हैं यहां और चले जाते हैं सब लोग
सामान भी कुछ साथ न ले जाते हैं सब लोग

दो दिन का ये जीवन है तो दो दिन का है ये मेल
सुमरन से नहीं सींचते भक्ति की अमर बेल
भगवान की माया से छले जाते हैं सब लोग
आते हैं यहां और चले जाते हैं सब लोग.....

माया तो दिखाती है हमें राह नरक की
हम देखते हैं काल की चलती हुई चक्की
दलिये की तरह जिसमें दले जाते हैं सब लोग
आते हैं यहां और चले जाते हैं सब लोग.....

137. प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के

प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के दुखहारी
दुखियों के दुखहारी
तुम ही ने दुखियों के कारण राम रूप को धारा था
धनुष तोड़ सीता को व्याहा जाकर रावण मारा था
टेर सुनो भक्तों की अब भी निष्कलंक अवतारी.....

दुखियों के दुखहारी
प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के दुखहारी
ऐसे ही मथुरा में तुमने जा लीला दिखलाई थी
कैद हुए वसुदेव देवकी उनकी फंद छुड़ाई थी
प्रभु जी अब आकर दुष्टों से रक्षा करो हमारी.....
दुखियों के दुखहारी
प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के दुखहारी
दुनिया वाले पाप करते हैं आपस में है प्यार नहीं
कोई किसी के साथ भलाई करने को तैयार नहीं
अब तो तुम बिन हे कल्कि जी छाई है लाचारी.....
दुखियों के दुखहारी
प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के दुखहारी दुखियों के दुखहारी
कल्कि मण्डल की यह विनती आ दुष्टों का नाश करो
कलियुग को कर दूर जगत से सतयुग का प्रकाश करो
आस यही तुमरे 'चिंतक' की हो जग में उजियारी.....
दुखियों के दुखहारी
प्यारे कल्कि आवो आवो दुखियों के दुखहारी दुखियों के दुखहारी

138 . कल्कि भगवान का दर्शन उसे

कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है
कल्कि के विरह में मन जिसका तड़पता ही नहीं
देवी मीरा की तरह कैसे वो रो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है
पास तेरे भी है अनमोल भजन के मोती
तू उन्हें स्वांस के धागो में पिरो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है
मैल ममता का अहमता का चढ़ा है मन पर
बिना सुमरन उसे कैसे कोई धो सकता है

कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

किसी ज्ञानी का सहारा जो तुझे मिल जाए
भार संसार का फिर कैसे तू ढो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

सुख या दु:ख रूप में फल कर्मों का पाने के लिये
बीज जैसे भी तू चाहे यहाँ बो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

मुक्ति के द्वार की जिस जीव को पहचान नहीं
माया की भूल भुलैया में वो खो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

इच्छा आशाओं के सर्पों ने डसा है जिसको
कैसे संतोष की शैया पे वो सो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

मिलता है सिद्धि का नवनीत उसी साधक को
साधनाओं के दही को जो बिलो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

वो जो व्याकुल है किनारे पे पहुँचने के लिए
अपने बेड़े को स्वयं कैसे डुबो सकता है
कल्कि भगवान का दर्शन उसे हो सकता है
प्रेम के जल से जो नयनों को भिगो सकता है

139 . भक्त की भगवान रखते लाज हैं

भक्त की भगवान रखते लाज हैं
खूब खुशियों के सजाते साज हैं
गीध ने गज ने निहारा था जिन्हें
कष्ट में पड़ के पुकारा था जिन्हें
हम उन्हीं को दे रहे आवाज हैं
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

भीलनी के बेर उनको भा गए
भूख में छिलके विदुर के खा गए
अब हमारे भी वही सर ताज हैं
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

गोपियों के भाव पर वो रीझते
कंस के बर्ताव पर वो खीझते
खीजकर खल पर गिराते गाज है
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

वो सदा सुख चैन सब को बाँटते
कष्ट पीड़ा शोक संकट काटते
मोक्षदाता भी वही बृजराज हैं
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

हैं बड़े भोले भलों के वास्ते
पर खिलाड़ी हैं खलों के वास्ते
यूं समझ लो तीतरों में बाज हैं
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

दैत्य जो दिन रात उनको कोसते
वो उन्हें भी पालते हैं पोसते
पर कभी होते नहीं नाराज़ हैं
भक्त की भगवान रखते लाज हैं.....

140 . तेरी हर घड़ी भजन के बिना बीत

तेरी हर घड़ी भजन के बिना बीत रही व्यर्थ है
तेरा ध्येय धर्म मोक्ष नहीं काम और अर्थ है
रहते याद जो तुझे वो कहीं कष्ट गर्भवास के
कहके त्राहिमाम चरणों में गिरता रमा निवास के
बैरी बन गया कुसंग बन्धन कट सके न आस के
पल पल पर प्रमाद के ही कारण हो रहा अनर्थ है
तेरी हर घड़ी भजन के बिना बीत रही व्यर्थ है
कलियुग सा न युग न भूमि भारत सी पवित्र अन्य है
उत्तम कुल मनुष्य देह इन सबका सुयोग धन्य है
माना श्वान सम उसे न हरि का भक्त जो अनन्य है
आत्मोद्धार के लिए कल्कि नाम ही समर्थ है
तेरी हर घड़ी भजन के बिना बीत रही व्यर्थ है

141 . ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया

ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया
घर छूटा परदेस में आया
जब शिशु आँखे खोले, या कुछ मुँह से बोले
उससे पहले मोहिनी माया, उसको आकर मोह ले
मोह ने सारा ज्ञान भुलाया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया...
ऋषि मुनि योगी सारे, इस माया से हारे
इससे कोई बिरला जीते, जो हरि नाम पुकारे
नाम को वेदों ने सार बताया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया...

142 . कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये

कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये
पद्मापति प्राणधन की शरण जाइये पद्मापति
प्राणधन के चरण पाइये
पाप की राह में पैर धरना नहीं
सज्जनों से कभी वैर करना नहीं
सामने दुष्ट आए तो तन जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....
व्यास जी के न उपदेश को भूलना
और शुक के न संदेश को भूलना
वैष्णवों से परम प्रेम धन पाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....
अनुभवों के न आदेश को भूलना
गुरुजनों के न उपदेश को भूलना
प्रेम से कल्कि के पद भजन गाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये...
है मिली देह आराधना के लिए
धर्म की मोक्ष की साधना के लिए
अर्थ की काम की मत शरण जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये...
जो किसी का यहाँ चैन सुख लूटते
दूत यम के उन्हें नर्क में कूटते
भूलकर भी न यम के सदन जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....
गर्भ में कष्ट से छटपटाते हुए
जो कहे थे वचन गिड़गिड़ाते हए
गर्भ के भूल मत वो वचन जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....
छोड़कर देह को जीव जाता जहां
कल्कि का नाम ही काम आता वहां
साथ लेकर यहां से भजन जाइये

कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये.....
यूं न गिरना कि गिरकर संभल न सको
स्वल्प सी भूल से फूल फल न सको
पंक में छद्म छल के न सन जाइये
छोड़ छल कल्कि सुमरन में सन जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....
काम चल न सकेगा भजन के बिना
नाम चल न सकेगा भजन के बिना
बात सुन लीजिए मत उफन जाइये
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइये....

143 . जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े

जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है
सुमरन को भजन को जो न छोड़े वो गुरु है

परमार्थ के पथ में बड़े उत्साह से बढ़ के
विश्वास से श्रद्धा से सभी शास्त्रों को पढ़ के
जो सार को श्रुतियों से निचोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

ज्ञानी हो विरागी हो विवेकी हो सरल हो
निर्लोभ हो निष्काम हो जल से भी तरल हो
अभिमान की चट्टान को तोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

निज शिष्य को सद्भाव से समता से सटा के
मद मोह से ममता से अहमता से हटा के
जो गर्व की गर्दन को मरोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

अपमान का विषपान करे मान से रूठे
धनहीन की सेवा करें धनवान से रूठे
संकल्पों के दौड़ाए न घोड़ें वो गुरु है

जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

निर्गुण में निराकार में जिसकी हो प्रतिष्ठा
सच्ची हो सुदृढ़ ज्ञान में विज्ञान में निष्ठा
पर भक्ति से मन को जो न मोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

तन को जो तपस्या की कसौटी पे है कसता
प्रभु प्रीति का जल जिसके दृगों से है बरसता
रहता हो जहां लोग हों थोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

जो शान्त है निर्लेप है निर्द्वन्द है निश्चल
योगी है मननशील है निर्वैर है निश्छल
इच्छाओं के खाए जो न कोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

जो भूल के भोगी को कभी मूं न लगाए
सोए हुए दुर्भाग्य को जाके न जगाए
अज्ञान का सिर ज्ञान से फोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

कर्त्तव्य को जीवन के न उत्कर्ष में भूले
सुनकर जो प्रशंसा को नहीं हर्ष में फूले
निंदा से नहीं नाक सिकोड़े वो गुरु है
जो जीव को श्री कल्कि से जोड़े वो गुरु है

144 . पद्मापति की याद में जो रो नहीं सकता

पद्मापति की याद में जो रो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता

आँखों को आँसुओं से जो भिगो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता

ईश्वर को पुत्र रूप में पाने के वास्ते
शतरूपा मनु तन को तपाने के वास्ते
सुमरन भजन में मन को लगाने के वास्ते
बेचैन थे वन में चले जाने के वास्ते
बुढ़ापे में भी छोड़ जो घर को नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....
दशरथ ने पुत्र रूप में ईश्वर को पा लिया
कौशल्या मां ने गोद में ले के खिला लिया
मुख चूम के शिशु को सीने से लगा लिया
सोने के पालने में लिटा के झुला लिया
मन को जो भाव सिंधु में डुबो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....
कौशिक ने कौशलेश को दु:ख अपने सुनाए
लक्ष्मण के साथ राम को वो मांग के लाए
जब बालकों ने राक्षसों पर तीर चलाए
तो ताड़का सुबाहु सभी मार गिराए
परमार्थ के दही को जो बिलो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....
ब्रह्मा की गोद में पली हुई थी अहिल्या
सांचे में रूप के ढली हुई थी अहिल्या
गौतम के लिए बावली हुई थी अहिल्या
वो इन्द्र के द्वारा छली हुई थी अहिल्या
हर पल हरि के नाम को जप जो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....
मिथलापुरी में आ गए दशरथ के दुलारे
ज्ञानी जनक को भा गए दशरथ के दुलारे
सबके दिलों पे छा गए दशरथ के दुलारे
लाखों का प्रेम पा गए दशरथ के दुलारे
मन को जो प्रभु प्रेम में पिरो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

आंसू बहाए गीध ने तो राम आ गए
प्यासे पपीहे के लिए घनश्याम आ गए
थे अखिरी दो चार श्वांस काम आ गए
सौदा दिये बगैर खरे दाम आ गए
औरों के लिए देह को जो ढो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

आंसू बहाए भीलनी ने राम के लिए
दुख बहुत पाए भीलनी ने राम के लिए
फल भी सजाए भीलनी ने राम के लिए
आसन बिछाए भीलनी ने राम के लिए
सुध-बुध प्रभु के प्रेम में जो खो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

सुग्रीव ने श्री राम को आते हुए देखा
लक्ष्मण को उनका साथ निभाते हुए देखा
पर्वत से हनुमान को जाते हुए देखा
कंधे पर बिठाके उन्हें लाते हुए देखा
मन और इन्द्रियों को जीत जो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

रावण के राज्य में रहा करते थे विभीषण
खोटी-खरी सबकी सहा करते थे विभीषण
भक्ति की बाढ़ में बहा करते थे विभीषण
बस राम-राम ही कहा करते थे विभीषण
सुमरन से मन के मैल को जो धो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

रानी ने राज्य मांग लिया था ईनाम में
लेकिन भरत का मन रमा हुआ था राम में
महलों को छोड़ जा बसे थे नंदिग्राम में
आसक्ति न थी धर्म अर्थ मोक्ष काम में
सत्कर्म के जो बीज यहां बो नहीं सकता
दर्शन उसे पद्मापति का हो नहीं सकता....

145 . राम दशरथ के भवन में आ गए

राम दशरथ के भवन में आ गए
जीव जड़ चेतन परम धन पा गए
हो गए आनन्द पूरित उर अमल
खिल गए मन की उमंगों के कमल
तन गगन में घन पुलक के छा गए
राम दशरथ के भवन में आ गए.....
दिव्य मंगल वाद्य सब बजने लगे
ग्राम खेड़े पुर नगर सजने लगे
भूमि के श्रृंगार सबको भा गए
राम दशरथ के भवन में आ गए.....
देवता आए अवध में स्वर्ग से
राम उनके भी हृदय में हैं बसे
कल्पतरु के पुष्प वो बरसा गए
राम दशरथ के भवन में आ गए.....
दे रहे पुरजन बधाई भूप को
देखकर श्री राम शिशु के रूप को
साधु संतों के नयन हर्षा गए
राम दशरथ के भवन में आ गए.....
इष्ट बालक राम को ले गोद में
ज्योतिषी शंकर भरे हैं मोद में
मालपुआ खीर खुरचन खा गए
राम दशरथ के भवन में आ गए.....

146. क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए

क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए
दिन बीत गया और हुई शाम न आए
शबरी ने सुबह उठके बुहारा था डगर को
लीपा था सजाया था संवारा भी था घर को
लाई थी बड़े चाव से फल काम न आए

क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए.....

चलती थी हवा जोर से पत्ता जो खड़कता
सुनती वो जो आवाज तो दिल उसका धड़कता
बिन राम को पाए उसे आराम न आए
क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए.....

लाती थी घड़ा भरके सरोवर से वो पानी
दुख दर्द भरी सबको सुनाती थी कहानी
कहती थी कि सुख देने को सुखधाम न आए
क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए.....

शबरी की खिले फूल सी मुरझा गई आंखें
पथ देखते ही देखते पथरा गई आंखें
पर प्यास बुझाने को वो घनश्याम न आए
क्या बात हुई आज भी श्री राम न आए.....

147 . प्रभु शबरी की सुध लेने अवध

प्रभु शबरी की सुध लेने अवध को छोड़कर आए
हुए जब राम के दर्शन नयन शबरी के हरषाए
प्रभु श्री राम का शबरी निरन्तर नाम जपती थी
उन्हीं की याद में दिन रात रोती थी तड़पती थी
बड़े अनमोल थे आँसू जो उसने बरसों बरसाए
प्रभु शबरी की सुध लेने अवध को छोड़कर आए.....

कभी सर्दी कभी गरमी कभी बरसात होती थी
मगर शबरी के मन में एक ही बस बात होती थी
मिले हैं राम उसको राम के जिसने भी गुण गाए
प्रभु शबरी की सुध लेने अवध को छोड़कर आए.....

उसे बस एक धुन थी राम को पाने रिझाने की
न कोई चाह थी परवाह थी उसको जमाने की
रमी थी राम में उसको रमापति राम ही भाए

प्रभु शबरी की सुध लेने अवध को छोड़कर आए.....

मधुर फल भीलनी ने राम के जब सामने रक्खे
बड़े ही प्रेम से वो सब प्रभु श्री राम ने चक्खे
सुनें या जो करें चर्चा फलों की वो भी तर जाए
प्रभु शबरी की सुध लेने अवध को छोड़कर आए.....

148 . कह देना जा के बात ये

कह देना जा के बात ये हनुमान राम से
जीवन है जानकी का तुम्हारे ही नाम से

किसको व्यथा सुनाऊं मैं करुणा निधान बिन
रातें रुला रही हैं तो तड़पा रहे हैं दिन
खुशियों का वास्ता है सुबह से न शाम से
कह देना जा के.....

स्वामी को दूर ले गया सोने का वो हिरन
मुड़ कर न चकोरी को मिली चाँद की किरन
क्यों रीझकर मन जुड़ गया चमकीले चाम से
कह देना जा के.....

मन को तुम्हारे रूप के दर्शन की प्यास है
विश्वास धड़कनों को है श्वासों को आस है
आना पड़ेगा तुमको हमारे भी काम से
कह देना जा के.....

149 . आदि में है श्री हरि

आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि, मध्य में है श्री हरि
श्री हरि जय श्री हरि, श्री हरि जय श्री हरि, श्री हरि जय श्री हरि
हैं प्रलय के मीन वे, पुष्ट पावन पीन वे,
वारि में क्रीडा करी।

आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
मंदराचल के तले, यौं लगें कच्छप भले
ज्यौं सलिल में सौभरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
ब्रह्म फिर शूकर बना, हेमलोचन को हना
जब धरा अतिशय डरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
विष्णु द्रोही जब डटा, जोर से खम्बा फटा
आ गए नर केसरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
मांगने का मन बना, ब्रह्म तब वामन बना
अदिति की पीड़ा हरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
कोप भृगुपति ने किया हाथ में फरसा लिया
रिपु शवों से भू भरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
जब दशानन को दला धर्म फिर फूला फला
नाव देवों की तरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
छवि दिखाई पावनी कृष्ण ने मन भावनी
वेणु अधरों पर धरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
हिंस्र जब याज्ञिक बने बुद्ध तब तार्किक बने
जब दया ममता मरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
म्लेच्छ जब जग में बढ़े कल्कि घोड़े पर चढ़े
खड़ग खुखरी ले खरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....
दिव्य जिनके कर्म हैं धर्म के जो वर्म हैं
दें हमें निज चाकरी।
आदि में है श्री हरि, अंत में है श्री हरि.....

150 . आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव

आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
गौवें तुमको याद करें, भक्त सभी फरियाद करें
आकर कष्ट मिटाओ नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
भार भयो भूमि पर भारी, लेकर खड़्ग अश्व असवारी
भूमि भार हटाओ नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
भक्त दुखी सब टेर रहे हैं, बाट तुम्हारी हेर रहे हैं
प्रेमानन्द लुआओ नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि
आओ नाथ प्रकटो नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि

151 . तेरा जीवन है अनमोल मुख

तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

कल्कि भारत में आए हैं, यवनों म्लेच्छों पर छाए हैं
पूरा होगा गीता का कौल, मुख से कल्कि कल्कि बोल
तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

ज्ञान ध्यान और बुद्धि दाता, अन्धकार को दूर भगाता
अपने हृदय के पट खोल, मुख से कल्कि कल्कि बोल
तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

कौन है जग में किस का प्यारा, काहे कल्कि नाम बिसारा
जिसमें कौड़ी लगे न मोल, मुख से कल्कि कल्कि बोल
तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

दुनियाँ के सब फन्द छुड़ावे, भव सागर से पार लगावे
काहे रहा सन्देह में डोल, मुख से कल्कि कल्कि बोल
तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

कल्कि मण्डल निशदिन गावे, घर-घर कल्कि नाम सुनावे
करले प्रभु चिन्तक बन कौल, मुख से कल्कि कल्कि बोल

तेरा जीवन है अनमोल मुख से कल्कि कल्कि बोल

152 . देखो देखो जी जगत के सिर पर काल

देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए
आ रहे हमारे कल्कि खड़ग उठाए

हाहाकार मची चौतरफा पल पल भारी आए
जो कल्कि का नाम जपेगा वह कल्कि मन भाए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.....

त्रेता में श्री राम हुए द्वापर में कृष्ण कहाए
कलियुग में भी जन्म लिया है सत्युग करने आए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.....

दुनियां वाले मोह माया में मन को रहे लगाए
माया सारी यहीं रहेगी जीव नरक को जाए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.....

कल्कि मण्डल निशदिन मिलकर कल्कि के गुण गाए
छोड़ सभी दुनियां के धन्धे प्रभु को शीश नवाए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.....

153 . कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये

कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये कुछ और
कल्कि नाम है भगवान के सब नामों में सिर मौर
कल्कि नाम जो गायेगा वो खुशहाल रहेगा
कल्कि नाम से ऊँचा तेरा इकबाल रहेगा
बिगड़ी बने जिस तौर से अच्छा है वही तौर
कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये कुछ और.....

कल्कि नाम के दीपक में तू लौ बन के जले जा

कल्कि नाम से फुँक जायेगा कलियुग का कलेजा
गुरु बालमुकुन्द जी के इस इलहाम पे कर गौर
कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये कुछ और....

कल्कि नाम ही भक्तों के लिए ढाल बनेगा
कल्कि नाम ही दुष्टों के लिए काल बनेगा
कल्कि नाम ही लाएगा जमाने में नया दौर
कल्कि नाम को नित गाइये मत गाइये कुछ और....

154 . मुरली भी सुनेंगे देखेंगे

मुरली भी सुनेंगे देखेंगे मोहन की मनोहर लीलाएँ
पहले तो वो कल्कि बनकर भू-भार हटाने को आए

यहाँ रोज सुबह के होने तक कट जाती है लाखों गायें
कुंज गलियों की रंग-रलियों में दिल पत्थर हो तो खो जाए
सीने में हो जिनके आग उन्हें सावन की मल्हारें क्यों भायें
वे चैन से बैठे क्यूँ तब तक संहार न जब तक करवायें
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे..... ॥ १ ॥

बृजराज रहे बृज में सुख से क्यूँ शस्त्र उठाए दुख पाए
उन्हें छोड़ दे उनकी किस्मत पर कलिकाल से जो जा टकराए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे..... ॥२ ॥

वे रास रचाए मधुवन में माखन खाए मिश्री खाए
गौओं से उन्हें जब नेह नहीं गोपाल न फिर वो कहलाए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे..... ॥ ३ ॥

155 . लगे रहो कल्कि के प्यारों

लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग की तैयारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

तुम बढ़ भागी अति अनुरागी गायक कल्कि नाम के
परम उपासक कलि कुल नाशक पद्मापति सुखधाम के
धन्य तुम्हारा जीवन जो हरि हाथ बिके बिन दाम के
खर शूकर सम जीयें जगत में वे नर हैं किस काम के
बहुत बड़ा है अन्तर तुम में और पुरुष संसारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

उतरेगा भू-भार तुम्हारे कल्कि कल्कि कहने से
हो जाओगे अमर धर्म के कारण संकट सहने से
सुख पाएगा मन कल्कि के चरण कमल में रहने से
डूबे कल्कि नाम बिना नर भव सागर में बहने से
नेह तुम्हारा बढ़े निरन्तर निष्कलंक अवतारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

जग में जिनके परम सहायक गुरुवर बालमुकुन्द हैं
वे चट्टान समान सुदृढ़ संताप रहित स्वछन्द हैं
कल्कि के अनुभव से उनके उर में अति आनन्द हैं
क्या देखें कल्कि की लीला जिनकी आँखे बंद हैं
जीव भजन बिन पल्लव सब उड़ते अंधड़ अंधियारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

कल्कि नाम सुनेंगे तुमसे संस्कारी बल पाएंगे
भक्त रहेंगे संग प्रमादी पाखण्डी टल जाएंगे
व्याकुल होकर दशो दिशाओं में दानव दल धाएंगे
शुभ कर्मों के आज नहीं तो कल आगे फल आएंगे
नहीं रहेंगे विप्र धेनु सुर संत सदा लाचारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

दिव्य लोक से तुम्हें भुवन पति ने भूतल पर भेजा है
क्या जानो किसलिये तुम्हारा रूप बदलकर भेजा है

कलियुग से टक्कर लेने को किसके बल पर भेजा है
काल समाया है कलियुग का कल्कि नाम दुधारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

काम लगन से कल्कि का जो तन रहते कर लेंगे
ध्यानावस्थित हो कल्कि के चरणों में सिर धर लेंगे
कथा सुनेंगे श्रवण नयन हरि के हित झर-झर लेंगे
देंगे स्थान उन्हें सत्युग के अग्रिम दल दरबारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

जो जन धन वैभव के मद में कल्कि नाम को भूलेंगे
दर्पण में प्रतिबिम्ब देख निज सुन्दरता पर फूलेंगे
मन विहंग आकांशाओं के विस्तृत नभ को छु लेंगे
पछताएंगे प्राण मृत्यु के झूले में जब झूलेंगे
सुख चाहो तो रमो रमापति पद पंकज मदहारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

कह दो सब से कल्कि जी का खड़ग खड़कने वाला है
शंकर का विकराल तीसरा नेत्र फड़कने वाला है
शीशे सम कलियुग का तन तत्काल तड़कने वाला है
अखिल विश्व में भीम भयंकर युद्ध भड़कने वाला है
कौन सुनेगा अमन शांति का नारा मारामारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग.....

156 . लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि

लोग कहते है कि मुद्दत से ये कल्कि वाले
कल्कि कल्कि ही न जाने क्यों रटा करते हैं
क्या पता उनको कि इस नाम की दुधारी से

धर्म के बैरी कहीं भी हो कटा करते हैं
लोग कहते है कि.....
अपने गुरुदेव से हमको तो यही नाम मिला
जिन्दगी भर के लिए सच्चा सही काम मिला
एक कल्कि के सिवा नाम रटें दूजा क्यों
छोड़ कल्कि को करें और की हम पूजा क्यों
हमको पृथ्वी का अभी भार उतरवाना है
सत युग लाए बिना चैन कहाँ पाना है
क्या पता उनको कि कलि काल के काले बादल
नाम कल्कि की हवा से ही हटा करते है
लोग कहते है कि..... ॥ 1 ॥
धर्म के नाम पे जब पाप पनप जाते है
त्याग तप संयम नियम जिस दम कि खप जाते हैं
टूट जाती है सभी शास्त्र की मर्यादाएँ
भक्ति को छोड़कर नर भोगों में भरमा जाएँ
आए बिन ऐसे में भगवान नहीं रह सकते
अपनी मर्यादा का अपमान नहीं सह सकते
क्या पता उनको अमन चैन की आवाजों में
दम नहीं रहता कि जिस दम बम फटा करते हैं
लोग कहते है कि..... ॥ 2 ॥

157 . दिन है दो चार भजन के

दिन है दो चार भजन के तेरे जीवन के जो नर तर जाना है
कोई करके अच्छी सी करनी पाया मानुष तन
फिर भी न बैठा ले के सुमरनी भाया तुझे पशुपन
चरणों में चित भगवन के लगाओ दास बनके
जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के... ॥ 1 ॥

काल बलि है श्री कल्कि स्वामी जन्में है संभल
दूर करी भारत की गुलामी उनके दरश को चल
पथ छोड़ दे उलझन के अशुभ दर्शन के

जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के... ॥ 2 ॥

158 . हम हारे टेर टेर काहे लगाई देर

हम हारे टेर टेर काहे लगाई देर
प्यारे प्रभु आओ आओ प्यारे प्रभु आओ

दो दर्शन हे सम्भल वाले कर में खड़ग उठाए
बिना तुम्हारे नाथ हमारे संकट कौन मिटाए
बड़ा घबराए जिआ क्यों न दरश दिया
यह बतलाओ आओ प्यारे प्रभु आओ
हम हारे टेर टेर.....

गौए रोएं और पुकारें कर कर याद तुम्हारी
भूल गए क्या इन्हे चराना गोवर्धन गिरधारी
कल्कि मण्डल सारे चिन्तक है तुम्हें पुकारे
दरश दिखाओ आओ प्यारे प्रभु आओ
हम हारे टेर टेर.....

159 .दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों

दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों की निहार के निहार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के

पाप यहाँ सन्ताप यहाँ, माया की मन पर छाप यहाँ
तुम्हें जग भूल गया, पैसे का है जाप यहाँ
हम तो बैठे है मन मार के जी मार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों ..... ॥ 1 ॥

भार हरो संहार करो और भक्तों के भंडार भरो

धर्म की जीत होवे, ऐसा चमत्कार करो
तुम हो आधार निराधार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों..... ॥ 2 ॥

160 . जीवन के आधार प्रभु हमारे प्रभु हमारे

जीवन के आधार प्रभु हमारे प्रभु हमारे
करो विनय स्वीकार प्रभु हमारे प्रभु हमारे
प्रभु हमारे तुम इस तन में प्राण समान समाए
नाथ वियोग सहा नहीं जाए क्यों अब तक नहीं आए
कुछ तो करो विचार प्रभु हमारे प्रभु हमारे
जीवन के आधार प्रभु हमारे प्रभु हमारे.....

नैया किनारे लगाओ प्रभु जी नैया किनारे लगाओ प्रभु जी
चढ़ घोड़े खड़ग लिए आओ—चढ़ घोड़े खड़ग लिए आओ
काम तुम्हारा गान तुम्हारा करते हैं जो मन से
जाते हैं वो छूट सुना है दुनियाँ के बन्धन से
दीन दुखी भक्तों को तुम बिन कौन करेगा पार
जीवन के आधार प्रभु हमारे प्रभु हमारे
करो विनय स्वीकार प्रभु हमारे प्रभु हमारे

161 . कल्कि आ आकर मिटाओ दु:ख सब

कल्कि आ, आकर मिटाओ दु:ख सब मेरा, ले खड़ग अपना
हे स्वामी गुण आपका, गा मीरा हुई दिवानी
आँख खुली मन की जब पाई, मूर्ति एक सुहानी
सुध लो ना, आकर मिटाओ दु:ख सब मेरा, ले खड़ग अपना
कल्कि आ, आकर मिटाओ.....

दे रही पवन झकोले, नाव पुरानी डगमग डोले
इसको डुबाती लहरें आएं, अब मन तुम्हें टटोले

आओ ना, आकर मिटाओ दु:ख सब मेरा, ले खड़ग अपना
कल्कि आ, आकर मिटाओ.....

162 . जो हरि सुमरन करता है

जो हरि सुमरन करता है दुष्कर्मों से डरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है

सुर दुर्लभ नर काया पाकर माया में भरमाये
जन्म मरण न छूटे लख चौरासी चक्कर खाये
दुख पाए बार - बार
धन्य जीव जो इस धरती पर भक्त हो विचरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है
जो हरि सुमरन करता है.....
भक्तों के कारण भगवान स्वयं धरती पर आए
राघव माधव नरहरि कल्कि वामन बुद्ध कहाए
हरने को भूमि भार
धन्य जीव जो शुद्ध हृदय में भक्ति भाव भरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है
जो हरि सुमरन करता है.....

163 . हमको तो है एक आसरा करतार तुम्हारा

हमको तो है एक आसरा करतार तुम्हारा
जाएं भी कहाँ छोड़ के अब द्वार तुम्हारा
तुम सा तो त्रिलोकी में कोई और नहीं है
सिर मौर हो सबके कोई सिरमौर नहीं है
गुण गाते हैं सब देव भी दातार तुम्हारा
हम को तो है एक आसरा करतार तुम्हारा

164 . कल्कि प्रभु ले खड़ग वेग आओ

कल्कि प्रभु ले खड़ग वेग आओ
तुमको निहारे हमारी अखियाँ हमारी अखियाँ
पाते हैं दुख देखो ये भक्त निशदिन
गौए भी रोए तुम्हारे दरश बिन
सूनी बीती जाए तुम्हारे बिन रतियाँ
तुम को निहारे हमारी अखियाँ हमारी अखियाँ
कल्कि प्रभु ले खड़ग वेग आओ.....

कल्कि मण्डल को तुम्हारा सहारा
चरणों में है नाथ चिन्तक तुम्हारा
चरणों में है नाथ मस्तक हमारा
खिल जाए हर दिल की मुरझाई कलियाँ
तुम को निहारे हमारी अखियाँ हमारी अखियाँ
कल्कि प्रभु ले खड़ग वेग आओ.....

165 . ज्योति जगाओ मन की टेर

ज्योति जगाओ मन की टेर सुनो हे प्रभु भक्तन की
व्यथा हरो जीवन की
तुम अनन्त हो तुम अपार हो निराधार के तुम आधार हो
ज्ञान तुम्हीं हो ध्यान तुम्हीं हो शान तुम्हीं भक्तन की
ज्योति जगाओ मन की.....

दीन बन्धु दीनन दुख टारो सब पृथ्वी का भार उतारो
खड़ग लिए चढ़ अश्व पधारो आस लगी दरशन की
ज्योति जगाओ मन की.....

166 . आओ पद्मापति कल्कि सब पृथ्वी

आओ पद्मापति कल्कि सब पृथ्वी का भार उतारो
सर्व जगत के पालनकर्ता दीनों दुखियों के दु:खहर्ता
हमसब को भी भवसागर से पार उतारो
आओ पद्मापति कल्कि सब पृथ्वी का भार उतारो
भक्त तुम्हारे सब दु:ख पावत निशदिन प्रभु सब तुम्हें बुलावत
विनती करत है ले कर में तलवार पधारो
आओ पद्मापति कल्कि सब पृथ्वी का भार उतारो

167 . प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी

प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी
सेवा भक्ति बने नहीं हमसे हे दीनन हितकारी
तुम सुन लो टेर हमारी
जिसका कोई नहीं है अपना, तुम हो अपने तुमको जपना
सीख लिया प्रभु इस जीवन में, तुम हो अपने तुमको जपना
दूर करो अंधियारी, तुम सुन लो टेर हमारी
प्रभुजी प्रभुजी तुम..... ॥ 1॥
देर करो ना आओ आओ, आ भक्तों को दरश दिखाओ
कल्कि मंडल चिन्तक सारे, प्रभुजी प्रभुजी ॥ ॥
आए शरण तुम्हारी,
प्रभुजी प्रभुजी तुम..... ॥ 2॥

168 . निरआकार ईश्वर को साकार देखा

निराकार ईश्वर को साकार देखा साकार देखा
खड़ग पकड़े और घोड़े असवार देखा घोड़े असवार देखा
खलों के समूहों का संहार होगा
खलों के समूहों का संहार होगा संहार होगा

हो...प्रतिज्ञा उन्हें करते इस बार देखा इस बार देखा
खड़ग पकड़े और घोड़े असवार देखा घोड़े असवार देखा
निराकार ईश्वर को साकार देखा साकार देखा.....

169 .खड़े दुर्दशा देखते ही रहोगे

खड़े दुर्दशा देखते ही रहोगे न आओगे तुम
श्याम कब तक बताओ न आओगे तुम

संसार ने जिसको ठुकरा दिया है, ठुकरा दिया है
तुमने उसे नाथ अपना लिया है अपना लिया है
दुखी हैं दुखों से हमें भी उबारो हमें भी उबारो
तुम्हारे दुआरे खड़े हैं निहारो, खड़े है निहारो
उबारो प्रभु निहारो प्रभु
उबारोगे या यूं ही गोते खिलाओगे न आओगे तुम
श्याम कब तक बताओ न आओगे तुम
खड़े दुर्दशा देखते ही रहोगे.....

म्लेच्छों के झुण्डों ने संसार घेरा, संसार घेरा
कपट ने हृदय में लगाया है डेरा लगाया है डेरा
धरो रूप कल्कि समर वेश धारो समर वेश धारो
करो म्लेच्छ मर्दन धर्म को उबारो धर्म को उबारो
निहारो प्रभु उबारो प्रभु
निहारोगे या यूं ही गोते खिलाओगे न आओगे तुम
श्याम कब तक बताओ न आओगे तुम
खड़े दुर्दशा देखते ही रहोगे.....

170 . गायेजा गायेजा कल्कि नाम प्यारा

गायेजा गायेजा गायेजा गायेजा कल्कि नाम प्यारा

गायेजा गायेजा गायेजा
संसार के सुखों में जो लिप्त हो रहे हैं
अनमोल से समय को वो व्यर्थ खो रहे हैं
गाएंगे गुण प्रभु का पाएंगे सुख अनोखा
सुमरन में है सच्चाई संसार में है धोखा
गायेजा गायेजा गायेजा.....

जो हम भजन से अपना जीवन सुधार लेंगें
कल्कि प्रभु हमारे हमको उबार लेंगें
गाएंगे गुण प्रभु का पाएंगे सुख अनोखा
सुमरन में है सच्चाई संसार में है धोखा
गायेजा गायेजा गायेजा.....

171 . कल्कि नाम शरण्य सुखप्रद कीर्तनीय

कल्कि नाम शरण्य सुखप्रद कीर्तनीय पवित्र है
नाम गुरु माता पिता सर्वस्व सच्चा मित्र है

दोष दुख नाशक परम प्रेरक सदा शुभ कर्म का
धेनु धरणी देव द्विज रक्षक सनातन धर्म का
सत्य युग का शीघ्र कर देता प्रकाशित चित्र है
कल्कि नाम शरण्य सुखप्रद कीर्तनीय पवित्र है...
कल्कि नाम कराल कलियुग के निधन का हेतू है
भव जलधि को पार करने के लिए दृढ़ सेतू है
जानते है वे कि जिनका निष्कलंक चरित्र है
कल्कि नाम शरण्य सुखप्रद कीर्तनीय पवित्र है...
कल्कि नाम लिए हुए भीषण प्रलय की आग है
विष्णु द्रोही विश्व को इस आग से अनुराग है
दानवों के नाश का निश्चय विधान विचित्र है

172 . सिर जाए तो जाए

सर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए
यह कहकर शहीद हो गया वीर हकीकत राय
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....
देश की खातिर राणा प्रतापी घास की रोटी खाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....
देश की खातिर वीर शिवाजी मुगलों के छक्के छुड़ाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....
देश की खातिर रानी झांसी फिरंगी मार भगाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....
देश की खातिर बंदा बैरागी तिल-तिल तन कटवाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....
धर्म की खातिर लंका में अंगद अपना पैर जमाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए.....

रंग दे बसन्ती चोला मेरा रंग दे बसन्ती चोला
यह कह करके भगत सिंह ने, डाला बम का गोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला रंग दे बसन्ती चोला माँ रंग दे बसन्ती चोला
कल्कि नाम से कलियुगियन का, सारा शासन डोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला रंग दे बसन्ती चोला माँ रंग दे बसन्ती चोला

173 . हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा

हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा है तुम बिन दूर सवेरा हे देवता
हे देवता उद्धार करो अब मेरा हूँ दीन दुखों ने घेरा हे देवता
कलियुग में श्री कल्कि कहलाना होगा
खड्ग लिए चढ़ घोड़े अब आना होगा

हे देवता द्रुपद सुता की तुमने लाज बचाई लाज बचाई
तारी अहिल्या और मीरा बाई हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा
है तुम बिन दूर सवेरा हे देवता.....
सूरदास को दरश दिया गोकुल का ग्वाला बन के
मेरी आँखो के आगे भी आओ उजाला बन के
हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा.....

174 . रे मन मेरे सांझ सवेरे क्यों न हरि

रे मन मेरे सांझ सवेरे क्यों न हरि गुन गाए
हरि बिन तेरे पथ के अन्धेरे मूरख कौन मिटाए
पल पल विपदा पल पल बाधा पल पल व्याधि सताए
आशा तृष्णा ममता माया फिर भी तजी न जाए
ऐसे ही में एक दिन आकर कण्ठ को काल दबाए
क्यों न हरि गुण गाए क्यों न हरि गुण गाए.....

करुणानिधि ने करुणा करके दी कंचन सी काया
इस काया को सत्पुरुषों ने साधन धाम बताया
मणि को छोड़े काँच बटोरे अंत समय पछताए
क्यों न हरि गुण गाए क्यों न हरि गुण गाए.....

अंबुआ की डाली पे बैठ के काली कोयलियाँ यूं बोले
मैं तो रंग गई कल्कि के रंग में तू बगुला बन डोले
अवगुण ढूंढे गुण नहीं देखे किस विधि हंस कहाए
क्यों न हरि गुण गाए क्यों न हरि गुण गाए...

बाण बधिक ने मृग के मारा तन से चाम निकाला
ऋषि मुनि योगी तपसी पहने कहलाए मृग छाला
रे नर तेरी चमड़ी भी तो किसी के काम न आए
क्यों न हरि गुण गाए क्यों न हरि गुण गाए...

देवो के हित कारण हँस हँस दे गए हाड़ दधीची
राजा शिवि ने अपने लहू से बेल धर्म की सींची
सत् नहीं छोड़ा हरिश्चन्द्र ने लाखों कष्ट उठाए

क्यों न हरि गुण गाए क्यों न हरि गुण गाए....
रे मन मेरे सांझ सवेरे क्यों न हरि गुन गाए

6 Dec 2020

175. श्याम की मूर्ति सुहाए

मन को साँवरे श्याम की मूर्ति सुहाए श्याम की मूर्ति सुहाए
सिर पे मुकट चमाचम चमके माथे तिलक लगाए
नैन निराले है मतवाले रूप रंग बरसाए
श्याम की मूर्ति सुहाए.....
अब के स्वामी ले के खड्ग और घोड़े चढ़ के आए
नाश किए हैं पापी अधर्मी निष्कलंक कहाए
श्याम की मूर्ति सुहाए.....
आओ मिल कर करें वन्दना संकट सब मिट जाए
कल्कि मण्डल प्रभु के चिंतक कर दर्शन हर्षाए
श्याम की मूर्ति सुहाए.....

13 Dec 2020

176. ओ मीत प्रभु के सुनकर जा तू टेर

ओ मीत प्रभु के सुनकर जा तू टेर हमारी लेकर जा
पद्मापति को टेर सुनाना भक्त दुखी हैं यह बतलाना
तू हमें तसल्ली देकर जा तू टेर हमारी लेकर जा
ओ मीत प्रभु के सुनकर जा तू टेर हमारी लेकर जा
सब कुछ मिटा दर्श जब देखा रहना था संकट काहे का
हम मस्त बने बस यह कह जा तू टेर हमारी लेकर जा
ओ मीत प्रभु के सुनकर जा तू टेर हमारी लेकर जा

22+28 NOV

177. कल्कि नाम कसौटी पर जो लोग खरे

कल्कि नाम कसौटी पर जो लोग खरे उतरे
समझो कि वो संसार समुन्दर से परे उतरे
कल्कि कल्कि जो रसना से दिन रात कहा करते

उनके कानों में कल्कि नाम सुधा श्रोत बहा करते
नयनों में रमा नाथ के रंग रूप रहा करते
जिनके हृदय में श्री कल्कि चरित भाव भरे उतरे
समझो कि वे संसार समुन्दर से परे उतरे
कल्कि नाम कसौटी पर जो लोग खरे उतरे
कल्कि नाम का इस युग में चमत्कार निराला है
कल्कि नाम से आया हुआ अवतार निराला है
संहार भी हर बार से इस बार निराला है
रण भूमि में नारायण नर देह धरे उतरे
समझो कि वो संसार समुन्दर से परे उतरे
कल्कि नाम कसौटी पर जो लोग खरे उतरे

178 . छुपे हो कहाँ

छुपे हो कहाँ.....मन में बसो मेरे तन में रमो मेरे
आ जा ओ आ जाओ आ जा
चैन नहीं आशा है मन में हो.....
कल्कि नाम से प्राण हैं तन में हो.....
सब कुछ हो तुम ही जीवन में आओ हमें अपनाओ
छुपे हो कहाँ.....
कलियुग छाया घोर जगत में हो....
जीव निडर है पाप करत में हो.....
भक्त दुखी है ये देखत में आओ इसे मिटाओ
छुपे हो कहाँ.....
गौए रोयें बिलख बिलख कर हो.....
छवि तुम्हारी नयन में रखकर हो.....
प्राण तजें निज सिसक सिसक कर आओ इन्हें बचाओ
छुपे हो कहाँ.....
नाथ सुनो तुम विनय हमारी हो....
तुम बिन पल पल जाए दुखारी हो....
कल्कि मण्डल के आधारी आओ धीर बंधाओ
छुपे हो कहाँ.....

179 . दुखों भरी पुकार है

दुखों भरी पुकार है तुम नहीं सुनोंगे क्या,
हे प्रभु करो दया
एक बार, हे मुरार, लो हमें गले लगा
प्रेम भक्ति भाव की, ज्योति हिय में दो जगा
आपके वियोग में मन अधीर हो गया
दुखों भरी पुकार है.....
खड्ग उठा लो हाथ में, पाप का करो दमन
उभार लो उन्हें प्रभु, जो तुम्हारी हैं शरण
आओं कल्कि रूप में, वीर वेश हो नया
दुखों भरी पुकार है.....
प्रभु समस्त विश्व में, धर्म का अभाव है
मनुष्य पर मनुष्यता, विहीन का प्रभाव है
यंत्र के प्रपञ्च में, मंत्र मार्ग खो गया
दुखों भरी पुकार है.....
नाथ तुम न आए तो, अनाथ हम कहाएंगे
सदा सताए जाएंगे, किसे ये मुख दिखाएंगे
बस एक नज़र मेरे प्रभु, करो दया
करो दया, करो दया, करो दया
दुखों भरी पुकार है.....

180 . आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे

आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे
श्रद्धा लिए आशा लिए जो भक्त पुकारे
निश्चय कृपा से आपकी जीवन को सुधारे
आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे
बुद्धि हरी जो आसुरी माया ने हमारी
तब होश आया आपके जब नाम उचारे

आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे
उबरे वही जिनको मिले हैं तुमसे सहारे
होकर प्रकट भक्तों की नैया करदो किनारे
आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे
सत्युग करो कलियुग हरो दरबार लगाओ
शक्ति तुम्हारी शत्रुओं के ताज उतारे
आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे
फहरे पताका आपकी संसार के ऊपर
गूंजे तुम्हारे नाम के घनघोर नगारे
आओ प्रभु कल्कि मिटाओ कष्ट हमारे
अच्छे बुरे खोटे खरे हैं नाथ तुम्हारे

181 . नन्द जी के छैया

नन्द जी के छैया मुरली बजईया
हरने को भूमि भार अब प्रभु आओ जी
भोली भोली गैया दाऊ जी के भईया नीर बहाऐं दुख मान के
पापी अधर्मी इन्हें सताएं
दुश्मन बने हैं इनकी जान के
इनकी सुन के करुण पुकार अब प्रभु आओ जी
नन्द जी के छैया मुरली बजईया
हरने को भूमि भार अब प्रभु आओ जी

182 . आँखें हमारी आँसू बहाएं

आँखे हमारी आँसू बहाए
रो-रोके भगवन तुमको बुलाए
आँखे हमारी.....

जाते हुए क्यों कलियुग को छोड़ा
फैली विषैली इसकी हवाएं
आँखे हमारी.....
कब काम लोगे अपने खड़ग से
पापी मिटें तो सुख भक्त पाएं
आँखे हमारी.....

183 .बिना कल्कि कल्कि कहे सुख नहीं

बिना कल्कि कल्कि कहे सुख नहीं
कहे कल्कि कल्कि रहे दुख नहीं
जहाँ तुम नहीं हो वहाँ सुख नहीं
जहाँ तुम हो भगवन वहाँ दुख नहीं
माना मैं हूँ अधम और अपावन मैंने पकड़ा तुम्हारा है दामन
मेरे भगवन कहो कब तक आओगे सन्मुख नहीं
जहाँ तुम नहीं हो वहाँ सुख नहीं.....

मन का मन्दिर जो सूना पड़ा है
बस यही दुख तो सबसे बड़ा है
मेरे भगवन कहो कब तक आओगे सन्मुख नहीं
जहाँ तुम नहीं हो वहाँ सुख नहीं.....

कल्कि का ध्यान चिन्तन करो मन
कल्कि का नाम सुमरन करो मन
बिना सुमरन भजन कोई हुआ अन्तर्मुख नहीं
बिना कल्कि कल्कि कहे सुख नहीं.....

कल्कि को जो पुकारा करेंगे कल्कि को वो निहारा करेंगे
अशुभ के वो सभी प्राणी रहेंगे सन्मुख नहीं
अभक्तों की तरफ कल्कि कभी करते रुख नहीं
बिना कल्कि कल्कि कहे सुख नहीं.....

184 . भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से

भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से
है हाथ में तलवार या बांधी है कमर से
घटा उमड़ती हुई है आसुरी आई
ऐसे में प्रभु रोशनी देती न दिखाई
हो जाइये तैयार ये टक्कर है जबर से
है हाथ में तलवार या बांधी है कमर से
भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से
ये काम बिना आपके अब कौन करेगा
भक्तों के दुखों को कहो अब कौन हरेगा
है कौन मददगार हो उम्मीद जिधर से
है हाथ में तलवार या बांधी है कमर से
भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से
तुमने ही कुरुक्षेत्र में था युद्ध रचाया
कायर हुए अर्जुन को बन्धुओं से लड़ाया
अज्ञान हरा ज्ञान दिया अपनी मेहर से
भूभार उतारा महाभारत के समर से
है हाथ में तलवार या बांधी है कमर से
भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से
अब आस ही से स्वांस है इस तन में हमारे
है मन में हमारे दर्शन होयें तुम्हारे
घोड़े पे हो सवार कब आओगे किधर से
है हाथ में तलवार या बांधी है कमर से
भगवान कहां सोये या बैठे हो सबर से

185 . भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा

भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
है आस आप ही की है आपका सहारा
व्याकुल दुखी है सारा प्यारा तुम्हारा भारत

कटती हैं नित्य गौए तुमने सभी निहारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
सब देखते हुए भी क्यों मौन बनके बैठे
रूठे रहोगे कब तक डूबे है विश्व सारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
भारत की नैया जब भी मंझधार में पड़ी है
मल्लाह बनके मोहन डूबी को है उबारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
त्रेता में राम होकर द्वापर में बने कृष्णा
कलियुग में आ दिखाओ वो कल्कि रूप प्यारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
कब तक छिपे रहोगे पर्दे में प्रभु कल्कि
घोड़े पे चढ़ के आओ ले हाथ में दुधारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
हम आर्त दीन होकर चरणों में गिर पड़े हैं
अब तार दो हमें भी लाखों को तुमने तारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा
सम्राट जब बनोगे भक्तों के बीच कल्कि
इकबार 'मदन' देखें दरबार वो तुम्हारा
भगवान हरि कल्कि क्योंकर हमें बिसारा

186 . देखे कब होता है पूरा वादा मुरली

देखें कब होता है पूरा वादा मुरली वाले का
रात दिना बैठे तकते हैं रस्ता सम्भल वाले का
वादा मुरली वाले का वादा बंसरी वाले का
देखें कब होता है पूरा.....
हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को सब डर दिखा कर थक गया
मारने को उसने ऐसा तप्त खम्बा था किया
एक चींटी चल रही थी खम्ब पर उल्लास से
देखते ही भक्त ने भगवान का सुमरन किया

खम्बे से लिपटा वो लेकर नाम मुरली वाले का
देखें कब होता है पूरा .....
पांडवों को सभा में नीचा दिखाने के लिये
द्रौपदी लाई गई सत से डिगाने के लिये
लाचार नारी रो उठी रो-रोके यूं कहने लगी
हे नाथ आओ लाज अबला की बचाने के लिये
तन से अलग हुई न साड़ी सत था मुरली वाले का
देखें कब होता है पूरा .....
घोर कलियुग आ गया है लीजिये अब तो खबर
भार भूमि का उतारो पापियों को मार कर
अपने भक्तों पर करो प्रभु अब तो कृपा की नज़र
आपसे कहती हैं गउएं करके अपने चश्मतर
देखो यूं होता है पूरा वादा सम्भल वाले का
वादा कल्कि प्यारे का वादा गुरु हमारे का
देखे कब होता है पूरा .....

187 . सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे

सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे
कह गए महामुनि व्यास कल्कि आएंगे
कल्कि को जो गाएंगे, कल्कि के हो जाएंगे
कल्कि को वो भाएंगे, कल्कि को वो पाएंगे
भक्तों को है विश्वास कल्कि आएंगे
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

सब सिद्ध तपस्वी ज्ञानी, बनकर रह गए कहानी
हो रही धर्म की हानि, बढ़ गए असुर अभिमानी
असुरों का करने नाश कल्कि आएंगे
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

कल्कि का खड़ग चलेगा, दुष्टों को खूब दलेगा
रण में घोड़ा मचलेगा, खल म्लेच्छों को कुचलेगा
असुरों को देने त्रास कल्कि आएंगे

सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

शुभ दिन आने वाला है, कलियुग जाने वाला है
सतयुग का अमर उजाला, जग में छाने वाला है
चलकर भक्तों के पास कल्कि आएंग
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

सोया संसार जगेगा, घट घट में प्यार जगेगा
सब जग परिवार लगेगा, कल्कि दरबार लगेगा
करने को पूरी आस कल्कि आएंगे
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

जब कल्कि सन्मुख होंगे, सब दूर दुसह दुख होंगे
भरपूर सुलभ सुख होंगे, सब के प्रसन्न मुख होंगे
लेकर उमंग उल्लास कल्कि आएंगे
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

बोलो सब होकर तन्मय, गुरु बालमुकुन्द जी कीजय
लक्ष्मी नारायण निश्चय, देंगे चरणों में आश्रय
प्रिय हैं उनको निज दास कल्कि आएंगे
सम्भल में रमा निवास कल्कि आएंगे.....

188. कर मन सुमरन साँझ सकारे

कर मन सुमरन साँझ सकारे

कृपा करत पद्मापति जिनपे हरले अवगुण सारे
कर मन सुमरन.....

राम हुए रघुकुल उजियारे, कृष्ण यशोदा प्यारे।
काल रूप कल्कि बनकर है, वो ही श्याम पधारे
कर मन सुमरन.....

तज के माया मोह हृदय से, 'चिंतक ' हरि गुण गा रे।
देख पार पहुँचेगी नैया, क्यों मन माही हारे
कर मन सुमरन.....

189 . मन कल्कि कल्कि पुकारो

मन कल्कि कल्कि पुकारो धीरज धरो तुम दुखों से न हारो
मन कल्कि कल्कि पुकारो निज इष्ट प्रिय कल्कि की चाह में
बढ़ते रहो प्रीति की राह में ये जो तुम्हें श्रेष्ठतम तन मिला है
परमात्मा से परम धन मिला है
उनकी कृपा को कभी न बिसारो
मन कल्कि कल्कि पुकारो..... ॥ १ ॥
जिनकी अरुचि है असद् आचरण में
लेंगे उन्हें कल्कि अपनी शरण में
उनके अशुभ नष्ट कल्कि करेंगे
कल्मष कलुष कष्ट कल्कि हरेंगे
बिगड़ी दशा को भजन से सुधारो
मन कल्कि कल्कि पुकारो..... ॥ २ ॥
कल्कि धवल अश्व पर जब चढ़ेंगे
रण भूमि में शस्त्र लेकर बढ़ेंगे
असुरों अनार्यों का अन्त होगा
वो ही बचेगा जो संत होगा
परहित करो स्वार्थ का उर विदारो
मन कल्कि कल्कि पुकारो..... ॥ ३ ॥
होंगे प्रकट जब महाविष्णु कल्कि
कट जाएगी जड़ कपट और छल की
अघ का अंधेरा सब दूर होगा
सुख का सवेरा भरपूर होगा
छवि कल्कि की निज हृदय में निहारो
मन कल्कि कल्कि पुकारो..... ॥ ४ ॥

190. भारत में श्री भगवान कल्कि आएंगे

भारत में श्री भगवान कल्कि आएंगे
करुणाकर कृपा निधान कल्कि आएंगे
कहते कवि गुण गायक हैं—कल्कि जग के नायक हैं

शुचि सुन्दर सब लायक हैं—सुर दुर्लभ सुखदायक हैं
इष्टों में इष्ट महान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि प्रभु असुरारी हैं—हय प्रिय हरि असिधारी हैं
भक्तों के भयहारी हैं—युग परिवर्तनकारी हैं
रण मध्य कृतांत समान कल्कि आएंगे—भारत में...

जो पाप प्रसार करेंगे—उनका संहार करेंगे
शस्त्रों पे धार धरेंगे—पृथ्वी का भार हरेंगे
पद्मापति परम सुजान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि बल हैं निर्बल के—सम्राट सुभट सम्भल के
ग्राहक मन शुद्ध सरल के—दाहक कल्मष कलि मेल क
गुण गौरव गरिमावान कल्कि आएंगे—भारत में...

गौ विप्र संत सुर सारे—यवनों म्लेच्छों से हारे
तब श्री गुरुदेव हमारे—लेकर संदेश पधारे
हंसकर बोले हनुमान कल्कि आएंगे—भारत में...

जब राम बने नारायण—तब लिखी गई रामायण
कहते नर प्रीति परायण—करने को निज पूरा प्रण
है विधि का अटल विधान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि प्रभु हैं परमात्मा—सब आत्माओं की आत्मा
ध्याते जिनको धर्मात्मा—पाते जिनको पुण्यात्मा
पूज्यों में परम प्रधान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि हैं जग के त्राता—कल्कि हैं जीवन दाता
कल्कि हैं भाग्य विधाता—कल्कि से जोड़ो नाता
करने जग का उत्थान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि हैं राम रमैया—कल्कि हैं कृष्ण कन्हैया
बलदाऊ जी के भैया—भक्तों की नाव खेवैया
उपमानों के उपमान कल्कि आएंगे—भारत में...

जो कल्कि कल्कि कहते—कल्कि की धुन में रहते
सत्संग सलिल में बहते—परहित कारण दुख सहते
उनका करने सन्मान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि हैं जग के त्राता—कल्कि हैं जीवन दाता
कल्कि हैं भाग्य विधाता—कल्कि से जोड़ो नाता
करने जग का उत्थान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि हैं राम रमैया—कल्कि हैं कृष्ण कन्हैया
बलदाऊ जी के भैया—भक्तों की नाव खेवैया
उपमानों के उपमान कल्कि आएंगे—भारत में...

जो कल्कि कल्कि कहते—कल्कि की धुन में रहते
सत्संग सलिल में बहते—परहित कारण दुख सहते
उनका करने सन्मान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि नारायण हरि हैं—जिनसे जन्मी सुरसरि हैं
देवों में सर्वोपरि हैं—यवनों म्लेच्छों के अरि हैं
गुणवानों में गुणवान कल्कि आएंगे—भारत में...

प्रभु प्रणतपाल हैं कल्कि—उन्नत सुभाल हैं कल्कि
उर भुज विशाल हैं कल्कि—रण में कराल हैं कल्कि
करने रिपु मर्दन मान कल्कि आएंगे—भारत में...

मन मेरे आज अभी से—जब से हो सके तभी से
तज ममता मोह सभी से—कल्कि कल्कि जप जी से
कल्कि का ही धर ध्यान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि कलि परितापक हैं—सत्युग के संस्थापक हैं
प्रभु विश्व रूप व्यापक हैं—जो जन उनके जापक हैं
उनको देने निज ज्ञान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि की शक्ति अजन्मा—जिनसे सारा जग जन्मा
हो सिंह सवार जगन्माँ—वो देंगी जब दर्शन माँ
हरने को तम, अज्ञान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि हैं पुरुष पुरातन—जीवों के सखा सनातन
तू बैठ बिछाकर आसन—दे दे उनको अपना मन
सुख करने तुझे प्रदान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि स्वामी हैं अपने—हम आए जिनको जपने
आए न जगत में खपने—तीनों तापों से तपने

मत करो विषय विष पान कल्कि आएंगे—भारत में...

कल्कि प्रिय हैं भक्तों के—अवलम्बन अनुरक्तों के
आराध्य अनासक्तों के-सुख साध्य त्रिगुण त्यक्तों के
सब के शरण्य श्रीमान कल्कि आएंगे-भारत में...

मन जो तू भजन करेगा-कल्कि को नमन करेगा
पुण्यों का सृजन करेगा-पापों का शमन करेगा
कल्कि को तू पहचान कल्कि आएंगे-भारत में...

जो कल्कि नाम रटेंगे-कल्कि के संग डटेंगे
माया से नहीं सटेंगे-उनके सब कष्ट कटेंगे
सम्पूर्ण सुखों की खान कल्कि आएंगे-भारत में...

कल्कि कलि के त्रासक हैं-खल म्लेच्छों के नाशक हैं
सब लोकों के शासक हैं-भक्तों के उल्लासक हैं
कल्कि को तू निज जान कल्कि आएंगे-भारत में...

191 . विनती सुनिए नाथ हमारी

विनती सुनिए नाथ हमारी हृदयेश्वर हरि हृदय बिहारी
मोर मुकुट पीताम्बरधारी विनती सुनिए नाथ हमारी
जन्म जन्म की लगी लगन है साक्षी तारों भरा गगन है
गिन गिन स्वांस आज कहती है आएंगे श्री कृष्ण मुरारी
विनती सुनिए नाथ हमारी.....
सतत प्रतीक्षा अपलक लोचन
हे भव बाधा विपति विमोचन स्वागत का अधिकार दीजिए
शरणागत है नयन पुजारी विनती सुनिए नाथ हमारी
और कहूँ क्या अन्तरयामी तन मन धन प्राणों के स्वामी
करुणाकर आकर ये कहिए ली तोरी विनती स्वीकारी
विनती सुनिए नाथ हमारी.....

192 . कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी

कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत में जल्दी आना
इस देश के दुखों को आकर स्वयं मिटाना आकर स्वयं मिटाना

पर्दे में रह के कब तक करते रहोगे लीला
भक्तों के बीच आकर भक्तों के दिल बढ़ाना
कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत में जल्दी आना..

तलवार हाथ में लो वीरो का पहनो बाना
अपने प्रताप से तुम संसार को झुकाना
कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत में जल्दी आना..

पापी चले गए है छोड़ी नहीं कुचाले
तुम भी उन्हें न छोड़ो खांडे से सिर उड़ाना
कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत में जल्दी आना..

सम्राट विश्व के तुम करतार जब बनोगे
अपने हृदय से स्वामी चिन्तक को न भुलाना
कल्कि प्रभु हमारे भारत में जल्दी आना भारत में जल्दी आना.

193. हे त्रेता के राम हे द्वापर के श्याम

हे त्रेता के राम हे द्वापर के श्याम
कलिमल हरने को आओ अब कलियुग में भगवान

वाल्मीकि तुलसी की आँखों से देखा तुमको धनुधारी
व्यास के व्यास में खिंच गया तोरा लीला रूप सुदर्शनधारी
आज कल्पना लोक में उतरो घोड़े पर ले हाथ दुधारी
बन कल्कि भगवान। हे त्रेता के राम हे द्वापर के.....

पाप के हाथों पुण्य लुटा जब तब तुम बन बैठे वनवासी
जब जब भीर परी भक्तन पर तब तुम कहलाए बृजवासी
ऐसी ही कोई लीला फिर से दिखला दो न हे अविनाशी
रख भक्तों का मान। हे त्रेता के राम हे द्वापर के.....

राम राम हरे राम की रटना बसी हुई है इन प्राणों में

कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण का भजना सीखा वाणी की तानों में
जय कल्कि जय जगत्पते का मंत्र फूंक दो इन कानों में
हो तुम्हरा गुणगान। हे त्रेता के राम हे द्वापर के.....

कलियुग में फिर जन्म ले रहे भक्त वही त्रेता द्वापर के
केवल शेष तुम्हारा आना आओ कल्कि रूप भी धर के
गीता के उन वचनों को प्रभु दिखला दो अब पूरा करके
मिले भक्त भगवान। हे त्रेता के राम हे द्वापर के.....

194. जब किसी भी काम को घर से निकलना

जब किसी भी काम को घर से निकलना चाहिए
लेके कल्कि नाम को घर से निकलना चाहिए
देवता को दीप मंदिर में दिखाने के लिए
दीन बंधु से दया की भीख पाने के लिए
रोज सुबह शाम को घर से निकलना चाहिए
लेके कल्कि नाम को घर से निकलना चाहिए.....

श्री हरि के चाकरों की चाकरी की चाह में
संत पुरुषों की तरह भक्ति भजन की राह में
छोड़कर आराम को घर से निकलना चाहिए
लेके कल्कि नाम को घर से निकलना चाहिए.....

जिन्दगी में मुश्किलें आसान करने के लिए
पुण्य के पथ में कभी कुछ दान करने के लिए
जेब में रख दाम को घर से निकलना चाहिए
लेके कल्कि नाम को घर से निकलना चाहिए....

रास्ते यूं तो बहुत हैं पर ठिकाना एक है
लाख तीरंदाज हों लेकिन निशाना एक है
सोचकर अंजाम को घर से निकलना चाहिए
लेके कल्कि नाम को घर से निकलना चाहिए....

195. दुनियां को न दुनियां के नज़ारों

दुनियां को न दुनियां के नज़ारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू
कर दे जो अमर भक्ति का अमृत प्रभु से मांग
भक्ति के तू दरिया में लगा दौड़ के छलांग
दरिया को न दरिया के किनारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू....

तू खींच के तस्वीर निगाहों में अवध की
रख आज अभी पांव तू राहों में अवध की
चलके ज़रा दशरथ के दुलारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू....

जिस नूर से मिलते हैं उजालों को उजाले
वो नूर तेरे पास है दिल में उसे पा ले
मत चांद को सूरज को सितारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू....

जाके जहां उठती हैं उमड़ती हैं उमंगें
संगीत से मुरली के निकलती हैं तरंगें
बृजराज के मधुवन की बहारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू.....

मालिक है तेरे वो जो बड़ों के भी बड़े हैं
हर दम वो हिमायत को तेरे साथ खड़े हैं
परवाह न कर उनके इशारों को देख तू
भगवान को भगवान के प्यारों को देख तू....

196. नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा

नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा
सार बस यही सुबह शाम कहे जा
आधीन होकर जाएगा जब यम के पास तू

पूछेगा यम जो तुझसे तो बतलाएगा क्या तू
भज मुख से कल्कि नाम बुरे काम तजे जा
नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा....

जो मुग्ध बन चुके हैं उनकी आन बान में
वे मस्त बने रहते सदा उनके ध्यान में
कर इंतजारी नाथ की पल-पल में रटे जा
नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा....
जीवन बना अपना सुफल, संसार से निकल
यहां पाप की कीचड़ है, पैर जाएगा फिसल
लेकर सहारा नाम का आगे को बढ़े जा
नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा....

अब देगा कौन साथ तेरा कल्कि के बिना
कहते हैं कल्कि मण्डल कल्कि को सुमिरना
कल्कि का बन के चिंतक एक टेर करे जा
नाम कल्कि नाम कल्कि नाम भजे जा....

197. जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान

जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान हैं
वे वैष्णवों में अग्रगण्य गुण निधान हैं
वे शुद्ध बुद्ध मुक्त सन्त हैं सुजान हैं
निर्लेप निर्विकार ब्रह्म के समान हैं
ऐसे महानुभाव का दर्शन कोई करे
भव सिंधु से उपासना किए बिना तरे
यमदूत पास आए न यमराज भी डरे
वैकुण्ठ में बसे सुदिव्य देह वो धरे
विश्वेश विष्णु नित्य जहां विद्यमान हैं
जो पापियों को भी गति करते प्रदान हैं
जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान हैं....

जिससे समस्त सृष्टि का कण-कण सजीव है

वह ब्रह्म तत्व नर न नारी है न क्लीव है
ब्रह्माण्ड है भवन, अखण्ड ब्रह्म नींव है
यदि ब्रह्म हैं अनन्त सिंधु बिंदु जीव है
दो रूप ब्रह्म के अदृश्य दृश्यमान हैं
दोनों अनिवर्चनीय हैं दोनों महान हैं
जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान हैं....

जिस भांति है न भेद सूर्य और धूप में
है साम्य ब्रह्म के अमूर्त मूर्त रूप में
रहते प्रबुद्ध जन निमग्न निज स्वरूप में
पड़ते नहीं कभी प्रपंञ्च अंध कूप में
उनके सदा आधीन सर्वशक्तिमान हैं
जो भक्ति योग सिद्ध सजग सावधान हैं
जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान हैं....

कल्कि जी सभी के उपास्य और हैं शरण्य
कल्कि जी के समान कौन हैं महान अन्य
पाये बिना जिन्हें न कभी जीव हुए धन्य
उनके परम विनीत उपासक बनो अनन्य
वे ही समस्त पूजनीयां में प्रधान हैं
लोकोपकार के लिए उनके विधान हैं
जिनके हृदय में कल्कि जी शोभायमान हैं....

वे वैष्णवों में अग्रगण्य गुण निधान हैं

198 . भगवान कल्कि आना कब तक

भगवान कल्कि आना, कब तक मैं यूँ बुलाऊँ॥
तुम बिन रहा न जाए, हर दम मैं दु:ख उठाऊँ।
मैं आपकी शरण हे श्याम सुन्दर आया,
तजकर जहान सारा अपना तुम्हें बनाया,
दो मुझको अपनी भक्ति तुम से ही लौ लगाऊँ॥
भगवान कल्कि आना.....

गा गाके गुण तुम्हारे मीरा हुई दिवानी,
अर्पण करी तुम्हारे चरणों में ज़िन्दगानी,
लेकर शरण तुम्हारी जीवन सुफल बनाऊँ॥
भगवान कल्कि आना.....
आना हे प्रभु आना, आकर के दुःख मिटाना,
टूटी हुई है नैया, उस पार तुम लगाना,
करते हैं 'कल्कि मण्डल' विनती तुम्हे सुनाऊँ॥
भगवान कल्कि आना.....

199 . निष्कलंक बनि आजा प्रभु

निष्कलंक बनि आजा, प्रभु ! निष्कलंक बनि आजा॥
शंकर तुम्हरे भेद न जाने,
नेति नेति नित निगम बखानें।
गउअन कष्ट मिटा जा॥ प्रभु निष्कलंक.....
अत्याचारी बहुत बढ़े हैं,
हिरनाकुश सम गर्व चढ़े हैं।
पल में भार हटा जा॥ प्रभु निष्कलंक.....
युग-युग में नर तनु धरि आये,
असुर वंश विध्वंस कराये।
विरद की लाज रखा जा॥ प्रभु निष्कलंक.....
कलियुग वंश मिटावन हारे,
सतयुग सृष्टि रचावन हारे।
कल्कि नाम कहा जा॥ प्रभु निष्कलंक.....
भक्त दुखी सब टेर रहे हैं,
राह तुम्हारी हेर रहे हैं।
अनुपम रास रचा जा॥ प्रभु निष्कलंक.....

200 . श्री कल्कि सम्भल वाले प्यारे आ

श्री कल्कि सम्भल वाले प्यारे आ ही जाओ न
दु:ख संकट हरलो सारे प्यारे आ ही जाओ न

सुनो प्रभु अब तो भारत की पड़ी भँवर में नाव रे
दूर किनारा बहती धारा पार लगाओ साँवरे
हम टेरत-टेरत हारे, आजाओ नाथ हमारे॥
प्यारे आ ही.....

दीन दुखी भक्तों को केवल आपका आधार है
भूल न जाना हमको स्वामी विनती बारम्बार है
हम आए द्वार तुम्हारे, दु:ख संकट हर लो सारे॥
प्यारे आ ही.....

बता गए गुरु बालमुकुन्द जी कल्कि कल्कि गाओ रे
नाथ तुम्हारा लिया सहारा न इतना तरसाओ रे सब
मिलकर तुम्हें पुकारें, गऊ विप्र संत सुर सारे॥
प्यारे आ ही.....

पलट गई है मति विश्व की चले अनोखी चाल रे
कल्कि मंडल कहें प्रभु सुन लो अब तो बनो विकराल रे
ये पापी अधर्मी सारे पहुँचा दो यम के द्वारे॥
प्यारे आ ही.....

201 . कल्कि जी जल्दी आओ दरबार तुम

कल्कि जी जल्दी आओ, दरबार तुम लगाओ,
भूभार बढ़ चुका है, आकर इसे हटाओ।

गऊएँ तुम्हारी प्यारी, रो-रो के नाथ हारी,
दर-दर भटक रही हैं, फिरती हैं मारी-मारी
द्वापर का प्यार भगवन, कलियुग में भी दिखाओ
कल्कि जी जल्दी...

त्रेता में धनुष धर कर पापी और दुष्ट मारे,
द्वापर में बंसी लेकर करतब किए न्यारे,
कलियुग में खड्ग लेकर दुष्टों के दल मिटाओ।

कल्कि जी जल्दी··

बड़ा वक्त है भयानक, अब खेल तुम न खेलो
प्रभु सबकी विनती है, हाथों में खड़ग ले लो
करो अश्व की सवारी, धरती स्वर्ग बनाओ

कल्कि जी जल्दी··

तुमसे पुकार करते प्रभु आओ जल्दी आओ
तुम बिन नहीं है कोई, भू-भार को हटाओ
ये राज की है विनती, सुख शांति तुम बनाओ

कल्कि जी जल्दी··

202. सुबह का सूरज उगने वाला

सुबह का सूरज उगने वाला बीती रात अंधियारी
आने वाले हैं कल्कि जी स्वागत की कर तैयारी।
बेखबर जाग जरा दिन निकलने वाला है
अब तो बस कल्कि अवतार आने वाला है
कल्कि भगवान हैं सारे जगत के रखवाले
दीन दुखियों के अनाथों के वो पालन हारे
आके भक्तों के मिटा देंगे वो संकट सारे
पाएगा सुख जो सच्ची राह चलने वाला है
अब तो बस कल्कि.....
अबके भगवान मेरे आयेंगे कल्कि बनकर
ले खड़ग हाथ में होकर सवार घोड़े पर
ये ही राम मेरे श्याम हैं ये ही शंकर
मेरे भगवान का तो रूप ही निराला है
अब तो बस कल्कि.....
कल्कि भगवान ही दुःख जगत के मिटाएंगे
प्यार की राह जमाने की वो दिखाएंगे
सत्य और धर्म की नव ज्योत वो जगाएंगे
भाग्य संसार का देखो बदलने वाला है
अब तो बस कल्कि.....

अब तो दुनिया को बताना है ये घर-घर जाकर
धैर्य का बांध न तोड़ा तुम ऐसे घबराकर
आने वाले हैं अब तो कल्कि प्रभु नटनागर
पापियों का अब तो जगत में नाश होने वाला है
अब तो बस कल्कि.....

203 . हे बंसरी वाले

हे बंसरी वाले, आना हमारे देश
हे मुरली वाले, आना हमारे देश
आना हमारे देश, हे मुरली वाले
आना हमारे देश, हे बंसरी वाले
आना हमारे देश-हे कल्कि प्यारे आना हमारे देश
हे बंसरी वाले.....
आवन-आवन कह गये जी तुम कर गये कौल अनेक
गिनत-गिनत दिन हे मेरे स्वामी घिसी उँगरियों की रेख
हे कल्कि प्यारे आना हमारे देश
हे बंसरी वाले हे कल्कि प्यारे
तुम्हीं हमारे महावीर तुम्हीं भगवान गणेश
राम तुम्ही हो कृष्ण तुम्ही हो ब्रहमा विष्णु महेश
हे कल्कि प्यारे ब्रहमा विष्णु महेश हे मुरली वाले
आना हमारे देश, हे कल्कि प्यारे आना हमारे देश
हे बंसरी वाले.....
और नहीं कोई दूजा जग में मेरे प्रभु तुम एक
मेरे तो तुम्हीं एक स्वामी तुम्हरे दास अनेक
हे मुरली वाले तुम्हारे दास अनेक हैं बंसरी वाले
कलियुग मे आओ मेरे स्वामी धर कल्कि का वशे
दुखन लागी अँखियाँ अब तो तुम्हरा रस्ता देख
हे मुरली वाले, तुम्हरा रस्ता देख हे बंसरी वाले
आना हमारे देश, हे कल्कि प्यारे आना हमारे देश
हे बंसरी वाले.....

204 . कल्कि जी की सेना चली

कलि के विनाश, को कलि के संहार को
कल्कि जी की सेना चली श्री कल्कि जी की सेना चली
आज जग डोले हैं, आज नभ डोले है
डोल रही आज ये जमीं श्री कल्कि जी की सेना चली

प्रगट हुए श्री हरि जग में,
श्री कल्कि का रुप धरे-श्री कल्कि का रुप धरे
संग में जिनके मातु भवानी, और वीर हनुमान चले-२
मेघ यूँ गरजते हैं बम्ब कहीं फटते हैं।
बहती है खून की नदी श्री कल्कि जी की सेना चली

जब-जब भीर पड़ी दुखियन पर, तुम्हीं ने दुख को टारा है
तुम्हीं ने अपने भक्तों के प्रभु, बिगड़े काज संवारा है
साथ हुई गंगा भी, साथ हुई जमुना भी,
बाढ़ से तबाही मची
घोर पाप होता धरती पर, पापी बढ़ते जाते हैं-२
निर्बल निर्दोषों की हत्या, निशदिन करते जाते है
साथ लिया अग्नि को, साथ लिया बदली को
दुनिया है कितनी जली
कहीं गोली कहीं बम्ब फटते, कहीं चलती तेज कटारी है
चहुँ ओर आतंकवाद से, बिलख रहे नर नारी है
आए देव धरती पर, संग हुए कल्कि के
दुष्टों की अंतिम घड़ी

205. मेरी डगमग डोले नैया

मेरी डगमग डोले नैया, नहीं तुम बिन कोई खिवैया।
कर किरपा पार लगा देना, देर लगाई क्यों।
श्री कल्कि प्यारे! आ जाना देर लगाई क्यों।

अब नाथ दया कर दीजै, चरणन की भक्ति दीजै।

ये जीवन सफल बना देना, देर लगाई क्यों।
श्री कल्कि प्यारे! आ जाना देर लगाई क्यों।

कल्कि मण्डल के प्यारे, भक्तन के परम सहारे।
निज सेवक को अपना लेना, देर लगाई क्यों।
श्री कल्कि प्यारे! आ जाना देर लगाई क्यों।

आकर के दरश दिखा जाना सुधि बिसराई क्यों।

206 . कल्कि भक्तों संभल जाओ

कल्कि भक्तों संभल जाओ, अब परीक्षा तुम्हारा है
तुम कितने जन्मों से भक्तों, हरि चरणों से लगे हुए
आज हुई श्री हरि की कृपा भाग तुम्हारे जाग गए
कल्कि भक्ति में लग जाओं, अब परीक्षा तुम्हारी है
श्री हरि जी कल्कि बनकर कलियुग में अब आए हैं
गऊ ब्राह्मण और धर्म की रक्षा घोड़े चढ़ कर आए हैं
इनके स्वागत में लग जाओं अब परीक्षा तुम्हारी है
जो जन कल्कि की सेवा में, तन-मन से लग जाएंगे
भक्ति का आशीर्वाद वो श्री कल्कि से पाएंगे
मत छोड़ों स्मिरण को, अब परीक्षा तुम्हारी है
कल्कि भक्तों संभल जाओ, अब परीक्षा तुम्हारी है

- सत्संग का अर्थ : उस व्यक्ति का संग जिसने भगवान का साक्षात्कार किया हो।
- साधु का अर्थ : जो बिगड़े टेले को साध दे।
- भोलापन या सरलता अनेक जन्मों की तपस्या का फल है।
- बच्चों की एक माला को श्री कल्कि भगवान दुगना मानते हैं।
- श्री कल्कि भगवान का नाम लेने से गुप्त लीलाएं देखने को मिलती हैं।

207. आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए?

पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी आरती कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है। आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य होता है। जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह समस्त पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णु के परमपद को प्राप्त होता हैं।

साधारणत: पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे 'पंचप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से भी आरती की जाती है। कपूर से भी आरती होती है। कुमकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दन, पाँच बत्तियाँ अथवा दिए की (रुई और घी की) बत्तियाँ बनाकर शंख, घण्टा आदि बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान् की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमाएँ, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमाएँ। यथार्थ में आरती, पूजन के अन्त में इष्ट देवता की प्रसन्नता हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

यदा यदा कि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

209. भगवान श्री कल्कि जी को भोग

राघव राजा राम तुम, माधव सुन्दर श्याम।
पूर्ण परात्पर कल्कि प्रभु, प्रतिपल तुम्हें प्रणाम॥
प्रथम करो प्रभु अर्ध्य ग्रहण, फिर पाद्य आचमन।
पंचामृत गंगा जल से हो, स्नान जनार्दन॥
धारण कर यज्ञोपवीत, नव वस्त्राभूषण।
पुष्प रत्न मणि माल, भाल मलयागिरि चन्दन॥
रवि सम दिव्य प्रकाशमय, सिंहासन स्वीकार हों।
भक्तों को पद्मा रमा, सहित साक्षात्कार हो॥
हो फिर भोजन, भोग लगे हे जन मन रंजन,
मन कल्पित नैवैद्य, सुधासम बहुविधि व्यंजन।
स्वर्ण थाल में, कनक कटोरी धरी हुई है।
तुलसी दल युत, पकवानों से भरी हुई है।
सकल वस्तु स्वादिष्ट हैं, पाओ प्रभु विनती करें।
प्रति पदार्थ की यदि कहो, पल भर में गिनती करें।
है गुलाब जामुन, पिस्ते की लौंज निराली।
मक्खन मिश्री, रबड़ी रसगुल्ला बंगाली।
खोए के लड्डू, रसभीनी मधुर मलाई।
मेवा वाली खीर, मखाने की बनवाई।
माल पुए मक्खन बड़े, हे मनमोहन लीजिए।
पेड़े बर्फी कलाकन्द, हलुआ सोहन लीजिए।
चमचम और खीर मोहन, खुरचन मनचाही।
रंगदार गुलदाना, बढ़िया बालूशाही।
पेठा फेनी, खजला खुर्मी और इमरती।
शक्कर पारे, मीठे सेब जलेबी नुकती।
मीठी गुंजियाँ खोए की, हलुआ है बादाम का।
घी में भीगा चूरमा, भोग लगे सुखधाम का।
हैं मठरी नमकीन, मसाले वाली गुंजिया।
पापड़ और पकौड़े, बीकानेरी भुजिया।
काजू घी में तले, और आलू का लच्छा।
सेब समोसे स्वाल, स्वाद सब ही का अच्छा।
तले मखाने मोगरे, और बीज सारे धरे।

मौन बड़ी संग मूंग की दाल, नमकपारे धरे।
मूंग और चावल के चिल्ले, घी में तर हैं।
श्रेष्ठ स्वाद में, और देखने में सुन्दर हैं।
फूली पूरी पिठ्ठी वाली, खरी कचौरी।
आलू की नमकीन बेड़मी, और नगौरी।
चटनी लौंजी मुरब्बे, चक्खो संग आचार के।
दही बड़े लो रायते, साग अनेक प्रकार के।
कटहल और कमल ककड़ी कचनार करेला।
सेम ग्वार की फली, सेंगरी कच्चा केला।
शिमले वाली मिर्च मटर है, गोभी आलू।
जिमीकन्द के संग कचालू और रतालू।
टिण्डा तोरी घिया के, संग सीताफल लीजिए।
भिण्डी अरबी बांकला, बथुआ परमल लीजिए।
सौंठ छुआरे वाली, और करौंदे कमरक।
हरी मिर्च मूली का लच्छा, नींबू अदरक।
आम दशहरी और सन्तरे, केले रक्खे।
पाओ प्रभु जिस भाँति भोग, भिलनी के चक्खे।
खिरनी और खुमानियाँ, खरबूजों के ढेर हैं।
लीची हैं लौकाट हैं, काले जामुन बेर हैं।
हैं अनार अमरूद, फालसे काले-काले।
काश्मीर के सेब, कसेरू मेरठ वाले।
कच्चे गोले अनन्नास, अंगूर धरे हैं।
मौसम्बी शहतूत सिंघाड़े, हरे हरे हैं।
आड़ू आलू बुखारे, चीकू और चकोतरे।
मीठे मीठे फलों के, भरे धरे हैं टोकरे।
लो पिस्ते बादाम, रमा पद्मा के प्यारे।
चिलगोजे काजू किशमिश, अखरोट छुआरे।
रबड़ी का कूंजा, शीतल गंगाजल पावन।
पान करो प्रभु और आचमन, कर प्रक्षालन।
लौंग कपूर इलायची, युत उत्तम ताम्बूल लो।
स्वर्ण पत्र मंडित मधुर, सब विधि मन अनुकूल लो।

210. मुक्ति दायिनी आरती

ॐ जय जय सुर रक्षक असुर विनाशक पद्मावत के प्यारे।
जय जय श्री कल्कि भक्त हितकारी, दुष्टन मारन हारे॥

जय जय खड्गधारी जय असुरारी, गौ विप्रन के रखवारे।
क्षीरसागर वासी जय अविनाशी, भूमि भार उतारन हारे॥

अलख निरंजन भव भय भंजन, जय संभल सरकारे।
भक्त जनन के पालनकर्त्ता, जय गौअन रखवारे॥

जय-जयकार करत सब भक्तजन, सुनिये प्राण प्यारे।
वेग ही सुधि लीजो मोरे स्वामी, 'हम सब' दास पुकारे॥

स्तुति

बार बरोबर बार है तापर चलत बयार।
श्री कल्कि पार उतारिये अपनी ओर निहार॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विधा द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देवा॥

दीनं हीनं सेवया वेदवत्या पापैस्तापैः पूरितं मे शरीरं।
लोभाक्रातं शोकमोहादिबिद्धं कृपा दृष्टया पाहिमाम् वासुदेव॥

कर्पूर गौरम करूणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसन्तम हृदयार्विंदे भवम भवानी सहितम् नमामि॥

पुष्पाजंलि अपर्ण करूं ग्रहण करो महाराज
कृपा दृष्टि अव लो किए शरण गहे की लाज॥

स्थाने ऋषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्लुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संघा॥

फल समर्पण

हे श्री कल्कि भगवान आपने जो अत्यंत कृपा करके यह सत्संग संकीर्तन प्रार्थना पुकार आरती पूजन ब्रह्मभोज भण्डारा आदि शुभ कर्म कराए हैं इनका सम्पूर्ण फल आपके श्री चरण कमलों में सादर समर्पित है। हे प्रभु शीघ्र अति शीघ्र सत्युग सहित प्रगट हो जाइये, भूमि का भार उतार दीजिये, गौ ब्राह्मणों की रक्षा कीजिये, सनातन धर्म की रक्षा कीजिये, पृथ्वी की रक्षा कीजिये, देवी देवताआं की रक्षा कीजिये, पालना कीजिये, अधर्मियों का संहार कीजिये, राज सिंहासन पर विराजमान हो जाइये, वैष्णों माता को अपनी अर्धांगनी बना लीजिये, अपने भक्त प्रगट कीजिये, अपनी लीला प्रगट कीजिये, अपना दरबार प्रगट कीजिये, अपने दरबारी प्रगट कीजिये, हमें अपनी भुवनमोहिनी माया से बचाइये, हमें शुद्ध बुद्धि एवं शुद्ध भक्ति दीजिये। हे श्री कल्कि भगवान जितने आपके भक्त हैं उनकी मन बुद्धि वाणी को अपनी ओर लगा लीजिये और उनसे अपना काम लीजिये। और उन को ऐसी दृष्टि दीजिए जिससे वह निर्भयं होकर जीते जी काम करें

यदि हम लक्ष्मीपति श्री कल्कि भगवान की प्रसन्नता को आगे रखते हुए प्रार्थना करेंगे तो हमारे आराध्य और सभी देवी-देवताओं का हमें आशीर्वाद मिलेगा। समस्त खोटे ग्रह-गोचर, समस्त अभाव व जीवन की समस्त परेशानियाँ दूर हांगी। जैसे ग्वालों ने कन्हैया के गोवर्धन पर्वत उठाने में अपनी लाठियाँ लगाईं थीं वैसे ही कल्कि भगवान के सत्युग सहित प्रगट होने के लिए कार्य करने से चौतरफा उन्नति के मार्ग खुल जाएंगे।

भगवान श्री कल्कि के प्रमुख दर्शणीय स्थाल

- श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, 815, चौक श्री कल्कि मन्दिर, कुण्डेवालान,श्री कल्कि मार्ग, अजमेरी गेट, दिल्ली-6
- श्री कल्कि जी महाराज मन्दिर, गुप्ता कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)
- श्री कल्कि मन्दिर, अमृत परिसर शिवगंगा पुरम, बृजघाट, गढ़ गंगा, उत्तर प्रदेश
- शिव मंदिर (प्राचीन पांडव कालीन), मादीपुर, वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26पंजाबी बाग, नई दिल्ली-
- श्री कल्कि मंदिर, श्री रघुनाथ मंदिर, लाल क्वाटर, कृष्णा नगर, दिल्ली-52
- दानघाटी मुखारविंद मंदिर, गिरिराज जी, गोवर्धन श्री कल्कि मंदिर, श्री गौरीशंकर मंदिर, लाल किले के सामने, दिल्ली-6
- श्री कल्कि मंदिर, श्री हनुमान मंदिर, किरोड़ीमल कॉलेज परिसर, छात्रा मार्ग, दिल्ली-7
- कालीघाट मंदिर, कोलकाता (विश्व प्रसिद्ध सिद्ध पीठ जहाँ माँ सती की उंगुली गिरी थी।)
- श्री कल्कि मन्दिर, काली मन्दिर, ए जी ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता-64
- श्री कल्कि मंदिर, बड़े हनुमान जी, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1
- श्री कल्कि मन्दिर, योगमाया मन्दिर, महरौली, नई दिल्ली-30
- श्री कल्कि मन्दिर, श्री कालका जी मन्दिर, नई दिल्ली-65
- श्री कल्कि मन्दिर, श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान, बसंत विहार नई दिल्ली-57
- ईस्कान टैम्पल, वैदिक एक्स्पो, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-65

सम्पर्क सूत्र

श्री कल्कि बाल वाटिक	011-23866646
पदम गोयल	08802730830
संजू गडोदिया	09868152910
रमा गडोदिया	09313040701
राकेश अग्रवाल	09810654193